दिव्य पत्र माला

पूज्य गीता भगवान

INDEX

पृष्ठ संख्या

1.	प्रेम पत्र तुम्हारा मिला	5
2.	जहाँ तहाँ यही मौज है	8
3.	तुम्हारे ऊपर तो बड़ी सेवा रखी है..........	12
4.	तुम सब Wrong हो	16
5.	Actor होकर व्यवहार में Part नहीं करना है.........	18
6.	पुराने अपने पैरों पर खड़े हो जाओ..........	22
7.	अज्ञान में जो जहाँ रहता है..........	24
8.	ज्ञानी के लिए Hospital भी ओबराय होटल.........	26
9.	जल्दी ज़ल्दी सब अपनी स्थिति..........	28
10.	ज्ञान से खास कौन कौन से	32
11.	मैं तुम्हारे साथ हूँ	34
12.	पत्र सभी लिखो तो खुशी होगी...............	35
13.	हम सब यहाँ पहुँच गये	36
14.	हर वक्त खुशी को बाहर ढूँढ़ते हो	38
15.	तुम सदा याद हो	40
16.	भगवान को विद्वता प्यारी नहीं	41
17.	जिज्ञासू को अपने अन्दर ही	44
18	मन मोड़ने में होशियार है	46
19.	अंत बेले में जिसे भगवान	48
20.	बस हुकुम के अन्दर हर	49
21.	तुम ज्ञान से इतनी प्रीत करो	52
22.	प्रेम माना किसी के लिए भी नफरत का	55

23.	तुम सबको ज्ञान सुना के कार्य	58
24.	यहाँ रोज इस बात पर जोर दिया	62
25.	सत्संग रोज होना चाहिए	64
26.	सारी सृष्टि भगवान की	66
27.	अपनी भूल का पता लग जाए	69
28.	आत्मा समझने से सब विकार	71
29.	सच है जिन्होंने दादा जैसे अवतार	73
30.	ये बेचारे हमारे पीछे ठन्डे हो	75
31.	जहाँ रखाते हो पैर तुम	76
32.	सारी दुनिया भगवान को भुला	78
33.	तुम इतने बड़े हो कि सबमें	89
34.	गुरू को एक बार अकेले में	81
35.	मन को ढूँढ़ने बैठेंगे	83
36.	छः घण्टे नींद बाकि	85
37.	ज्ञानी जहाँ पैर रखे	86
38.	काम क्रोध लोभ मोह	87
39.	गुरू ने शिष्य को बोला	88
40.	एक गुरू के पास	89
41.	यह पूरा जगत सपना है	90
42.	तुम भी एक दूसरे से अधिक	93
43.	गोपियों ने शर्म उतारी	96
44.	जिस दिन ज्ञान सुन कर	99
45.	गुरू नानक पहलाज	101
46.	आनन्द और शांति तुम्हारा	104
47.	आखिर भी जैसे वीचार	107
48.	आज सत्संग में एक दृष्टांत	111

49.	एक बाप चोरियाँ करके	112
50.	हरिद्वार में एक सन्यासी	113
51.	जोत से इक जोत	114
52.	संसार की बातें जैसे पानी	117
53.	आशिक वे कहे जाते हैं	119
54.	हमेशा अपनी सच्चे स्वरूप	124
55.	ज्ञानी बहते हुए दरियाह	129
56.	Wisdom is quite	132
57.	फिर फिर माया भगवान	135
58.	जहाँ प्रेम है वहाँ क्या	140
59.	जिज्ञासु एक नौजवान	145
60.	दुनिया के लोग चाहते हैं	150
61.	मैं वह दिन देखना चाहता हूँ	153
62.	तूफान आता है थोड़े समय	157
63.	However hungry you are	161
64.	कोई भी नई बात दुनिया	164
65.	देखो कि क्या हुकुम लगा पड़ा है	166
66.	तुम कभी भी अपने को	169
67.	सबको अन्दर से मार दो	170
68.	सब कुछ होने से पहले	171
69.	शिष्य ने कहा मैं आदतें	174
70.	ज्ञान है ही इसी वक्त के	177
71.	Throw off as enemies	179
72.	लड़ाई में अकेले थे	180
73.	सदैव अपने असली स्वरूप	184
74.	हमारे घोड़े दिल्ली	190

75. यहाँ सत्संग खूब हो रहा है 191
76. आप गँवाइए 193
77. कोई लिखता है कि 197
78. वाह वाह भगवान के कितने नाम 199
79. तुम्हारे जैसा न कोई हुआ 205
80. प्रालब्ध सबकी बनी है 210
81. सत्यकाम आया ऋषि गौतम 211
82. जब जब फुर्सत मिले 212
83. ज्ञान है इसी वक्त के लिए 218
84. तुमने अपने ख्याल में 220
85. सबको अपने पैरों पर 226
86. गुरू वाणी है जिसके 229
87. मेरा घर सारी सृष्टि है 231
88. दिव्य दृष्टि वाले 235
89. तू और मैं पहले 239
90. ज्ञानी भक्तों के संकल्प 241
91. तुम सब प्रेम से 244
92. शरीर जैसी बेवफा 246
93. तुम सब कितने न मेरे 248
94. यह ज्ञान जब और जिस 250
95. मनुष्य गलतियाँ करता है 252
96. सीता का रामचन्द्र से 256
97. दिवाली किसके साथ 259
98. वृक्ष को पत्थर लगने से 262
99. मौज में मस्त रहे 264
100. तुमने याद किया है 266

पत्र गीता भगवान का -1

प्रेम पत्र तुम्हारा मिला पढ़कर खुशी हुई कि तुमने मेरे पत्र लिखने की सेवा कुबूल की है। यह शरीर है ही सेवा करने के लिए न कि लेने के लिए । कोई सेवा का मौका दे तो हमारे बड़े भाग्य है। देना निशानी है दातार की। सब कुछ दो पर वापसी की इच्छा नहीं रखो कि मुझे कुछ मिले। इज्जत मान, प्रेम, धन सब देने में ही मजा है पर यह इच्छा नहीं रखनी चाहिए कि कोई मुझे इज्जत दे, प्रेम करे। प्रेम और आनन्द का हर एक भण्डार है। प्रेम का झरना हर एक के अन्दर बह रहा है पर यह मनुष्य कंजूस होकर केवल थोड़े घर के सदस्यों, सम्बंधियों और दोस्तों में मोह रखकर सारी दुनिया के प्रेम से वंचित हो गया है। प्रेम में सारी दुनिया वश में आ सकती है न कि क्रोध और द्वेष से। **God is Love** परमात्मा का स्वरूप है प्रेम। तुम ही परमात्मा हो तुम ही सत चित आनन्द स्वरूप प्रेम स्वरूप हो। जो भी तुम्हारे सामने आए उससे मुस्कुरा कर मिलो और अन्दर में समझो कि यह भगवान है फिर कभी भी किसी पर क्रोध या ग्लानि नहीं होगी। हर जगह अपना ही स्वरूप देखो। सबसे बहुत ही प्रेम से मिलो कि सब भगवान के स्वरूप हैं। यही है भगवान का दर्शन। धिक्कार के बदले प्रेम का दान दो खराब किसको बोलें जो है ही भगवान। अपने आप को पहचानो कि तुम फलानी

हो ही नहीं। नाम तो तुम्हारे शरीर यानि कपड़ों का है तुम कपड़े पहनने वाले कपड़ों से जुदा हो न्यारे हो। शरीर और सम्बंधियों से तुम्हारा कोई कोई भी वास्ता नहीं है। ना कोई मेरा न मैं किसी का। सब कर्ज़दार हैं हिसाब किताब चुकाने के लिए यहाँ आए हैं बाकी तो कोई भी किसी का नहीं। बेकार आकर मेरा–मेरा करके अटके हैं। यही ममता है जिसने सारी दुनिया को रूलाया है। हर एक के अन्दर संसार भरा पड़ा है जो छोटा–छोटा मनुष्य बनाकर बैठा है जैसे मेंढ़क कुँऐं में बैठकर टर्र–टर्र करता है ऐसे ही मनुष्य भी छोटी–छोटरी दुनिया बनाकर ख्यालों की उसमें बैठकर गोता खाता है। हर एक को अपने–अपने सम्बंधी याद हैं उनकी चिन्ता में ही मर गया है। क्या होगा और कैसे होगा सब कुछ उतारकर भगवान पर या प्रारब्ध पर नहीं रखता है जो शक्ति सब कुछ कर रही है। करन करावन आपे आप मानुष के कुछ नाहीं हाथ। सतगुरू के उपदेश से ही आत्म ज्ञान होता है। जो सभी दुःखों क्लेशों, चिन्ताओं, संशय, भ्रम और देह अभिमान को नष्ट करने वाला है। केवल सत्गुरू में पूरन श्रद्धा विश्वास और सच्चा प्रेम होना चाहिए। तुमने अभी भी मुझे पूरा नहीं पहचाना है जो बहिन करके पत्र लिखा है मैंने जिन्हें भी ज्ञान सुनाया है उनमें से कभी भी किसी ने मुझे बहिन करके नहीं समझा है। पर भगवान करके जाना है। जब तक तुम उपदेश देने वाले रहबर को पूर्ण

भगवान की दृष्टि से नहीं देखोगे तब तक फायदा भी उतना होगा। इन चम की आँखों से देह ही दिखाई देगी कि यह लड़की है, औरत है पर दिव्य नेत्र चाहिए जो साधारण स्वरूप में आए हुए भगवान को पहचान सके जब तक मुझे भगवान करके नहीं देखोगे तब तक तुम्हें भी आत्मा का निश्चय नहीं होगा। मुझे माना देह नहीं। देह से दृष्टि हटा दो, इस झूठे जगत से भी दृष्टि हटा दो तो ईश्वर ही ईश्वर नजर आएगा। शरीर से ऊपर चढ़ जा। □

तुम्हारी गीता

पत्र गीता भगवान का -2

जहाँ–तहाँ यही मौज है। मन में मौज है तो जेल में भी जेलर साहिब हैं हर एक दिन हर एक रात हर एक घड़ी सुखदाई है। सिर पर आकाश का मण्डल है धरती पर सुहानी मखमल है दिन को सूरज की महफिल है रात को तारों की बारात है यहाँ पंछी मिलकर गाते हैं प्रीतम का संदेश सुनाते है। चश्में तम्बूर बजाते हैं, गाती है हवा मल्हार गान हर वक्त हंसी हर वक्त अमीरी है बाबा। जिसने अपना सब कुछ ईश्वर अर्पण कर दिया है उसे जगत की कोई भी रूकावट अपने कब्ज़े में नहीं कर सकती है। ऐसा पुरूष ईश्वर की अमानत हो जाता है। जैसे राजा की कोई चीज़ होती है तो उस पर कोई भी कब्ज़ा नहीं कर सकता है हर एक दूर हटता रहता है इसी प्रकार जब वह पूर्ण रूप से ईश्वर को अपना आप अर्पण कर चुका है तो दुनिया के लोग उससे सब आसरे उतारकर उसे छोड़ देते हैं कि यह हमारे काम की नहीं है अब यह ईश्वर की है उसी के काम में ही पूरा समय देगी। दुनियावी काम देने में हिचकिचाएंगे कि पता नहीं ये करेगी या नहीं क्योंकि उसने 24 घण्टे ही निष्काम में दे दिए हैं फिर सकामी कर्म करने के लिए समय ही कहाँ है। दुनिया के लोगों का खास तीन चीज़ों पर आध ाार है 1. जीवन 2. सम्बंध 3. मिल्कियत (जायदाद) पर ये तीन चीज़ें क्षण–क्षण में अलविदा करती जा रही हैं। कई

लोग पूछते हैं कि सम्बंधियों से प्रेम रखने के बदले वापसी में प्रेम मिलता है पर परमेश्वर से प्रेम करके वापसी में क्या मिलता है? इन बेचारों को पता नहीं है कि सम्बंधियों के प्रेम की वापसी ज़हर और ईश्वरीय प्रेम की वापसी अमृत है। ईश्वरीय प्रेम में यदि हम थोड़ा भी सच्चाई से बढ़ें तो ईश्वर अनन्त सुख आनन्द के भण्डार भर देता है जो अन्दर ही अन्दर लूटते हैं दुनिया का मोह मनुष्य को आसक्ति और परेशानी की ओर घसीटने लगता है जहाँ से मौत के सिवाय लौटने का कोई रास्ता नहीं है। दुनिया की किसी भी वस्तु को दिल से चाहते रहना माना भिखारी की तरह उसका मोहताज (गुलाम) बनना है। जो अपनी आँखें किसी भी सांसारिक पदार्थ के ऊपर रखकर दिन रात तड़पता रहता है उसको निरादर व नाउम्मीदी के सिवाय और कुछ नहीं मिलता है पर केवल आत्मा की ओर मुँह फेरे तो सच्ची तृप्ति के दरवाजे हमेशा के लिए खुल जाएंगे। निष्काम होने में इतनी तो प्रसन्नता है कि मानो देने के बदले सौ दफा अधिक आनन्द लौटकर मिलता है निज आनन्द पाने में क्या लज़्ज़त है, उसने थूका है शहंशाही को।

सब नेमत दौलत फीकी है। यहाँ सच्चा सौदा बिकता है कोई लेने वाला मुश्किल है। क्या राहत है, क्या फरहत है, क्या आज़ादी है जैसे पानी से भरे प्याले में पारा भरो तो पानी प्याले से खुद ब खुद बाहर निकल जाएगा ऐसे ही दिल रूपी प्याला जो खुदी रूपी पानी से

भरा है उसमें परमात्मा रूपी पूर्णता भरने से खुदी अपने आप स्थान खाली करके जाएगी। जिस प्रकार संसारी प्रेम का प्रभाव देखो कि जिसके साथ जितना गहरा सम्बंध होता है उतना उसे द्वेत का फर्क घटा हुआ दिखायी देता है इसी प्रकार सच्चे प्रेम में जितनी जुदाई घटती जाएगी उतनी एकता की कशिश बढ़ती जाएगी। तू मुझमें है मैं तुझमें हूँ आँखें मिला के देख अगर गैर देखता हैतो मुझपे इल्ज़ाम क्या? इतनी एकता तो हो जाए कि मैं तू हो जाए और तू मैं हो जाए। राधा ने कृष्ण से कहा

"श्याम तेरी बंशी अब मैं ठीक बजाऊँ
जो–जो तान भरी मुरली में सो सब गाय सुनाऊँ
हमारी बिन्दिया तुम ही लगाओ, मैं सिर पर मुकुट धराऊँ
हमरे भूषण तुम सब पहनो, मैं तुम्हरे सब पाऊँ
तुम्हारे सिर माखन की मटकी, मैं मिल ग्वाल नचाऊँ
तुम दही बेचन जाओ बृन्दावन, मैं मग रोकन आऊँ
सुनो श्याम तुम बनो राधिका, मैं नन्दलाल कहाऊँ"

जिसने ईश्वर को अपनी आत्मा मे अभेद अनुभव किया है वह उससे मिलकर एक हो गया है। जिस प्रकार शूरवीर, युद्ध के मैदान में जीत पाने के लिए अपने धनुष बाण तानकर बिल्कुल ठीक निशाने पर पहुँचाता है इसी प्रकार इस संसार रूपी संग्राम में जीत पाने के लिए ओम् भक्ति

रूपी धनुष में अपने को बाण के समान बनाकर सच्चे आत्म साम्राज्य के निशाने पर पहुँचा देना चाहिए। आत्म समर्पण पर निर्भर है। दुनिया में रहकर दुनिया के होकर न रहें। मेंढ़क साँप के आगे भले नाचता रहे, पर खुद को उसे निगलने न दे। माया हमें निगल न जाए। हम दर–दर धक्के खायेंगे, आनन्द की झलक दिखायेंगे, सब रिश्ते नाते तोड़ेंगे, दिल एक आत्मा से जोड़ेंगे, हम सूखे चने चबायेंगे पर गुरू पर वारी जायेंगे, हम रूखी रोटी खायेंगे भूखे पड़े रह जायेंगे, हम गाली ताने खायेंगे पर एको ब्रहम लखायेंगे। ब्रहमचर्य जिन्दगी में ऐसी खास खुबसूरती और खुशी भर देता है कि दुनिया नये रंग और ढ़ंग में नज़र आती है। हर रोज नये सिरे से खुशी आनन्द अन्दर घुसते चले आते हैं। इधर ब्रहमचर्य की खुशी, दिल की फरहत तेज और शक्ति, उधर ख्वाहिशों की गुलामी। दोनो हालतों में दिन रात का फर्क हैं। ब्रहमचर्य कोई जिस्मानी नहीं है। जिस्म को वश में करना तो ब्रहमचर्य की शुरूआत है पर निज (Pure) ब्रहमचर्य माना ख्यालों की मलीनता से दूर रहना ब्रहम के सिवाय दूसरा न देखना ब्रहमचर्य की तपस्या आखिर सुखों की खान बन जाती है।□

और सुख आनन्द।

तुम्हारी गीता

पत्र गीता भगवान का -3

तुम्हारे ऊपर तो बड़ी सेवा रखी है गुरू ने। उससे तुम्हारी तो छोड़ो कईयों की उन्नति होगी। टहल महल तांको मिले जापर संत कृपाल। सच तुम्हारे ऊपर तो भगवान का खास प्यार नज़र आता है क्योंकि तुमने अर्जुन की तरह हाथ भगवान के हाथ में दिया है हमेशा बालक होकर रही हो इसलिए सच्ची मालकी मिली है तुम्हारा तो अब मेरे से मोह निकल गया है बाकी बताओ किसमें जाकर बचा है। आज एक किताब में पढ़ा है कि पवित्रता की End यह है कि चित की एकाग्रता का आखरीन छोर एक ही प्रीतम तक महदूद न रहे मगर सारी सृष्टि से अमल हो जाए। प्रीत की End वह है कि मित्र का मन अपना मन एक हो जाए। मित्र का विश्वास अपना विश्वास हो जाए। मिलने और बिछुड़ने का वहम निकल गया, आपस में बेहद प्रेम भरपूर हो गया। गुरू के साथ रहने में अपना मजा है बिछुड़ने में अपना मजा है। मतलब है ही मौज। सचमुच प्रेम करने में ही अपना आप भूलता है दूसरे शहरों में अकेले जाने में बड़ा फायदा होता है बहुत कदर होती है गुरू की कि गुरू ने हमें क्या बना दिया है। जहाँ पैर वहाँ खैर है। जहाँ–जहाँ यह शरीर पहुँचता है वहाँ–वहाँ सख्त जरूरत है। भगवान के भगत किस–किस नमूने के हैं अधिक लोगों से मिलने पर बड़ा अनुभव मिलता है।

सच छोटे–छोटे गाँव में जाने पर पता चलता है कि वहाँ कितना प्रेम, सेवा, सादगी, उदारता है। सच्चे प्रेमी कैसे कोने– कोने में छिपे पड़े हैं। गुरू ही जानी जानन हार है जो वहाँ भेजता है जहाँ सख्त जरूरत है। मान और बडाई जो गुरू की होनी चाहिए वो हमारी हो रही है। जिसके लायक गुरू ही हैं। मैं अपने को खास भाग्यशाली समझती हूँ जो गुरू की नज़र खास मुझ पर है जो मुझे ही जहाँ तहाँ भेजता है। उसमें मेरी बहुत उन्नति होती है फिर कैसे सब मुर्दे हो जाते हैं इस ज्ञान की मुरली पर कैसे–कैसे किस–किस को विश्वास दिलाता है.। करता खुद आप है नाम होता है हमारा। दादू सोभ्या दास अपना नाम न ले। आप अकेला सब करे घट में लहर उठाय। मुझे तो आश्चर्य होता है कि मैं तो कुछ नहीं करती हूँ तो भी उसको इतना विश्वास कैसे आ जाता है। यह शरीर सचमुच औजार है गुरू की मर्जी किसी को जिलाए किसी को मारे। एक तरफ विश्वास बढ़ाता है दूसरी तरफ कंस और रावण को भी भेज देता है कि जाकर परीक्षा लेकर आओ कि कितना निर्भय और विश्वास में है वह खाली कह रही है कि मैं ब्रहम हूँ पर थोड़े ही डाँट–डपट पर डरती है क्या? निर्भयता भी गुरू ऐसी दिलाता है कि भले तलवारें लेकर आये तो भी डर नहीं है, सिर उतार कर चलना है, सिर कुर्बान कर दो यहाँ साँस लेने की जगह नहीं है। पर भगत का बाल भी बांका नहीं करता है। जो बन संवर कर

मुकाबला करने आते हैं वे आधे रास्ते में ही मरे पड़े हैं। यहाँ रोज नये मुर्दे आते हैं रोते हुए फिर हंसते हुए वापस जाते हैं और कौन सी करामत देखें भगवान की? जे तिस नजर न आवई त वात न पूछे कोय। सब गोपियां सेवा में लगी हुई थीं इस पर भी सबने यहाँ तक कहा कि हमने गुरू के लिए अभी कुछ नहीं किया है इतना करते हुए भी सबने रोया। उन्हें देखकर हमने कहा हमने भी अभी तक गुरू के लिए कुछ नहीं किया है जो ये सब गुरू के लिए कर रही है। इस बार ऐसा महसूस हुआ कि जैसे भगवान ने उधव को भेजा था कि जाकर ज्ञान देकर आओ पर उद्धव उनका प्रेम देखकर हैरान हो गया कि ये सब मेरे से भी ऊपर हैं उल्टा प्रेम सीखकर आया। कदम–कदम पर एक दूसरे से सीखते हैं। जब सत्‌गुरू के पास मरू तो सबको पसंद आऊँ। जब गुरू का हाथ सिर पर है तभी हर एक चाहता है। गुरू निष्काम और निरइच्छा है तभी हम माया से बच जाते हैं नहीं तो भगत भी बड़ी माया है। प्रेम सेवा प्रशंसा तन, मन, धन की सेवा करके कच्चे को तो गिरा दे ये भगत पर हर वक्त मन के ऊपर गुरू का पहरा रखना है सुजाग रहना है कि कैसे माया में गिरना नहीं है। गुरू ने इतना तो निष्काम बनाया है कि तीनों लोकों का राज्य चरणों में पड़ा है। ऋद्धिया–सिद्धियां सब नौकर हैं। किसी भी बात की कमी नहीं है। पर मन में कोई भी इच्छा नहीं है कुछ भी चाहिए नहीं यह कसम

उठाया है तो माया दरबान दासी होकर रहती है। अन्दर आने की ताकत नहीं। राह में अपने आपको बचाते हुए आगे बढ़ना है। यदि एक भी काँटा लग गया तो खड़े होकर निकालना पड़ेगा। रूकावट हो जाएगी मंज़िल पर पहुँचने के लिए। यहाँ के भगत भी (चिपकू) है। बहुत सख्त होना पड़ता है तभी जिन्द (जान) छूटती है। ज्ञान की ये बात सबको सुनाती हूँ कि एक खिलौना कितना भी उल्टा करते हैं तो फिर–फिर सुल्टा हो जाता है। मन और विकारों को देखकर कभी मायूस नहीं हो कि मैं आत्मा कैसे होऊँगी, क्रोध आ रहा है अभी तो मेरे में कमियाँ हैं। सो पुरूषार्थ दाँतों से दाँत भींचकर करते आओ पर मायूस नहीं हो। मैं किसी भी हालत में मुक्त हूँ। दिल रूपी डिबिया में मुरादी काबू रखो सबके चेहरे प्रसन्न हो जाते हैं। □

पत्र गीता भगवान का -4

तुम सब Wrong हो Wrong नज़र है Wrong तड़प है। तुम यदि देह में हो तो देखते ही Wrong हो। अब Right में आ जाओ कि मैं क्या हूँ तो सब कुछ बदल जाएगा।

मन है कुछ भी नहीं पर दिखता है ऐसे ही दिखायी देता है कि मैं कुछ? हूँ पोज करता है, मानो मैं कुछ हूँ पर हस्ती नहीं है।

तुम्हारी आत्मा महर दया है। भगवान गुरू आत्मा और दया एक ही बात है।

दया है ही अन्दर तुम्हारी आत्मा में। बाहर कहीं से दया नहीं होगी। तुमने अपनी आत्मा को पहचाना तो अन्दर से ही तुम्हें आशीर्वाद मिल जाती है। बाहर से कोई आशीर्वाद नहीं करेगा।

समझ अहंकार को मारकर खत्म कर देती है मै बीमार हूँ यह कहा तो तुम दोषी हुए अपने से भी सच्चे बनो, इंसाफ करो दूसरों के साथ भी। । अपनी बीमारी से सुलह करो। जो बीमारी कल होगी ही नहीं वह आज क्यों माने यह सच नहीं हुई।

सच पाने के लिए नाम रूप की पूजा छोड़नी चाहिए। पहले कृष्ण और नानक को भगवान समझते थे अब गुरू को समझते हो कि मेरा फलाना भगवान है। यह

कोई सत्य नहीं है। नाम रूप नाश है। तुम ही एक निराकार से साकार होकर आए हो। यह समझ अद्वेतमत ही सच है।

आत्मा को जानने से कोशिशें और अन्दर बाहर की खींचातानी खत्म हो जाती है।

धन के लिए प्रेम सब खराबियों की जड़ है। आज भी लाख रूपए मिले तो तुम्हें खुशी होगी या नहीं।

भगवान अच्छा नहीं है पर अच्छाई खुद भगवान है। अच्छा करो नहीं पर अच्छाई का आनन्द लो न दुनिया से भागो न दुनिया के पीछे पड़ो।

ऐसे पवित्र बनो जैसा तुम्हारा पिता है स्वर्ग में, पिता जैसे बनो नहीं तो मूत के मूत हो। कल्पना मल हो तो मल मूत्र ही हो।□

पत्र गीता भगवान का -5

Actor होकर व्यवहार में Part नहीं करना है। पर Director होकर कि मैं भगवान हूँ। मेरे लिए कोई भी जवाबदारी Duty फर्ज नहीं है। सर्व धमनि परितज्य। त्याग कुछ भी करना नहीं है। पर आम में कीड़े देखने से बैराग्य स्वंय आ जाता है। बीमारी में बीमारी का ख्याल दुःखी करता है। जुदाई में जुदाई का। बीमारी में ठीक होने का विचार करना चाहिए। I am feeling better इसी प्रकार जुदाई में मिलाप का विचार करना चाहिए कि मैं मिला पड़ा हूँ। आत्मा का ख्याल और अभ्यास छोड़कर अपनी कमज़ोरी पर रोना ज्ञान नहीं है। कमजोरी मौत है सदैव ऊँचे आशावादी विचारों द्वारा मन को उठाना है। ऐसा न हो कि मन तुम्हें घूंसे मारे। गुरू को करूणा है कि तुम सभी आज ही आत्मा में स्थित हो जाओ। वह अपने शरीर में नहीं फंसाता है कि मुझे याद करके रोओ। हमारा काम है ज्ञान से न कि गुरू के शरीर से। विचारों को Stop करो क्या सोचते हो?

मौन मन की और जबान की रखकर देखो। सारा दिन जबान चलती रहेगी तो तो अन्तर्मुखता का आनन्द कब लोगे। बोलने में ही झगड़ा होता है मौन है सोना।

सधवा दुःखी है या विधवा? लिखकर भेजना। सन्यास लेने की कोई आवश्यकता नहीं है। घर बैठे ही कर्म काटो

और किय्रमान कर्म न बनाओ यही सच्चा संयास है।

गुरू किस तरह तुम्हारे " हो मैं" (अहंकार) को काटता है उसके पास कौन सी तलवार है? जुआ की मेज पर बैठने वाला पत्ते जिसके हाथ में हैं वह भाग्यवान है या जो पैसे लेकर वापस चला जाय? किसी भी बात में एक शक रख सकते हो पर मेरे प्रेम में नहीं, मेरा प्रेम सर्व से एक समान है। कभी भी घटने वाला नहीं है। तुम्हारे हृदय में प्रेम का राज्य स्थापित हो जाए तो स्वर्गों का स्वर्ग तुम्हारे भीतर है। तुम्हारे पास है इतना प्रेम या किसी के लिए द्वेष भी है?

जो दूसरों का भय मिटा सकता है वह हर तरह से इज्जत के लायक है। तुम लोगों ने किसी का भय मिटाया है या स्वंय भी अभी भय में पड़े हो? अपने से पूछो कि किसका भय है?

सदैव मुस्कुराते रहो यही हमारे ज्ञान का सिद्धांत है। शरीर की परछाई को कुल्हाड़ी की चोट लगे तो शरीर को लगी क्या? माया पति के सिवाय माया का संग करना अपने को गिराना है अपने को पहचान कर फिर आजमाओ तो माया असर नहीं करेगी। शादी अगर प्रारब्ध में है तो कौन है ऐसा जो लोटा भरकर वापस आता है। जो जाते हैं मृग तृष्णा का जल भरने वे वहीं बैठ जाते हैं। शादी के बाद कौन है जो नहीं फंसता है; खुद में शादी का बंधन फर्ज, धर्म न माने। पवित्र जीवन बिताये, त्याग वैराग्य ज्ञान

पक्का रहे, शादी भोग वस्तु नहीं पर परीक्षा समझे।

निरइच्छा वाले की शेष प्रारब्ध रह जाती है जो उसके शरीर को चलाती है पर ज्ञानी है आत्मा तो आत्मा में प्रारब्ध नहीं है। कर्म सभी विकारी है केवल आत्मा ही निरविकारी है। कर्मों की गति गहन है, गुप्त है यह तो हर एक खुद ही जान सकता है कि यह कर्म कैसे हुआ मुझे इच्छा थी या भावी कराके गयी या मैं कर्ता हूँ मनुष्य दुनिया में कुछ भी नहीं, करने आया है करेगा तो भरेगा तो मरेगा, फिर जनम–मरण के चक्कर में भटकेगा Do nothing and every this is done. इन्द्रियों के धर्म अपने में मानकर कर्ता भोक्ता मानकर दुखी होते हैं स्वयं से पूछो कि मैं कर्ता हूँ या दृष्टा?

सकामी कर्म करने वाला कंजूस है क्योंकि अपने और अपने वाले के लिए जीता है यह जीवन निष्काम होना चाहिए। शरीर की एक–एक हड्डी दूसरों के काम आनी चाहिए। फिर जो समझता है कि मैं निष्कामी हूँ वह भी निष्कामी नहीं हुआ क्योंकि यहाँ भी 'मैं' आ गयी। 'मैं' का लोप होना चाहिए। लोक संग्रह (दूसरों के हित में) के लिए रहो लोक रीत के लिए नहीं।

उत्तर प्रश्न करने के सिवाय ज्ञान समझ में नहीं आएगा।

गुरू गूंगा शिष्य बहरा, लंगड़ा चढ़े पहाड़, अंधा देखे नूरानी नूर को।

तात्पर्य यह है कि गुरू भेद भाव द्वेत की बातों से गूंगा हो केवल अद्वेत आत्मा का वर्णन करे। और शिष्य को उसमें स्थित कराये। शिष्य दुनिया के वाद विवाद मत मतान्तरों से बहरा हो और विश्वासी हो। मन जब इन्द्रियों सहित भोग छोड़कर लंगड़ा हो जाए तभी आत्मा रूपी पहाड़ पर चढ़ सकता है। जब जगत के नाम रूप से अंध ा होगा तभी जहाँ–तहाँ परमात्मा का दर्शन होगा। पूरा समय अपने शरीर तथा दूसरे के शरीर को भुलाने में लगाना चाहिए। किसी के भी कर्मों पर नज़र नहीं रखो। कि फलाना ऐसा क्यों करता है। प्रेम का दायरा बढ़ाओ किसी को भी दोष नहीं दो। करूणा और दया में यह अन्तर है कि दया की जाती है दूसरे पर दूसरा देखना पाप है पर करूणामय स्वभाव होना चाहिए करूणा होती है अपना आप जानकर। सभी के लिए अति प्रेम यही करूणा है। गुरू के गुणगान करने में मजा आता है तो यह भी द्वेत है अब अपने गुणगान करो कि मैं क्या नहीं हूँ। जो तू है सो मैं हूँ जो मैं हूँ सो तू है। □

शेष सब आनन्द

तुम्हारी गीता

पत्र गीता भगवान का -6

पुराने अपने पैरों पर खड़े हो जाओ Air Condition मन को बनाना है जो फिर उस कोठरी से निकले ही नहीं। गुरू के पास निरइच्छा वाला पास होगा। शुभ चाहे अशुभ दोनों इच्छा दुखी करने वाली हैं एक है जो अपनी इच्छा से चलता है दूसरा है जो पर इच्छा से चलता है, तीसरा है जो न अपनी न दूसरे की (परइच्छा) ईश्वर इच्छा से चलता है यानि अपने को हल्का और निरइच्छा कर देता है फिर जहां हुकुम रूपी हवा ले जाती है उधर की ओर शरीर उड़ता है और समझता है कि जहां मेरी जरूरत है वहाँ भगवान भेजता है। यदि कर्ता होकर हम कुछ भी करेंगे तो उसका फल भोगना पड़ेगा और पछताना पड़ेगा। पर जो परमात्मा की इच्छा से चलता है वह कभी नहीं कहेगा ऐसा क्यों हुआ? Exhibition में जाते हैं तो एक बैठा बेचता है दूसरा खरीदता है। दोनों का मन चलेगा पर हम जो घूमने गये हैं वे ही मौज लेकर आये। इस प्रकार दुनिया में रहो तो केवल मौज लेने के लिए आयें हैं ऐसा समझो। दृष्टा साक्षी होकर खेल देखने के लिए आया है। तुम कभी भी ठहर कर नहीं बैठो कि गुरू ऐसा करे पर तुम्हें अच्छा लगे वह तुम करो। तुम अपना फर्ज़ संभालो पर गुरू के कर्म धर्म फर्ज में नहीं जाओ। तुम सबसे बड़े दातार होकर रहो। प्रेम भी दो गुरू को चाहे सर्व को पर लेने वाले नहीं बनो, लेने में इंतज़ार,

बेकरारी, नाउम्मीदी निराशा होगी, तुम्हारी सारी शक्ति सम्बंधियों ने दुनिया ने छीन ली है। जिन्होंने तुम्हें कहा तुम मेरी हो। पर एक गुरू ही है जो शक्ति बक्शता है कि तू खुद भगवान है। जिस समय मन आता है उस समय यदि तुमने नहीं निकाला तो चार चोर और भी साथ ले आयेगा। प्रेम में मन अमन हो जाता है। बाकी कितना भी अभ्यास वैराग्य करो तो बड़ा कठिन होगा पर गुरू के प्रेम में सब कुछ भूल जाता है। इसके अलावा सर्व से प्रेम करने में बाकी भी रही सही इच्छायें गुम हो जाती हैं। दिल बिल्कुल भर जाती है कि मैं सर्व का हूँ। □

और सुख आनन्द

तुम्हारी गीता

पत्र गीता भगवान का -7

अज्ञान में जो जहाँ रहता है जिन–जिन के साथ रहता है मान इज्जत सुख सुविधा से उन लोगों से हिल मिल जाता है। मन को उनका रंग लग जाता है। मन कुछ भी छोड़ने के लिए तैयार नहीं है, अटक जाता है। तुम भाग्यशाली हो जो हर बात में छूट गये हो। मोह ममता, काम आदि सभी विकारों से छुड़ाने वाला है सत्‌गुरू का प्रेम। गुरू जिस पर नज़र रखे उसके विकार सब जलकर भस्म हो जायेंगे। जिसको निहारे पूरा सतगुरू उसका महर दया से रोम–रोम शीतल कर दे, भव सागर से पार कर दे देकर हाथ हिम्मत का। तुम्हारे ऊपर गुरू की खास कृपा हुई है, उसके साथ–साथ जितनी कृपा अपनी करेंगे उतना फल तुम्हें मिलेगा। प्रकृति से ही आपको ऐसे सीन (नज़ारे) दिखायी देंगे जो अपने आप ही शुक्राने याद आते रहेंगे। भगवान पाने की इच्छा भी भगवान पाने में रूकावट है क्योंकि तुम खुद भगवान हो फिर इच्छा काहे की करते हो। इच्छा मात्रम् अविद्या। इच्छा ही रूकावट इच्छा जिसे नहीं वह खुद भगवान है । चर्तुभुज माना चार बाहों वाला नहीं पर शंख चक्र गदा पद्म धारण करने वाला शक्ति वाला भगवान है। शंख माना ओम का नाद जिसकी जबान से निकले, चक्र माना चक्कर ऐसा चलाये जो उल्टा मन सीधा हो जाए, जीव से ब्रह्म हो जाए। गदा माना ऐसा हथियार

है जो कितना भी Power वाला दुश्मन है मन तो भी उसे मार दे। पदम माना कमल के फूल के समान न्यारा हो ये चार शक्तियों को धारण करने वाला चतुर्भुज। इच्छा को रोकना भी इच्छा है। मुझे इच्छा न हो यह भी इच्छा ही है। पर सहज वैराग्य से इच्छा ही नहीं हो यह ज्ञान है। इच्छा तो तभी होती है जब किसी वस्तु को सत्य और अच्छा (मन पसन्द) समझते हैं पर मृग तृष्णा के जल की इच्छा कभी नहीं होगी। क्योंकि एक बार निश्चय हुआ कि यह जल है ही नहीं, है ही रेत तो लोटा लेकर कैसे जायेंगे चाहे कितनी भी प्यास हो। मछली को पानी में तृप्ति मिलेगी न कि शहद में, इसी प्रकार मन को शान्ति भगवान से आयेगी न कि माया से।□

तुम्हारी गीता

पत्र गीता भगवान का -8

ज्ञानी के लिए Hospital भी ओबराय होटल की तरह है। जहाँ पैर वहीं खैर। शरीर है बुद–बुदे की तरह पर तुम हो सागर बूँद समानी सागर में ये जाने सब कोय पर सागर समाना बूँद में ये जाने विरला कोय; पूरा का पूरा ब्रह्म तुम हो। तुम सर्व व्यापक हो, कहाँ नहीं हो? केवल एक शरीर में तुम नहीं हो। इतने बड़े विशाल हो तुम जो शरीर की हद में आ नहीं सकते तुम बेहद के बादशाह हो। ज्ञानी अपने शरीर को इतना तो अपने से जुदा समझता है जितना तुम्हारा शरीर। Partnership कट करो शरीर से जुदाई कर लो हंसते–हंसते। Three Laughing Saints की तरह हर वक्त हंसते रहो। जब तक है जिन्दगी सभी को हंसा के जी। हंसकर ही सुलझ जाती है उलझन कभी–कभी। जहाँ ज्ञानी जागता है। वहाँ अज्ञानी सोया पड़ा है कि यह जगत मिथ्या है। उसे शरीर और जगत की बात पानी पर लकीर की तरह भी नहीं भासती है। जहाँ अज्ञानी सोया पड़ा है आत्मा करके वहाँ ज्ञानी जागता है।

जब तकलीफें अधिक आयें तो समझना चाहिए कि भगवान के करीब होता जा रहा हूँ। शरीर का पर्दा हटता जा रहा है। मेरा ख्याल परमात्मा में लीन हो गया है। फूलों के कारण काँटों की इज्जत की, ऐसे ही भगवान की खातिर सूली भी सेज समझी मैंने। सूली उनके लिए (आशिक) सेज और मरना उनके लिए मौज की महफिल है यानि खुशी है। ज्ञानी जीते जी ही Will कर देता है कि ये सबकुछ परमात्मा का है। कोई भी वस्तु मेरी नहीं है किसी को भी लेना, देना है तो अभी लेकर निपटा दे। ख्यालों से खाली होकर बैठे।

ज्ञानी सारी सृष्टि से अलविदा करके बैठता है। किसी से भी मिलने की जरूरत नहीं है उसे। अपनी मौज से मैं घूमने सैर करने आया हूँ। अपना आप पहचानने, आया वो बेशक आया और पैर घुमाने आया, दूसरा कोई काम नहीं था इस दुनिया में आने का। अपना आप पहचाना तो सब फर्ज़ पूरे हो गये। महात्मा गाँधी ने जेल को भी तीर्थ यात्रा करके समझा। पहले ही बिस्तरा बाँध कर तैयार करके रखता था कि किसी भी समय बुलावा आया तो खुशी से जाऊँगा। अंग्रेज़ ही थक गये। जेल में भी सभी को गीता सुनाता था। शरीर कहीं भी बंधा रहे पर आत्मा अलख से मिली पड़ी है। □

जो हर तरह से हर बात के लिए तैयार है
उसके पास तो मौत भी आकर लौट जाएगा।

तुम्हारी गीता

पत्र गीता भगवान का -9

जल्दी–जल्दी सब अपनी स्थिति और मेहनत से नये–नये लोगों का उद्धार करके लिखती आओ। सबसे मेहनत करके तैयार करने का काम जल्दी करो। वक्त कम है काम अधिक है। खाज़ी इंसान जिन्दगी से प्यार करते हैं पर तुम्हें मौत से अधिक प्यार करना है मौत से अधिक प्यार करने का मतलब है दूसरों की भलाई के लिए अपने आपको कुर्बान करना। गुफाओं में बैठकर पर्वतों के नीचे घाटियों में समाधी लगाने वाले सुस्त संयासी यहाँ नहीं चाहिए पर इस वक्त अपने स्वार्थ को छोड़कर निष्काम कर्म के मैदान में निर्भय होकर उतरने वाले तैयार होने चाहिए। निन्दा योग्य कायरता को उखाड़ फेंको। सच का प्रचार करो। तुम इस बात से नहीं डरो कि लोग तुम्हें इज्जत नहीं देंगे अभी तो झगड़े तुम्हारे सामने आयेंगे, झगड़ा होगा तो निबेरा भी हो जाएगा। तुम्हारा सच्चा धर्म है सच्चे इंसान तैयार करना। तुम्हारे पास ऐसी मशीन है। स्त्री के समान कोमल हृदय रखो मर्दों की तरह दिमागी ताकत। साहस और उदार चित दिल रखो। आजादी लेते हुए भी नम्रता और प्यार वाली दिल रखो, आज्ञाकारी होकर रहो। वायु के समान बिना रोक टोक के चलो मुक्त होकर घूमो फिरो पर दूसरी और कुत्ते की तरह हुकुम में चलने वाले और लता की तरह झुकते (नम्रता) चलो। जो

सत्संग के अनुसार कायदे से न चले मनमानी से आजाद होकर चलना चाहे उन्हें निकाल फेंको। सच्चों के साथ मेहनत करो। डर, डर क्या है? निराशा क्या है? दो रोटलों के गुलाम बने हो तभी डर लगता है। जैसे शेर हाथी का सर फोड़कर उसका खून पीता है अपनी गजगोर से सारे वन को कम्पायमान कर देता है उस वक्त उसके पास खड़ा शेर का छोटा बालक अपने पिता की गर्जना से डर जाता है क्या? इसी प्रकार तुम भगवान के बालक हो तो भगवान कैसी भी हालत करे तो तुम्हारे से कोई खराबी नहीं करेगा। माया दो मनुष्यों से हार जाती है एक वो जो 'मैंना' समझता है जो कोई भी डोर उसे बाँध नहीं सकती है दूसरा वह जो मैं ही हूँ ऐसा समझता है वह इतना तो बड़ा है कि कोई भी रस्सी उसे नहीं बाँध सकती है तुम दोनों बातों में से किसी एक पर भी अभ्यास करो तो दुनिया की कोई ताकत तुम्हें झुका नहीं सकेगी। आओ सदियों की कमजोरी, बेवकूफी, डर और आलस्य को पुराने वस्त्र के समान चीर फाड़कर फेंक दो। जीवन क्या है? एक छिपी हुई शक्ति अपने स्वरूप में जाहिर होने के लिए लगातार कोशिश कर रही है पर उसकी बाहरी प्रकृति ने उसे दबा दिया है। उस लड़ाई या कोशिश पुरूषार्थ का नाम ही जीवन है।

यहाँ एक सत्संगी को ज्ञान सुने हुए अभी एक महीना भी नहीं हुआ है तो जबरदस्त परीक्षायें शुरू हो

गयीं। पति हांगकांग में था। उसके आस–पड़ोस वालों की और रिश्तेदारों की चिठ्ठियाँ शिकायतें गयी। उन्होंने उल्टी सीधी बातें लिखीं, औरत के कारण आधी मुसाफिरी से वापस आ रहा था तो उसी शॉक में ही Hart fail होकर मर गया। अब मैके ससुराल वाले लड़की के पीछे लगे हुए हैं कि तुम्हारे सत्संग के कारण उसे शॉक आ गया तुमने पति को मार डाला। वह तो ऐसी अडोल है कि मुझे दिल में पक्का बिठाकर बैठी है कि मुझे तो भगवान मिल गया है सब कुछ चला गया है तो क्या हुआ। ससुराल वाले कपड़े गहने पैसे सब उतार कर ले गये हैं। मुझे घर में आने नहीं देते हैं पर मैं तो छिप–छिपाकर मिल आती हूँ। मुझे दूर से देखने से ही उसे शक्ति आ जाती है, अपने को विधवा नहीं समझती है। मैंने कहा रास्ते के कांटे दूर हट गये। बहुत अधिक विश्वास जैसे इसने रखा है सब हैरान हो गये हैं। तुम अपने से पूछो ऐसी परीक्षाओं में तुम्हारा मन कहाँ होगा। पूरे पूने में हाय–हत्या मच गयी है इस बात के कारण कि गीता के सत्संग में नहीं जाओ वह रन–रन कहकर सबको विधवा बना देती है। मैंने कहा मैं रन–रन कहकर सच्ची सुहागिन बना देती हूँ। तुम बताओ तुम्हें भी तो ये भ्रम संशय नहीं है। संभाल कर मेरे से प्रीत रखना कहीं बकरियाँ न मर जायें।

"मैं बालक बनकर तुम्हारे साथ खेलता हूँ मेरे गुरूदेव कभी–कभी रूठकर तुमसे दूर चला जाता हूँ

लेकिन रात को बिस्तर पर आकर लेटता हूँ तो तुम मेरे सिरहाने पर आकर बैठते हो। तुम्हारी आँखों में तेज है और तुम चुपचाप दया दृष्टि से मेरी ओर देखते हो। उस वक्त मेरे मन का भाव एक दम बदल जाता है, मैं तुम्हारे चरणों में झुक जाता हूँ पर तुमसे क्षमा नहीं माँगता। तुम बिल्कुल गुस्सा नहीं करते क्योंकि मैं तुम्हारी ही सन्तान हूँ। नहीं तो बताओ मेरे जैसा हठ भला और कौन सहे। तुम मेरे मालिक हो सखा हो मैं कभी–कभी ऐसा देखता हूँ कि तुम मैं हो मैं तुम हूँ ? पसन्द है यह भजन। संसार में कोई भी ऐसा मनुष्य है जिसे सतचित आनन्द की प्राप्ति हुई हो। ऐसा ब्रह्मज्ञानी बाहर से कभी सयाना तो कभी मूर्ख (घर वालों के लिए) और भगतों के लिए विद्वान, कभी गरीबी हालत में एक झोपड़ी में बैठा हुआ तो कभी अजगर की तरह भारी (राधा की कोठरी में बैठा) कभी मेहरबान तो कभी वज्र की तरह कठोर। कभी इज्जत वाला तो कभी बेईमान, पर उसके अंदर आनन्द का झरना हमेशा समान रूप से बहता रहता है।□

और सुख आनन्द

तुम्हारी गीता

पत्र गीता भगवान का -10

ज्ञान से खास कौन–कौन से फायदे होते हैं, लिखकर भेजो। यहाँ सब भजनों का अर्थ बताया जाता है तुम भी सब भजन गाओ और उसमें लीन हो जाओ। ज्ञान सुनकर प्यारे कितना सुनोगे। अब ज्ञान अज्ञान सर्व भुलाकर अपने आपको गुम करते आओ कि मैं न ज्ञानी हूँ न मैं अज्ञानी हूँ पर प्रेम ही प्रेम केवल रह जाये द्वेत का धुँआ भी न बचे। सब मैं ही हूँ मेरे सिवाय कुछ भी नहीं है। सुन्दरता का फुरना उठाकर दूसरे को सुन्दर समझते हो पर फुर्ना जिससे उठा वह तुम सुन्दरता का भण्डार हो। अब मैं ही तो हूँ। इसलिए सब मेरे सिर पर साईं हैं (सरताज) सबमें साईं बसता है क्यों किसी को कम ज्यादा समझते हो। "चरण धूल तेरे जन की होवां तेरे दर्शन को बलि जाई।" सारी खल्कत में खालिक (परमात्मा) को देखकर सबके आगे नम्रता करता जाऊँ। क्योंकि भगवान के सिवाय दूसरा कोई नहीं है। सब जगह मेरा प्रीतम ही है घर सुख वसिया बाहर सुख पाया (अन्दर में आनन्द है तो हर जगह आनन्द ही आनन्द है)

I enjoy my self not the party ज्ञानी चाहे Party में हो या श्मशान में वह तो अपने आप में ही खुश है। मौज में है ? अन्दर विनोद रहे दिन राती सदा–सदा हरि केला।

ऐसी तुम्हारे अन्दर में शांती आयी है या नहीं? अन्दर

की उथल–पुथल बन्द हुई है या नहीं? सहज समाधि ऐसी होनी चाहिए। अन्दर का सन्यास हो।

"वन सौं सदन सभै कर समझो,
मन ही मांहि उदासा रे मन ऐसो कर सन्यासा।"

बाकी कौन सी बात में तुम अपने को गुरू से कम समझते हो। गुरू के समान हो जाओ। अपनी बुद्धि बिल्कुल गँवानी है। गुरू की मत पर चलने वाला कभी भी धोखा नहीं खाएगा। उसमें ही सच्ची भक्ति आती है। □

सर्व से प्यार।

पत्र गीता भगवान का -11

मैं तुम्हारे साथ हूँ तुम कुछ भी नहीं करती सब मैं ही हूँ। चिन्ता और डर नहीं करो बहादुर हो जाओ। शेर शिवोहम् की गर्जना करते आओ। ब्रह्म का नाद हर वक्त तुम्हारे मुख से बजना चाहिए। शेर की औलाद किसी जानवर की गर्जना से कभी डरती नहीं है पर खुद गर्जना करता आएगा। निर्भय, निरवैर होकर रहो। आत्मा की ही बात निकलनी चाहिए। 24 घण्टे सत्संग का वातावरण होना चाहिए, दूसरी बोली नहीं बोले। देह की बोली बन्द करो तू और मैं हैं ही नहीं है ही अल्लाह। □

गीता

पत्र गीता भगवान का -12

पत्र सभी लिखो तो खुशी होगी। हर एक अपने को खुश नसीब समझे कि मेरे जैसा न कोई हुआ है और न होगा। भगवान ने सबकी प्रारब्ध उसकी भलाई के लिए सुनहरे हाथों से बनाई है लिखी है। पर मनुष्य समझता है कि भगवान ने मेरे साथ ऐसा क्यों किया, ऐसा नहीं करता, यहाँ नहीं रखे, वहाँ रखे, उसे ज्यादा दिया इसे थोड़ा। उसे ठीक रखा है मुझे बीमार मतलब दूसरों को देखकर हर एक अपने को जलाता है "बिना आग जले संसार।" कोई भी अपने बख्त भाग में खुश नहीं है सुखी नहीं है। हर एक अपने हाल में रोता है। संतोष का स्वभाव जब तक हमने अपना नहीं बनाया है तब तक रोते ही उम्र जायेगी। प्यार लेने के बदले प्यार करना है। इज्जत लेने के बदले इज्जत देनी है। सब कुछ देना चाहिए लेना कुछ भी नहीं चाहिए लो केवल सबकी दिल, बाकी सब कुछ देते रहो। दूसरों के विकार देखने के बदले अपने विकार देखकर रोज अपने को बदलो। जहाँ मन कहे ऐसा करो वहाँ उल्टा करके दिखाओ। जहाँ मन कहे ऐसा करो वहाँ नहीं करो। मन से उल्टा चलो। धिक्कार के बदले प्रेम रखो गुरू मेरे मन का मालिक है। जैसा उसे अच्छा लगे वैसा चलूँगा न कि मन के कहने पर चलूँगा जो कर्म उसे न अच्छा लगे उससे हमेशा अपने को बचाते रहो। □

आपकी

गीता

पत्र गीता भगवान का -13

हम सब यहाँ पहुँच गये हैं तुम्हारी याद की माला फेरते–फेरते। रास्ते में समय अच्छा गुजर गया। तुम समझते हो कि केवल हम गुरू को याद करते हैं पर गुरू की जितनी ममता तुम्हारे में है उतनी तुम्हारी नहीं है क्योंकि तुम्हारे पास तो और भी कई खिलौने हैं जिनसे दिल बहलाते हो, पर गुरू का तुम्हारे सिवाय कौन है जिसकी चिन्ता करे। गुरू का शरीर भी तुम्हारी सेवा में और धन भी तुम्हारे लिए है। तुम्हारा तन, मन, धन आधा माया में तो आधा भगवान में है। Total Surrender जैसे गुरू ने तुम्हें किया हैं वैसे तुमने गुरू को किया है। दादा ने कहा है I may die that you may live. काश मैं मरूँ पर तुम्हें जीवन मिले। तुम भी आप समान हो जाओ। निरासक्त हो जाओ। दिन पर दिन बढ़ते जाओ। आत्मा में ही रमण करो। हर एक को आत्मा का जवाब दो। नहीं तो कर्म बनेगा। जगत मिथ्या तो जगत की बातें भी मिथ्या। सब ड्रामा भुलाकर फिर–फिर पर्दे पर नज़र रखो।

राजा जनक के पास सुभद्रा नाम की एक ब्रह्मज्ञानी औरत आयी राजा ने पूछा तुम कौन हो? कहाँ से आयी हो? सुभद्रा ने कहा एक ही बार में तुमने हजार पाप कर लिये खुद को देह मुझे भी देह समझा। अपने को पुरूष मुझे स्त्री करके देखा। जगत को सत अपेन को जीव माना। मतलब एक

अक्षर में ही जीवन मरण है। राजा जनक सुजाग हो गया। एक प्रश्न भी किसी से देह का पूछोगे तो पाप किया। बिल्कुल कसम उठाओ कि इक घड़ी विसरूं राम को तो ब्रह्म हत्या मोहे होय। हमारा धर्म है अशोक रहना अब कौन सी हालत आएगी जो हम शोक करेंगे? कोई बेइज्जती करे हमारे नाम से अपमान करे, गाली दे तो शोक करना चाहिए? आत्मा की कोई बेइज्जती कर सकता है? ज्ञानी ने अपने मान की टोपी पहले ही सर से उतार कर रख दी है तो कोई भी उसका अपमान नहीं कर सकता है। दूसरा कोई क्या भी करे उसको नहीं देखे पर तुम्हें असर क्यों हुआ उस ओर देखो तो अपनी स्थिति का पता लगेगा। हर वक्त स्वयं को जाँचों, दूसरे को नहीं देखो दूसरा है ही नहीं। □

पत्र गीता भगवान का -14

हर वक्त खुशी को बाहर ढूंढ़ते हों सच्ची खुशी, सच्चा आनन्द तो तेरे पास है उसको गंवा के बाहर तलाश करते हो। मृग की नाभि में कस्तूरी छिपी होती है वह समझता है सुगन्धी बाहर है, उसके पीछे दौड़कर प्राण दे देता है। तुम भी समझता है, बाहर में आनन्द प्राप्त होता है अपने को टटोलो तो सब कुछ तुम्हारे अन्दर है। अपने को Check करो जो भी हालत आती है अपने को चढ़ाने के लिए। किसी से फोन पर भी बात करेगा सामने वाला ध्यान नहीं देता है तो तुम दुःखी होता है। फोन करने से पहले अपने से पूछो कि क्या जरूरी काम है, जो तुम बैठकर Number घुमाता है तुम तो Free हो जल्दी Number घुमा दिया, Ring सुनते ही वह तो जरूर उठाएगा, वह किस काम में बैठा होगा ये कभी सोचा है, कभी प्रेस जलती होगी, कभी रोटी तवे पर होगी तो कभी Bathroom में होगा। Ring सुनते ही वह जरूर अपना काम छोड़कर आएगा तो खफे भी जरूर होगा इसलिए सब बातें सोचकर फिर Diel करो। तमाम जरूरी काम है तुम रह नहीं सकते हो, एक बार जरूर सोचना। मन के अधीन, प्रेम के अधीन, आदत के अधीन हो गये हो तुम। ज्ञान के जरिए तुम हर गुलामी से छूट सकते हो। इसका मतलब है तुमने अपने जीवन में ज्ञान लगाया ही नहीं है। बाकी सुबह शाम

सत्संग में आते हो, अच्छा सत्संग का लेबल लगाया है रहणी तो बनायी नहीं। ज्ञान माना समझ ज्ञान माना Controling Power तुम्हारे पास थोड़ी भी Controling Power नहीं है जो अपने को रोक सको। जब तुम्हें Result भी पता है फिर भी मन के अधीन हो जाते है इसका मतलब गुरु तुम्हारा Power full नहीं है जो मन को छुड़वाये किसी की आवाज सुनने को भी तरसता है सिर्फ बाहर का रस लेना चाहता है, क्या तुम्हारी आवाज मरी हुई है जो दूसरे की आवाज सुनना चाहता है अरे आवाज सुनो तो अपने अन्दर की सुनो जो तुम्हें सतर्क करती है। बाहर की आवाज आज अच्छी लगेगी कल वही आवाज तुम्हें बुरी भी लगेगी। पर अपने अन्दर की आवाज तुम्हें Right लगेगी। गलती निकालो तो अपनी निकालो। तभी शान्ति से रह सकेगा। जब सामने वाले की गलती निकालेगा तो पूरा समय उसी में उलझ जाएगा शान्ति कोसों दूर चली जाएगी। मन में विक्षेपता भी आ सकती है। अपनी गलती निकालने से तुम साफ हो जाएगा उतना ही भगवान के नजदीक होगा। एक ख्याल को रखने से भगवान के प्रेम में कमी आ जाती है। हर ख्याल को काटने से ही उतना ही उत्साह उमंग और भगवान के लिए प्यास बढ़ती है, जो भी मुख से निकलता है वह निराकार का हुकुम समझकर आगे बढ़ो। वहीं रूक मत जाओ तुम्हारा ही Loss होगा।□

Om

पत्र गीता भगवान का -15

तुम सदा याद हो। तुम्हारी सबकी प्रेम और कुर्बानी भूलने वाली नहीं है। प्रेम में दो दिलों का मिलाप है। एकता का अनुभव करो कि मैं और भगवान एक हैं बिछोड़े का वहम (भ्रम) उतारकर एक हो जाओ। शास्त्रों में लिखा है कि जो दस साल सत्य बोलता है उसे वचन सिद्धि संकल्प सिद्धि मिल जाती है। सत्य बोलने का मतलब यह नहीं है कि मैं फलाना हूँ या फलानी हूँ या 2+2 = 4 यह सत्य नहीं है पर सत्य है कि मैं आत्मा हूँ सब मैं ही तो हूँ यह सत्यों का सत्य है। God is truth अपने ऊपर जो खुद आशिक है कि मैं क्या नहीं हूँ मैं खुद भगवान हूँ उस पर सारी दुनिया आशिक है। भगत बनना अभिमान है भगत भी शरीर में होगा पर आत्मा खुद परमात्मा है। केवल आत्मा के निश्चय से द्वैत, द्वेष, संकल्प, विकल्प डर सब नाश हो जाते हैं। तुम वहाँ अकेले रहे पड़े हो पर निर्भय हो यह आत्मा का ही लक्षण है। तुम्हें पक्का निश्चय हुआ पड़ा है कि आत्मा निर्भय है। सदा बसत तुम साथ न चोर न डाकू देखो पर है भगवान। मेरा कुछ है ही नहीं तो जाएगा क्या? कोई ठग नहीं हो सकता।□

पत्र गीता भगवान का -16

भगवान को विद्वता प्यारी नहीं है, पर हृदय की शुद्धता और प्रेम प्यारा है। प्यार से अधिकार भी अच्छा लगता है पर प्यार रहित वैदिक स्तुति भी अच्छी नहीं लगती।

भगवान कृष्ण की द्वारिका में जब भट्ट लोग स्तुति और महिमा करते थे तो वो बोले, चाहे तुम कितनी भी मेरी महिमा करो, पर ब्रज की गालियों और तानों में जो रस है, उसका वर्णन शेष शारदा भी नहीं कर सकते।

ऐसी बंशी को आग लगे,
जिसने घर छुड़ा दिया।

पेड़ को पत्तों की ज़रूरत और परवाह नहीं है क्योंकि एक गिरा तो दूसरा हरा पत्ता फिर आ जाएगा, पर पत्ते अगर पेड़ से झड़कर गिर जायें, तो सूख सड़ जायेंगे। इसी तरह भगवान के विराट स्वरूप से अगर अलग हो गये, तो परिछिन्न जीव अपने को छोटा समझेगा और सूख जाएगा पर विराट स्वरूप से जुड़ा रहेगा कि "मैं भी वही हूँ" तो सदा ही हरा रहेगा। अपनी हस्ती को अगर अलग समझते हैं और हद में रहते हैं तो दुःखी–सुखी और खाली हो जायेंगे पर गोविन्द से जुड़े रहेंगे तो हरे–भरे रहेंगे। पत्ते को पेड़ की परवाह होनी चाहिए कि मैं उससे अलग न रहूँ, पर पेड़ को पत्तों के अलग होने की परवाह नहीं है।

दूसरों की बुराईयों और पापों को भले बक्शो, पर अपने मन की हरकत को कभी भी न सहो, वो बक्श देने के लायक नहीं है। मन के ऐबों पर दया करने का मतलब है साँप को दूध पिलाना। गहना सुन्दर होता है सुनार की कारीगरी से, उसमें औज़ारों का क्या काम? ऐसे ही इन्द्रियों से अगर खराब कर्म करते हो तो दोष तुम्हारा है न कि इन्द्रियों का। ज़ेवर अगर खराब बनते हैं तो दोष न तो सोने का है और न औज़ार का होता है पर सुनार का होता है।

अर्धांग का रोग उसे कहते हैं जिसमें आधा अंग ठीक है आधा खराब।

१. वैराग्य हो पर ज्ञान न हो, उसे अर्धांग का रोग कहते हैं।
२. कहणीं हो पर रहणीं न हो, उसे अर्धांग का रोग कहते हैं।
३. सन्यास हो पर त्याग न हो उसे अर्धांग का रोग कहते हैं।
४. ब्रह्म श्रोत्री होने पर ब्रह्म नेष्ठी न हो उसे अर्धांग का रोग कहते हैं।
५. धन कमाना जानता है पर खर्च न करे उसे अर्धांग का रोग कहते हैं।
६. सेवा लेता है पर करना नहीं जानता उसे अर्धांग का रोग कहते हैं।

जैसे स्थूल शरीर का अर्धांग है वैसे सूक्ष्म शरीर का भी है। जिनको ऐसा रोग है वो ब्रह्मज्ञानी गुरू से दवा लेकर जल्दी ही तंदरूस्त हो जायें।□

और सुख,
तुम्हारी गीता

पत्र गीता भगवान का -17

जिज्ञासू को अपने अन्दर ही थर्मामीटर डालकर देखना है कि मेरा मन कहाँ अटका हुआ है, गीता ये नहीं बताती कि तुम क्या करो और क्या छोड़ो। ऐसा करने से अज्ञानी हो या ऐसा छोड़ने से ज्ञानी, पर अपनी **Inquiry** करते रहो कि मेरे अंदर कौन से संकल्प–विकल्प चलते हैं। आत्मा बिल्कुल अंदर बाहर से आज़ाद होना चाहती है, जैसे एक कंकड आँख में परेशानी करता है, ऐसे ही सूक्ष्म इच्छा या मोह –आसक्ति आनन्द में रूकावट है।

व्यावहारिक वृत्ति को **Totally** छोड़कर ब्रह्मांकार वृत्ति से रहना है, सभी ब्रह्मज्ञानियों से व्यवहार छूट गया पर छोड़ा नहीं है। दूसरा देखना भी उसको मुसीबत लगता है। पलक झपकाना भी मुसीबत लगता है, हाथ पैर कट गये हैं, मस्तक अमर हो गया, पेट भेंट हो गया। सकाम कार्यों से ऐसी बास आयी जो अपने से कुछ होता ही नहीं, मुर्दा हो गया। निष्काम करते–करते सकाम अपने आप छूट गया। जिज्ञासू रास्ते पर जहाँ भी अटक जाता है, गुरू फिर उसको वहाँ से ऊपर चढ़ाता है कि रास्ते में क्यूँ अटक गये? अटकना तुम्हारे ऊपर शोभा नहीं देता। कोयले की दलाली से अच्छा है कि उस समय हीरे की दलाली करें। सकामी कर्मों से अच्छा है किसी एक दुःखी दिल को राहत पहुँचाना, ये काम अच्छा है। ये बैठकर

अंदर से रिहर्सल करो कि नौकरी या धंधा ना हों तो घर वाले क्या करें, खाना भी देंगे या नहीं, इज़्ज़त से। अपमान करेंगे, सारी दुनिया बेइज़्ज़ती करेगी, समझाने आएगी। पाई भी जेब में न हो तो क्या करेंगे? दादा जी ने घर में बोल दिया था कि खाना भी मेरे लिए मत रखना, कपड़े भी पुराने हो गये तो नये नहीं बनवाए। भगवान समझकर अगर कोई भोग लगाता था तो निराहारी होकर भोग लगाता था। मुझे दुनिया से कुछ नहीं चाहिए न अपने लिए, न अपने वालों के लिए। वो माया रहित हैं। गुरू चौबीस घण्टे खाली है, तभी भक्तों की पुकार पहुँचती है और उसका पूरा इलाज कर सकता है। अगर गुरू अहंकार करता तो तुम सब ना बनते। □

पत्र गीता भगवान का -18

मन मोड़ने में होशियार हो जाओ, हरिजन हारा भला, जगत जीता भला। भले ही सारे हमसे जीत जायें, हम हारे ही अच्छे हैं।

"हारिए तो हरिजन मिले, जीते तो जम जाय।"

दादा जी कहते थे मैं सबसे छोटा भाई था, सब बड़े भाई मुझे हुकुम में चलाते थे, मुझे बेवकूफ और अपने को सयाणा समझते थे, मैं दुःखी होता था मुझे सबके **Under** में चलना पड़ता है, पर गुरू मिलने के बाद गुरू के आगे मरने में कोई तकलीफ नहीं हुई। ऐसा कोई सामने हो जो Opposite चले, तो मुझे पता चलेगा कि मुझे क्या असर हो रहा है, जब कोई असर नहीं होगा तभी पक होगी कि मैं अब आत्मा हूँ। भगवान आके सभी रूपों में परीक्षा लेता है कि मैं कहाँ निकलती है? मन जिन्दा है या मुर्दा? जो हमें प्यार करता है, सराहता है उसमें तो भगवान नज़र आता है पर जो मन की मर्ज़ी के खिलाफ चलता है उसको भगवान समझें तब हमारी जीत है। भले ही दूसरे खायें, पहने हम देखकर खुश हों, मैं मरूँ पर दूसरे को खुशियाँ मिले,वो खुशी से जीए। आत्मा में Inferiority आयी है क्या? तू सबसे उत्तम अपने आप को समझ। मेरा भगत कभी भी गिरने वाला या नाश होने वाला नहीं है। तेरा सारा हक मेरे ऊपर है, मैं ही सारा

तुम्हारा हूँ, तुम खसीस कॉपी और किताबों में क्यों उलझते हो? राजा के बेटे का पूरा हक़ राजाई में है। तेरा हक़ मेरे ऊपर व मेरे ज्ञान के ऊपर है। मेरा सारा ज्ञान तेरा है, तुम अपने को अति भाग्यवान समझो। मन को कभी नहीं जलाओ, न चलाओ। हर बात में भलाई ढूँढ़ों।भगवान ने तुम्हारे लिए अच्छा ही सोचा होगा। तुम्हारे **Competition** में दूसरा कोई भी नहीं आ सकता क्योंकि दूसरा कोई है ही नहीं। सारा संसार तेरा ही रूप है।

"शिकायत न कर तू , न कर तू पुकार,
सदा ही शुक्र कर, शुक्र में गुज़ार"

आज ये भजन गाया था, तुमने सुना होगा।□

पत्र गीता भगवान का -19

अंत बेले में जिसे भगवान याद आता है वह मुक्त है। Neither seek nor avoid, take what comes.

भगवान को न बोलो, तो ये क्या किया, सब अच्छा किया। तुम्हारी मर्ज़ी और मेरी मर्ज़ी एक है खेल में बिल्कुल इंसाफ है।

Are we really great for the good already received? जो कुछ है उसके लिए शुक्र गुज़ारी है?

Truth distroy mortality & brings to high immortality. सच मौत का नाश करता है और अमरता को ले आता है।□

पत्र गीता भगवान का -20

बस हुकुम के अन्दर हर कोई बाहर हुकुम न कोय। वाग धणीं तुहिंजे वस आ (भगवान डोरी तुम्हारे हाथ में है) हलांइ त हली वञां बीहारीं त बस (चलाते हो तो चलता हूँ खड़ा करते हो तो भी ठीक है) "आउं का पाणं विहीणी" (मैं खुद क्या कर सकती हूँ।) जैसे–जैसे परमात्मा का हुकुम है ऐसे चल रहे हैं। हर एक हालत में राज़ी रहने के सिवाय दूसरा कोई उपाय नहीं है। तुम भी हमेशा आनन्द में रहो। जो परमात्मा तुम्हारे शरीर से करवाये वह करो। किसी भी बात में उलझन या नाराज़गी क्यों होती है जरूर कोई इच्छा है कि ऐसा हो पर वैसा न हो पर हमारी मर्ज़ी और भगवान की मर्ज़ी एक होनी चाहिए। तुम अपने काम चिन्तायें फिक्र सब परमात्मा पर उतार कर रखो। वह सबका भला करता है तुम्हारा भी भला करेगा। तुम्हारे साथ तो खास भलाई हुई जो तुम्हें अच्छा शौक लगा है। जैसे–जैसे बड़ी उम्र होती जाती है वैसे–वैसे माया में सब गर्क होते जाते हैं (डूबते जाते हैं) पर समझदार तो वह है जो जल्दी ही इन दुखों और चिन्ताओं से खाली होकर सब भगवान पर उतार कर रखता है। तुम कभी भी अपने को अकेला नहीं समझो। भगवान तुम्हारे साथ ही है जो तुम्हारी हर वक्त मदद कर रहा है। खुश वह इंसान है जो आज को अपना समझता

है। खुश वह है जो अपने को दिल में सलामत समझता है। जिन्दगी में जिस शख्स (व्यक्ति) ने आज को सफल बनाया है वह कल के आने में कोई खतरा नहीं समझता है। आज हम खुश हैं पर बेवकूफी करके कल की चिन्ता करके बैठकर अपने को दुःखी समझते हैं। मन का धर्म है डर और चिन्तायें देना। मन का काम है डराना कहीं ऐसा न हो जाय, कहीं वैसा न हो जाय। नाउम्मीदी के बदले उम्मीद अच्छी रखो, संकल्प अच्छा रखो, मायूसी निकाल फेंको। मन को बदलकर अच्छी बात में रखो कि भगवान ने मेरे लिए सब कुछ अच्छा बना दिया है, मेरे लिए कोई भी खराब बात नहीं होगी, तुम करो भला हम भलो न जानें। भगवान में हमारा विश्वास नहीं है इसलिए कोई भी चिन्ता होती है। सब में परमात्मा देखकर सबसे प्यार करना चाहिए। निराश नहीं होना चाहिए। निराश होना माना नास्तिक होना। यदि हम अपनी हालत में खुश नहीं रह सकते हैं, सुखी नहीं रह सकते हैं तो भले ही तीनों लोकों का राज्य मिले तो भी हम खुश नहीं रह सकते। यदि तराजू में खोट (काण) है तो तौल कैसे पूरी होगी? हमारे में जब तक अज्ञान है तब तक कभी भी सुखी हो ही नहीं सकेंगे। बिना आतम ज्ञान ममत न मिटे मन की। चाहे सैकड़ों साधन करे चाहे पढ़े वेद पुरान। ममता माना मेरा–मेरा। जिसको हम अपना समझते हैं उसमें मोह है

और उसके ही ख्याल सताते हैं पर सच में तो यहाँ कोई किसी का नहीं है। जगत बना ही नहीं है। सब है खेल, नाटक उस नाटक में आकर भूले हो। नाटक माना न टिकने वाला, उसे सच समझ कर बैठे हो। कभी सुखी कभी दुखी। पर हमें हर हालत में मुस्कुराना चाहिए। 'वाह गुरू' हमेशा दिल में हो कि जो भी करें सो वाह वाह। मैं हर हालत में राज़ी हूँ। यदि हमारा ख्याल हमें न गिराये तो दुनिया में कोई ऐसी हालत नहीं है जो हमें उलझा सके। अपने सिवाय बाहर का आनन्द नहीं है। हमारा मन जब स्थिर हो जाये तो एक दम आत्मसाक्षात्कार हो जाय। देर है केवल अभ्यास की। जब तक इस देह में अटके पड़े हो तब तक जगत के दुख सुख भासते रहेंगे। आत्मां का निश्चय करने से दुख सुख सब गुम हो जायेंगे। □

पत्र गीता भगवान का -21

तुम ज्ञान से इतनी प्रीत करो जितनी पति, बेटे, धन व शरीर से की है उससे भी ज्यादा। ज्ञान जीवन है गुरू आकर सच्चा जीवन देता है। हमारे पास कुछ भी नहीं है जो भेंट दें। केवल श्रद्धा प्रेम ही भेंट देने के लिए है। चाहे सौ सिर कुर्बान करें पर गुरू के प्रेम की रत्ती भर भी भरपाई नहीं कर सकते हैं। गुरू किसी से प्यार तो छोड़ो निगाह उठाकर देखे तो वो खूब मालामाल हो जाता है। उस की एक करूणा भरी नजर ही काफी है उसका एक अक्षर ही काफी है हमारा जीवन बदलने के लिए। उसका एक स्पर्श ही काफी है हमारा दुःख दूर करने के लिए, ज्यादा क्या करेंगे? लोभी, लालची मत बनो। तुमसे जो मेहनत हुयी है वह बहुत ही ज्यादा हुई है। इन्द्रा दिलीप कुमार पूने में गुरू–शिष्य रहते हैं। इन्द्रा देवी ने किताब में लिखा है अपना अनुभव कि जिस पर गुरू ज्यादा नज़र रखता है उसको थोड़ी कमी पड़ती है, तो वह शिकायत करता है। गुरू के इकलौते सदैव रूठते मानते रहते हैं पर गुरू जिसे थोड़ा प्यार करता है वह शुक्राना मानते हैं कि शुकर है इतना भी तो किया। हम तो नालायक इस काबिलक भी नहीं थे, उस की जूती के लायक भी नहीं थे, जो मिनट–मिनट में शुक्राना मानता है उसे ही गुरू की कदर होती है।

यह ज्ञान है समुद्र से सूई ढूँढ़ने जैसा, इतना सूक्ष्म हो जाओ जो जाके सुई ढूँढ़ कर ले आओ। इतना कठिन है "हौ मैं" को मिटाना। एक तरफ मैं को मिटाएगा तो दूसरी तरफ जीभ जरूर निकल आएगी इस मन को हजारों लाखों शीश हैं। इस मन को, श्रद्धा वाला, गुरू के चरणों में अर्पण कर गुरू वाक्यम् सत्यम् कर सकता है। श्रद्धा वाले फल पा जाते हैं। आवरण, अज्ञान का जो परदा है, गुरू के ज्ञान से एकदम दूर हो जाता है। पर विक्षेप या थोड़ी सी भूल तो होगी पानी पर लकीर की तरह। तुम हिल सकता है पर डूब कभी नहीं सकता है। क्योंकि जिसने एक बार गुरू को डोरी सौंप दी है सो वो कदाचित् नहीं डूब सकता है। बल्कि हिलने से भी अनुभव मिलेगा कि मन क्या है माया क्या है? डूबेगा तो पक्की तरह से हाथ पकड़ेगा नहीं अहंकार आ जाएगा। सावधानी की सीढ़ी है। मन को फिर–फिर समझा के गुरू के आगे फेंको। अपने आप ठीक हो जाएगा। मन है मस्त हाथी की तरह, गुरू के वचनों रूपी कील लगाओ तो एकाग्र हो जाएगा। दो ख्यालों के बीच में नहीं रहो। Minded नहीं पर एक ख्याल का निश्चय रखो गुरू कहेगा मरो तो मरेंगे कहेगा जिओ तो जियेंगे। उसका ख्याल मेरे से जुदा नहीं है। मूर्ख वो है जो गुरू के कहने पर त्याग करके फिर पछताता है कि नाहक खोया। अंत में एक पाई भी न बचे तथा चांडाल के घर से मांग कर खना पड़े तो भी गुरू को

Wrong मत समझना। प्रीत न कम करना उसने तुम्हारी जबरदस्त भलाई की है। लाखों नुकसान हो जाये तो भी परवाह नहीं है। मान कराए, अपमान कराए, राज कराएं या भीख मंगाए तो भी मैं एक ही बात समझूँ ये भजन केवल गाने के लिए नहीं है पर सच में 20 आना व्यवहार में लाना है। अन्दर ही गुम हो जाओ फिर न उठो। इतनी नम्रता करो जो गर्दन न उठा सको। इस अहंकार को पहचानो, मन अंत तक अपना बनाने की कोशिश करेगा। □

पत्र गीता भगवान का -22

प्रेम माना किसी के लिए भी नफरत का भाव न हो बाकी प्रेम यह नहीं कि किसी को जाके झप्पी लगाना। किसी को भी खराब या बुरा देखा इसका मतलब अपने को अच्छा समझा। बाहर से दूसरों को खराब समझते हो अंदर में अपनी प्रशंसा करते हो। अपने से चाहे गुरू से धोखा करते हो, झूठे हो। जहाँ–तहाँ आत्मा नहीं देखते हो। अपने को तथा गुरू को भी देह समझते हो, ना ही कुछ गया है, न ही कुछ मिला है पर बीच में भूल हो गयी है उसी भूल में अनर्थ व गलतफहमियाँ, धिक्कार व शिकायतें होती हैं। दूसरा कोई पाप नहीं आत्मघात के सिवाय। गुरू के पास Guarranted ज्ञान है, कोई भी शक नहीं है। तुम कैसे भी बीमार आओ, गुरू कभी भी जवाब नहीं देगा कि मैं तेरी बीमारी नहीं उतार सकता हूँ। जैसे डाक्टर जवाब देते हैं कि कैंसर की बीमारी छूटने वाली नहीं है पर गुरू कभी भी आशा नहीं उतारता है क्योंकि यह दवा अन्दर की है। ''सर्व रोग का औषध नाम'' सो भी तेरे हाथ में है। अपनी कृपा चाहिए। ब्रह्मज्ञानी के लिए बाहर की हालत नहीं अन्दर का निश्चय चाहिए। गुरू को कोई निश्चय वाला ही जान सकता है न कि देहधारी। कल कोलाबा में सुन्दरी के पास गये वहाँ जब जगह की कमी हुई, कितनी ही साहूकार औरतें आयी थी। तो दादा भगवान स्वंय

सोफे से उठकर जमीन पर बैठ गये। उनको सोफा पर बैठने को कहा। सब हैरान हो गया। साहूकारों का तो अभिमान ही चूर हो गया। बोला हमने ऐसा निर्मान गुरू कहीं नहीं देखा है। गुरू सबके साथ नम्रता से चलके नम्रता का गुण सिखाता है। हमारे लिए आदर्श है कि हम भी नम्रता सीखें। हम अभिमानी को इज्जत देकर उसका अभिमान तोड़ते हैं। वे सब शर्म में डूब गयीं। गर्दन ही नीचे झुक गई। इतनी तो गालियाँ दी कि साहूकारों को सात जनम में भी ज्ञान नहीं लग सकता है। दान करतो हो पर खुद ही खुटैले हो, लाखों के हीरे और साड़ियाँ पहन कर दिखाने आते हो पर हो कंगाल। बस फिर तो कईयों को क्रोध आ गया, कितनों ने अनुभव किया कि बात सही है मतलब कल का दृश्य देखने वाला था। अंत तक दादा जी नीचे बिना किसी टेक के सहारे थे। बैठ के 6 घण्टे वाणी चलाई। आत्मा में टिकने से हमेशा के लिए मौज आ जाती है। खाली मटका छलकता है भरा हुआ शाँत रहता है। शरीर सहित जगत का मौत नहीं किया है। शरीर सहित अपने को ब्रह्म समझ बैठे हो यही भूल है।

कोई भी तुम से प्यार करे तो पहले देखो वो "मैं" में टिका है या मैं तू में है। यदि मैं तू में टिका है तो वह सत्य नही बोलेगा– उस पर तुम विश्वास करेगा। सच्चा केवल गुरू ही हो सकता है। दूसरा कोई भी नहीं सब मन बुद्धि शरीर में फँसे हुए हैं। सो वो वहीं से बात करेंगे।

केवल गुरू ही अद्वैत आत्मा में टिका, सर्वत्र आत्मा, अपना आप देखने वाला पक्षपात रहित है। उसकी बात पक्की Stamp लगी हुई है जिसको रत्ती मात्र भी देह अध्यास याद है या शरीर की मैं में जिसका मन जीवित है वह कभी भी Right नहीं हो सकता है।

Disease बे आराम, मतलब मत–तलब माना लोभ नहीं करो Ramatirth- Rama truth स्वामी– So am I. ज्ञानी का एक पल आनन्द में और तुम्हारा चिंताओं व ख्यालों में गुजरता है वो क्यों? दोनों में कौन सा अन्तर है? उसको जीने की कला है। जहाँ भी है जैसी भी हालत में है हालत उसको सताती नहीं है। विक्षेपता में भी एकता में है, उसकी बाहर की हालत अच्छी है। साहूकार हैं, पैसा, घर, इज्जत आबरू सब है इस कारण वह सुखी है क्या? उसका आधार अपनी आत्मा पर है न कि दूसरे पर। दूसरे जाके डूबें हमें अपने को तारना है। अपनी भूल ढूँढ़कर निकालनी है। व्यवहार को थोड़ा सा समय देकर फिर सत्संग शुरू करो। एक मिनट भी बैठकर नाम रूप की बात मत करो। एक दूसरे को आत्मा में टिकाओ एक दूसरे के सच्चे दोस्त बनो। मित्रता, मैत्री, करूणा, मुदिता करके सबके न्यारे हो जाओ। किसी के भी मोह लिहाज़ में नहीं आओ। सब को सच बताओ फिर सबको भुला के अपनी आत्मा में टिको। दूसरा है ही नहीं।□

पत्र गीता भगवान का -23

तुम सबको ज्ञान सुना के इस कार्य में लगा दो तो अपने आप उन्नति करता जाएगा। गिरेगा ठोकर खाएगा फिर स्वंय चढ़ भी जाएगा। तरह तरह के अनुभव मिलेंगे नहीं तो गोबर गणेश ही रह जाएगा। कोई भी दुःख आता है तो उसमें दुःखी हो तो इसका मतलब है कि सुमिरन सच्चा नहीं किया है। क्योंकि "प्रभु के सुमिरन दुःख न संतापे" की स्थिति नहीं हुई है। सुमिरन माना अपने को जानना। तुम दूसरों को जाने में लग गये हो। केवल अपने आप को पहचानना भूल गये हो दूसरा ऐसा क्यों चलता है, दूसरा कहाँ खड़ा है। ये चढ़ा हुआ है ये गिरा हुआ है। दूसरे को गुरू ज्यादा प्यार करता है, दूसरा प्यारा अधिक है मैं कम हूँ। मतलब तो सभी द्वैतवादी हैं पर अद्वैत और समता योग पक्का इलाज है। जैसे आकाश में नीलापन अपना ख्याल है ऐसे ही तेरी नजर का धोखा है द्वैत। दूसरा देखे दूसरे का बेटा। ज्ञान सरल है या कठिन है पर है एक ही बात कि जहाँ तहाँ अपना आप देखो। तुम भले देह भाव में बातें करो पर गुरू आत्मा में टिका है तो वहीं से ही जवाब देगा। जब तक तुम आत्मा में नहीं टिके हो तब तक गुरू से किसी बात में नहीं बन सकोगे। जब तक देह की बुद्धि है तब तक गुरू से अन्त तक लड़ाई रहेगी। पानी एक जगह स्थिर रख दो तो मिट्टी अपने आप

गहराई में चली जाएगी। ऐसे तुम भी सोचना विचारना बंद करो तो विकार द्वैत सहित अपने आप खत्म हो जायेंगे, सोचने पर गड़बड़ में पड़ जाओगे। Tension not, कोई भी बोझा अपने सिर पर ख्यालों का मत रखो। जो भी हो रहा है ठीक ही हो रहा है। 16 आना नहीं पर 20 आना विश्वास होना चाहिए न टूटने वाला। कभी भी अपने दिल को मैला मत करो। जो गुरू गाली नहीं दे सकता वह गाय को घास खिलाकर उससे दूध ले जाता है मतलब मीठी वाणी चलाकर तुम्हारा धन ले जाता है। तुम गालियों के बिना उन्नति नहीं कर सकते। मन रावण को जितनी भी मार पड़े कम है। तैयार होकर बैठो गुरू गाली तेरी असर नहीं करती है देह अभिमान छोड़ो तो ये गाली भी फूल लगेगी। दुश्मन की दुआ डराती है, साजन की गालियां भी सुहाती हैं। गालियों में श्री कृष्ण की मुरली सुनायी पड़ती है। गुरू को नहीं समझाओ कि गुरू मेरे को प्यार से समझाओ। अकेले कमरे में गाली दो पर हर हालत के लिए तैयार बैठो। उसको गुरू गाली नहीं देता है कहता है इसको क्यों आजमाऊँ जो तैयार नहीं है उसको गुरु पक्का करता है। पर गुरू की हर बात में रहमत है। यदि ऐसा समझा तो तो किसी बात के लिए शिकवा शिकायत नहीं रहेगा। मन भले अपनी कहे पर तुम आत्मा की बात सुनाते जाओ। जब तक गुरू आकर विवेक नहीं खोलता है तब तक परदे चढ़ते जाते हैं जीत भाव के, माया के। मेरे

आत्मा इतनी सूक्ष्म है कि जो मन बुद्धि से वाणी से परे है। ये भी मेरे को नहीं जान सकते पर एक विश्वासी जीत जाता है।

सतगुरू न केवल सामने पर कितना दूर भी हो, तुम्हारी नाव को बचाता है, डूबने नहीं देता है। भगवान कोई एक ही शरीर में नहीं है। वह करोड़ों भुजाओं वाला है जिससे वह हमारी सारी संभाल करता है। तुम बिना स्वामी के नहीं हो तुम्हारे सिर के ऊपर प्रभु की मेहर का हाथ है। वह डोरी ढ़ीली छोड़ कर बैठा है। भले घूमो फिरो जब डोरी खींचनी होगी खींच लेगा। जिसने सच्चे दिल से गुरू की शरण ली है वह करोड़ों मील दूरी से भी अपनी सहायता देकर उसे शक्ति देता है, तुम सींग का कनेक्शन सागर से मत तोड़ो तो तुम्हें कोई भी छू नहीं सकता है "प्रभु के सेवक को कोऊ न पहुँचे" दाता तुम्हारा दिल देखता है तुम्हारे दिल में उसका डेरा है जो दोस्त है। दोस्त को दिल में इतनी मजबूती से बिठाओ कि कोई लाख कोशिश करे तो भी निकाल न सके। पक्का निश्चय रखो कि भगवान मेरा है बल्कि मैं भगवान का हूँ। मैं उसका हूँ तो वह भी निश्चित रूप से मेरा है। मैं और वो एक हैं यह निश्चय तुमको करना है। अब से ही हम समझें कि भगवान मेरे अंग संग है, है ही है। तो हर पल हर दम याद है यदि दूर है तो नज़दीक आएगा तो उसके कर्म दिखायी देंगे। इससे प्यार किया मेरे से बात नहीं किया

मेरे को ऐसा क्यों कहा। उसके घर रहा मेरे घर क्यों नहीं रहा, खाना नहीं खाया। मैंने पहले ही समझाा कि मेरे से प्यार कम है। जब कर्म देखना बन्द करो तो गुरू को बुलाना, नहीं तो व्यर्थ ही मेरा और अपना समय बर्बाद नहीं करो। कर्तापने के जहरीले साँप से छूटो, हमें भी छुटाओ। जिनको इस राह में देर लगती है उन्होंने अपने को नहीं जाँचा है। अपना ego नहीं गँवाया है। सयाणे होकर अपने को, दूसरों को व गुरू को जाँचा है।

"आखियूँ दिसन परखें, पाहिजों दिसन न मुख
बिना दिठे पाहिंजे कद्रहि न मिलन्दो सुख।" □

पत्र गीता भगवान का -24

यहाँ रोज इस बात पर जोर दिया जाता है कि आज ही निश्चय करो कल पर भरोसा (एतबार) नहीं है। कल नाम है काल का। आज ही हर बात का निश्चय होगा तो कैसी भी मुसीबत आएगी तो मुस्कुरायेंगे। (खुश रहेंगे) नहीं तो अचानक कोई भी परीक्षा आएगी तो हिल जायेंगे। (डोलायमान हो जायेंगे) दादा रोज राजा का उदाहरण देकर सबको पक्का करता है।

कल रमण महर्षि की किताब में पढ़ा कि मन कैसे वश में आएगा? जवाब दिया किसी Supreme Power वाले के सामने केवल जाकर बैठो तो उसके आगे मन की मजाल नहीं कि उठकर खड़ा हो सके मतलब ये है कि पूरे गुरू के संग के सिवाय दूसरा कोई भी साधन नहीं है जिससे मन वश हो और आत्मा का अनुभव हो और लिखा है कि आत्म अनुभव गुरू की कृपा के सिवाय नहीं होगा। इस पर दादा जी ने सत्संग किया कि मैं समझता हूँ कि गुरू कृपा तो सब पर समान है पर अपनी कृपा जब कोई अपने पर करेगा तो उस पर गुरू की कृपा पहुँचेगी। है ही अपनी कृपा पहले बीच में चाहे अन्त में। अपनी कृपा ही काम आएगी। रमण महर्षि ने कोई भी शिष्य ऐसा नहीं बनाया है जो आप समान हो उसके जैसा। यही बड़े में बड़ी करामत है गुरू की जो आपसमान बनाता है। कितने भी गुरू अवतार आये हैं

पर आज के अवतार जैसा कोई भी अवतार पहले नहीं आया है, जो दर–दर पर जाये। गुरू खुद खड्ढे में, भंवर में गिरे हुए को निकालता है फिर उसके मन की गालियाँ और दुनिया के कलंक उठाकर भी अगले की मुक्ति करता है। सब गुरू घर बैठकर अपने सुख लेते हैं। पर किसी भी गुरू का आराम हमारे गुरू की तरह फिटा हुआ नहीं है (आराम हराम नहीं हुआ है) जब तक गुरू हमें याद नहीं करता, हम उसकी नज़र में नहीं
है, तब तक हमारे भीतर प्रेम और ज्ञान उत्पन्न नहीं होगा।□

पत्र गीता भगवान का -25

सत्संग रोज होना चाहिए। मेरे भगत कोने–कोने में बैठे हैं उन्हें मेरा संदेश पूरी तरह दो। निष्कामी हर वक्त तैयार रहता है कि जिस समय भी किसी को जरूरत हो मैं सेवा करूँ। वह तन, मन, धन सर्व के लिए कुर्बान करता है। आप जपै औरा नाम जपावे। हे अर्जुन जो मेरा ज्ञान मेरे भगतों में बाँटता है वह मुझे परम प्यारा है तुम्हारे मुख से मैं भगवान बोलता हूँ। जैसे डाक्टर हमेशा तैयार रहता है कि मरीज का फोन आये तो वह एक दम जाएगा। वह तो पैसे लेता है पर गुरू बिना पैसे लिए निष्काम होकर सबकी सेवा करता है इसलिए सबको असर होता है। और सभी काम मनोरंजन करके समझने चाहिए पर सबसे पहला काम सत्संग। रोज किसी की दिल को हिम्मत और शक्ति देने के सिवाय जो खाना खाता है वह ज़हर है। तुम देवताओं को राजी करो वे तुम्हें राजी करें। सब देवता हैं। यह ज्ञान यज्ञ ही श्रेष्ठ है। तुम्हें भगवान ने चुनकर लिया है। आप समान हो जाओ, गुरू के समान कार्य करो। हमारा मन कितना भी दुनिया से जीतकर आएगा पर गुरू के पास दाल नहीं गलेगी। गुरू के पास ही मन की हार होती है इसलिए मन बेचे सतगुरू के पास, तिस सेवक के कारज रास। गुरू से प्रेम सच्चा तब होगा जब गुरू की महिमा जानोगे

कि वह क्या है। गुरू भगवान कैसे हैं उसे ज्यों का त्यों जाने तो उसी समय खुद भगवान हो जाये। जो गुरू से मेल खायेगा वह ही भगवान निराकार से मेल खाएगा।

गुरू की प्रेम की भी हद नहीं है और रहम की भी हद नहीं है। त्याग अहंकार का करना है न कि घर–बार या पदार्थ का। अपने को भगत समझना अहंकार है जो देह में है। अपने को भगवान समझना निरअहंकार है भगत देह में है भगवान अद्वैत में है।

भगवान नाराज उनसे होता है जिनकी इच्छायें पूरी करता है। राजी उनसे है जिसके मन के खिलाफ चलता है।

देह से रहित होने के सिवाय संकल्प विकल्प नाश नहीं होंगे। शरीर से फारकती (अलगाव) करने के सिवाय और सब झूठ है। बातें कितनी भी करो पर आत्मा का निश्चय करने के सिवाय कोई चारा नहीं है। ज्ञान अज्ञान शब्द से ऊपर आत्मा हो जाओ। □

और सुख आनन्द

तुम्हारी गीता

पत्र गीता भगवान का -26

सारी सृष्टि भगवान की मेम्बर है। उसे खुद चिन्ता है तुम्हें खिलाएगा। तुम कब यह कसम उठाओगे कि घड़ी इक विसरू राम कूं? तुम कब मौन करोगे। न तो सृष्टि को Observe किया है न खुद को किया है। प्रकृति तुम्हें बैठने नहीं देगी। एक कहता है मेरे से निराकार करवाता है दूसरा कहता है मैं करूँगा, मुझे करना है। वह निरअहंकारी है दूसरा अहंकारी है। ज्ञानी और अज्ञानी के कर्म में भेद नहीं है। जो देह में फंसा हुआ है वह बीमार है। अज्ञान बड़े में बड़ी बीमारी है उससे बचने का उपाय करो।

जैसे रात का सपना गुजर गया ऐसे Life पूरा सपना है। बाप कभी बेटे के लिए खराब सोचता है ? ऐसे ही भगवान तुम्हारे लिए खराब सोचेगा?

जो कर्ता है उससे भूल होगी और पछताएगा, माफी मांगेगा बाकी जो देखता ही भगवान है वह कौन सी भूल करेगा?

जब कोई भोगता है तो खट्टा होता है और उसे वैराग्य आता है। किसी से भी अधिक सेवा नहीं लो यह पाप है। जाकर सबका उद्धार करो इसी काम में लग जाओ। आओ तो कुछ समझकर जाओ। घर में रहते हो तो वैराग्य में रहते हो? कि क्या माँगू कुछ स्थिर नाहीं ?

यह बात निश्चय करो कि तुम शरीर हो या आत्मा

हो। यदि शरीर हो तो मैं वैराग्य दिलाऊँ कि इच्छा मात्रम् अविद्या। जहाँ–जहाँ बैठे हो घट–घट वासी देखो। 33 करोड़ देवता हैं उन्हें राजी करके, यज्ञ करके फिर खाओ। एक पण्डित गया राजा के पास कि आओ तो भागवत सुनाऊँ। राजा ने कहा तुमने ही नहीं पढ़ा है तो मुझे क्या सुनाओगे। पण्डित भागवत लेकर जाकर जंगल में बैठ गया वहां इतना तत्पर हो गया कि घर बार सब भूल गया। पत्नी गयी राजा के साथ पूछा तो देखा वह बिल्कुल गुम है (राजा के साथ देखने गयी) आखिर राजा ने कहा कि अब तुम बिल्कुल मुक्त हो अब चलकर हमारा उद्धार करो। जैसे पिता से धन मिलता है वैसे गुरू से ज्ञान मिलता है। तुम समझते हो कि हमें गुरू की जरूरत है पर गुरू को हमारी जरूरत नहीं है पर यदि लकड़ी नहीं होगी तो कारीगर क्या करेगा? यह निश्चय है पक्का कि हम प्रीतम के (गुरू) हमारा है।

किसी ने प्रश्न पूछा कि अर्जुन ने भी थोड़े समय के लिए नर्क देखा सो ही जब तक अर्जुन–अर्जुन है तब तक नर्क है तुम भी जब तक देह में हो तक तक नर्क में हो। गुरू की मेहनत आबाद करनी है या बर्बाद? इसलिए गुरू को शरीर नहीं आत्मा समझो।

अस्पताल में जाकर देखो हर एक रूप में भगवान है। आज मैंने तुम्हें बहुत याद किया है मैं कौन? शरीर? सब में ईश्वर देखो। मीरा साँप और जहर के प्याले में

भगवान नहीं देखती तो मर जाती।

कृष्ण ने कहा है कोई मेरा भगत हैं और कोई मेरा स्वरूप है। तुम्हें कौन सी बात पसंद है। एक आत्मा के निश्चय से सब बात जान जाओगे। गुरू को भी आकर बताओ कि जो तुम हो सो मैं हूँ। गुरू इसी से खुश होगा। पूछते हैं कि शरीर नहीं है तो सेवा कौन करता है क्यों करता है? सो ही ममता है जिसके कारण तुम पूछ रहे हो। कोई भी करने वाला नहीं है। दादू सोम्या दास की अपना नाम न लेय। करूणां भले करो पर दया नहीं करो। भगवान ने किसी का भी नरम और सख्त हृदय नहीं बनाया है पर भगवान के राज को न समझने के कारण दुःखी सुखी होते हो। इस राज को समझना है। खराब विकल्प नहीं करो। ज्ञानी तो सदा ही जुगा जुग अमर आत्मा है। तुम नाव में चढ़ते हो तो ऐसा कहते हो क्या कि कहीं डूब न जाये। ऐसा ही हमेशा अच्छा संकल्प करो। जैसे बाजार से अच्छे से अच्छा आम लेकर आयेंगे या फुल्ली वाला। ऐसे हमेशा अच्छा संकल्प करो। नाव में चढ़ते हैं मौज लेने के लिए न कि डुबने के लिए। हर एक बात से यह भलाई देखते हैं कि दुनिया के लोग दुःख–सुख में तड़पते हैं और ज्ञानी कैसे मुक्त हुआ बैठा है। हम यही सीखते हैं तिल जितना भी विकल्प किया तो तुम हमारे दुश्मन हो। राम राज्य में कभी भी खराब विकल्प नहीं करो। ज्ञानी की सीन सब सिखाती है कि पहले Fun और Feast में सब गंवाया है। अब जल्दी ही मुक्त होने का अनुभव करो।□

पत्र गीता भगवान का -27

अपनी भूल का पता लग जाए तो अभूल हो जायेंगे, दूसरे की भूल पर नजर होगी तो अन्दर की बत्ती बुझ जाएगी। पर जिसने अपने आप को जाना उसमें से भूलें निकल जायेंगी। भूल करके ही अभूल होंगे। गिरने के सिवाय कोई घोड़े पर सवार नहीं बनेगा। गिरकर थक जाना फिर नहीं चढ़ना ही मनुष्य की कमजोरी है। Try again तो एक दिन पार हो जाओगे। पक्षिओं के बच्चे समुन्द्र लेकर गया पक्षी को गुस्सा आया, बोला मैं समुन्द्र को सुखाऊँगा। एक बूँद समुन्द्र से निकालकर एक कण रेत का डालने लगा तो गरूण पक्षी समेत सभी पक्षियों ने आकर उसकी मदद की। सागर का वरूण देवता डर गया उसकी हिम्मत देखकर एक दम बच्चे लौटा दिए। हिम्मते मरदां तो मददे खुदा। बन्दा बेहिम्मत तो खुदा बेज़ार। What can not man do? मनुष्य क्या नहीं कर सकता है। जो कहता है मैं ऐसा नहीं कर सकता हूँ मैं तो मन को नहीं मार सकता, मैं कैसे मुक्त होऊँगा मैं तो कमजोर हूँ मेरे से फलाना काम कैसे हो सकेगा, वह कुछ भी नहीं कर सकेगा। वह गीदी कायर है वह तो जीते जी मरा पड़ा है। कमजोरी मौत है। भगवान मेरे साथ है तो मैं सबकुछ कर सकता हूँ वही करेगा पर मैं नहीं करूँगा। I will do or die हर कर्म में हर बात में पहले भगवान को रखो तुम पीछे हो

जाओ तो हर एक कर्म में सफलता मिलेगी। यदि आगे अपना **ego** रखा और पीछे भगवान तो सब काम में निष्फल होगे। भगवान अहंकार को खाता है। शरीर और मन भले ही कमजोर हो पर तुम्हारे अंदर बैठा भगवान तो कमजोर नहीं है? भगवान क्या नहीं कर सकता है? जब भी धक्का खाओ, कोई ठोकर लगे तो एकदम अपने को जांचों कि आत्म के सिवाय दूसरा तो नहीं देखा? ऐसे सुधार होता जाएगा। सावधानी की सीढ़ी है जागो पर भागो नहीं किसी भी हालत से डरो नहीं भगवान कोई भी खराबी नहीं करेगा।□

पत्र गीता भगवान का -28

आत्मा समझने से सब विकार डर एकदम हट जाते हैं। सब दुःख दर्दों की एक दवा है देह को भूलना कि मैं फलानी हूँ। मैं हूँ तो सब डर निराशा सब मन की बीमारियाँ बुरे ख्याल आते हैं पर भगवान देखने से जगत और जगत की भावनायें सब गुम हो जाती हैं विश्वास करामातों की करामात है। अविश्वासी गिरता है पर विश्वासी पहाड़ को बोले हट जा तो हट जाएगा। गुरू की एक–एक बात पर झुकने से मन मर जाता है। मन की क्या मजाल है कि जो विश्वासी को हिला सके अपने निश्चय से। शब्द मरे ता फल पावे और कैसी चतुराई। कितनी भी कोई होशियारी करेगा पर भगवान के इंसाफ से भाग नहीं सकेगा। कोई कहे कि मैं आत्महत्या करके शरीर से दुःखों से हट जाता हूँ वह बहुत बड़ी भूल करता है। जब तक देह अध्यास है तब तक जन्म–जन्म में दुःखी होगा। इसी जन्म में सभी कर्मों से सभी पापों से छूटे तभी मन की शान्ति पायेंगे। गुरू के ज्ञान के सिवाय दूसरा कोई भी तरीका नहीं कोई भी छूटने का चांस नहीं। पहले चाहे बाद में गुरू की आज्ञा में अपने को झुकाना है। गुरू के ख्याल और अपने ख्याल और भगवान के ख्याल एक करने हैं फिर चाहे कितनी भी तकलीफ हो। इस ज्ञान में पहले मन गुरू का भी दुश्मन होगा क्योंकि गुरू अहंकार और

अहम भाव की नस को दबाता है तो दर्द होगा। आप्रेशन करने के लिए हम तैयार होकर जाते हैं पर जब दर्द होता है तो डाक्टर को गालियाँ देते हैं मगर जब जख्म छूटता है तो डाक्टर को फ्रूट के टोकरे और फीस बड़ी खुशी से देते हैं। यह हालात है हर एक मनुष्य की। जो अपने पर कृपा करे वही गुरू का शब्द कमाएगा। □

पत्र गीता भगवान का -29

सच है जिन्होंने दादा जैसे अवतार को पहचाना, देखा वे सब धन्य–धन्य हो गये हैं। जोत हर एक के अन्दर जलायी है जो वह बुझने वाली नहीं है। जितनी दादा ने तुम्हारे ऊपर मेहर की उतनी लक्ष्मी ने भी की है। दादा के उगाये हुए बगीचे को बार–बार आकर वचनों रूपी बरसात करके हरा–भरा किया है। बगीचे को सूखने का मौका ही नहीं दिया है। अखण्ड पाठ की तरह दादा ने जहाँ पाठ छोड़ा वहाँ से लक्ष्मी भगवान ने पाठ शुरू किया बीच में बाल जितनी भी दरार नहीं डाली इसलिए दादा के बिछोड़े का एक सेकेण्ड भी किसी को ख्याल नहीं आया। जोत से इक जोत को सतगुरू ने पैदा कर दिया। दादा की जोत आज हर शहर में जल रही है। जिस–जिस ने जितना पहचाना उतना पाया। जो ओटे सो अर्जुन। निराकार साकार धार कर आया है जग में। आता ही है हमें साकार से निकालकर निराकार में टिकाने के लिए। गुरू के पास ही चाभी है विवेक विचार खोलने की गुरू को Observe करते–करते आप समान हो जायेंगे। गुरू से और अपने से फर्क (भेद) निकालकर एक हो जाओ। जो अपने से अपनी आत्मा से Fit है वह सारी सृष्टि से Fit है अद्वेत वाला कैसे भी द्वेत वाले से Fit हो जाएगा क्योंकि वहाँ भी अपना आप ही देखेगा। उसने द्वेत रूपी बिल्ली कुँए से निकाल दी है तुम भी तो

सबसे अच्छा चलते हो प्रेम से पर दूसरा यदि तुम्हारे साथ अच्छा नहीं चलता तो इसमें भी तुम्हारा ही दोष है तुम उसे भी बदल सकते हो अपने प्रेम से शुभ संकल्पों से। तुम भगवान हो तुम्हारे संकल्प से क्या नहीं हो सकता है। सारी सृष्टि तुम्हें झुकेगी क्योंकि सच की ही आखिर जय है पर पहले तुम्हें बालक की तरह निर्दोष होना पड़ेगा। पहले तुम्हें हर एक को झुकना पड़ेगा। चरण धूल तेरे जन की होवाँ। अपना आप मिटाना है, आप गंवाइ तां शहु पाइए। मरे हुओं को कौन मारेगा। विक्षेपता से भागकर नहीं छूटना है जहाँ मन ना मिले वहीं मिलना है। एक शहर में एक दैत्य था जो सबको बहुत सताता था। आखिर लोगों ने जाकर एक संत से पूछा कि क्या करें इस दैत्य को कैसे मारें? संत ने कहा कि दैत्य के प्राण हैं एक चिड़िया में, चिड़िया को मारोगे तो दैत्य मर जाएगा। लोगों ने जाकर चिड़िया को मारा तो दैत्य मर गया। सिद्धांत है कि मन ने सभी को दुःखी किया है दुःखी करके मारा है। गुरू से सलाह ली तो गुरू ने कहा मन का Connection वासनाओं से है जिस–जिस वासना में बसा हुआ है वह वासना निकालो मन मर जाए। जहाँ–जहाँ मन अटका हुआ है वहां–वहां से निकालकर अपनी आत्मा में रखो। किसी के भी आधार पर नहीं रखो। कृष्ण ने अर्जुन को कहा कि मोह में तुम्हारी बुद्धि उलझी हुई है, जब मोह से निकलेगी तो तभी सुने हुए और सुनने से बेपरवाह होगे, ज्ञान की जरूरत नहीं पड़ेगी □

पत्र गीता भगवान का -30

ये बेचारे हमारे पीछे ठन्डे हो जाते हैं। इनकी लगन में कोई अगन लगाने वाला होना चाहिए। इन्हें ठन्डी हवा बाहर की लगती है तो सो जाते हैं पर यहाँ तो बैठने की बात नहीं है पहाड़ की चोटी पर पहुँचने के बाद ही चैन की साँस लेते हैं। टापू पर उतरकर बैठने से धोखा ही खायेंगे। वृक्ष अपनी जड़ें पाताल तक पहुँचाकर फिर बैठकर ठन्डी छांव दूसरों को झूंगे में देता है। एक बार ऐसा पुरूषार्थ करें जो देह अध्यास पूरा नाश हो जाए। पूरन बन्धन रहित माया रहित होकर के रहें। जब तक जिओ तब तक सीखते रहो नहीं पर सीखकर फिर जिओ। हर बात के **Master** बनो। थोड़ी–थोड़ी शिक्षा लेकर अधूरे होकर नहीं रहो। कृष्ण ने अर्जुन को कहा मेरा जन्म दिव्य मेरा कर्म दिव्य ऐसा जो जानता है वह जन्म मरण में नहीं आता है। तुम अपना जन्म और कर्म दिव्य समझते हो? कैसे समझते हो यह लिखना। कृष्ण नानक तुम्हारें जैसे मनुष्य हैं। तुमने उन्हें महान समझकर अपने को कमजोर कर लिया है। आज भी गुरू को अपने से महान या ऊपर समझेंगे तो अपने को कम समझेंगे। पर जो तू है सो मैं हूँ इस अद्वेत में टिको यही सत्य है। □

पत्र गीता भगवान का -31

जहाँ रखाते हो पैर तुम वहाँ रखता हूँ पैर मैं। तुम मेहनत करते आओ फल अपने आप निकलता रहेगा। घर में ऐसे बोलो जैसे बीमार और दीन (निमाणा) बोले। जैसे समधी के बच्चे से बोलते हैं ऐसे बच्चों और नौकर के साथ बोलो। जोर से चिल्लाकर बोलना बन्द करो। बाहर के (विदेशी) लोग हम पर हंसते हैं कि इण्डिया के लोग जानवरों की तरह चींखते–हींगते हैं और गजगोर करते हैं।

गलत किसी को भी नहीं बोलो हर एक अपने स्वभाव से चलता है। बैल को गऊ पुत्र और अन्धे को सूरदास बोलो। पहले ज्ञान की सख्त जरूरत किसी को महसूस कराओ फिर फायदे बताओ जैसे अगले को जबरदस्त प्यास उत्पन्न हो। आए भले बनियान लेने पर जुराब बंधा दो। सेल्समैन ऐसा होशियार हो कि ग्राहक आए एक चीज़ लेने तो वह दूसरी चीज़ बँधा दे। इस प्रकार कोई भले दुनिया की बातें लेकर आये पर तुम ज्ञान सुनाकर घर भेजो, रेडियों की स्टेशन बदल दो।

शास्त्र पढ़ने से अहंकार के कारण तुम समझते हो कि मैंने सब समझा है पर एक अक्षर (शब्द) पर भी चलते नहीं हो। अहंकार से नहीं सिखाओ, तुम चलते अहंकार से हो पर समझते हो कि मैं निर अहंकारी हूँ।

मोह को मर्यादा नहीं समझो। यहाँ महकम इरादे

Will Power वाले बनो। डूबो तरो नहीं Quick Decision करो Yes or No।

घर में अभी तक तुम्हारी आवाज सुनायी देती है तो तुम सुधरोगे नही। मौन में घर चलना चाहिए। तुम्हें उलझाने के लिए घर दिया है भगवान ने। (परीक्षा के लिए)

राजा ! तुम्हारे पास चार प्रकार की (चतुरंगिणी) सेना है तो मेरे पास भी मन बुद्धि चित्त अहंकार रूपी सेना है। बाहर की सेना तुम्हारे हुकुम में है पर अन्दर की सेना तुम्हारे अधीन नहीं है। गुरू की सेवा से और आज्ञा पालन से अन्दर की सेना को अधीन करने की युक्ति मुझे मिली है। तुम जगजीत मैं मनजीत हूँ। तुम्हारे शत्रु हैं मेरा कोई भी दुश्मन नहीं। तुम चिन्ता में हो मैं निरइच्छा निश्चिन्त हूँ। तुम दीन हो मैं दीनता रहित हूँ। शजाई देने से मेरी जैसी मुक्ति हासिल होगी।

कोई आठ रोटियों से कोई दो रोटियों में राजी हो जाता है। काम है तृप्ति से कोई अच्छा भोग भोगे कोई कम इससे कुछ नहीं होना। चित्त की तृप्ति अधिक या कम मिलने से नहीं है। तृप्ति ज्ञान से मिलती है न कि अधिक, कम मिलने से।□

पत्र गीता भगवान का -32

सारी दुनिया भग्वान को भूलकर डाक्टरों पर विश्वास रखती है मानो डाक्टर किसी को बचा सकते हैं। डाक्टर भी बेचारे भगवान की मर्जी के सिवाय कुछ भी नहीं कर सकते हैं। वे भी समझते हैं कि भगवान हमसे ऊपर है इसलिए हमें भी सीधा भगवान का आसरा लेना है। राखे राम तो मारे कौन और मारे राम तो राखे कौन। अब मरना जीना है ही नहीं। ना मैं पैदा हुआ हूँ ना मरने वाला हूँ ना मैं चौरासी की चक्की में आने वाला हूँ। मरना जीना एक ही बात है ना इसमें अच्छा है न उसमें कुछ बुरा है दोनों से हो गयी मुझे निरालाई, निराशाई।□

पत्र गीता भगवान का -33

तुम इतने बड़े हो कि सबमें समाए पड़ हो। तुम कोई छोटे तीन चार फीट के शरीर नहीं हो। शुभ इच्छा भी रखते हो तो अपने को खाली महसूस करेंगे पर तुम भरपूर खुद खुदा हो। अभी देने वाले बन जाओ। सबको अपना निश्चय सुनाओ। लेने की उम्मीद किसी से भी नहीं रखो। निरइच्छा वाला भरपूरता का अनुभव करता है। एक बार गुरू के मुख से जिसने निश्चय किया कि मैं भगवान हूँ वह एकदम शरीर का अध्यास निकाल कर फेंक देगा कि मैं नहीं हूँ। देह से मेरा सम्बंध नहीं है। देह के धर्म अपने में नहीं मानो। तुम अकर्ता अभोक्ता साक्षी हो। जब हम मन से बैठकर पूछते हैं तो ऐसी हालत आ जाए तो फिर तुम क्या करोगे तो मन हमेशा गिराएगा, बोलेगा कि अभी ऐसी पक्की नहीं हुई हो। निश्चय करो, मान न मान तू है भगवान। आखिर भी निश्चय तुमको करना है। गुरू बोलता है जज की तरह कि You are not guilty उसके बाद तुम बड़े बेवकूफ होगे अगर तुम कहते हो कि मैं कैसे भगवान हूँ, कैसे मुक्त होऊँगा। गैरन्टी से तुम्हें गुरू ने ज्ञान दिया है फिर भी तुम्हें विश्वास नहीं होता तो तुम बेईमान हुए या नहीं? भगवान और मनुष्य बिल्कुल अलग–अलग नहीं हैं। माया और बन्धन काटने नहीं हैं पर ब्रह्म देखने से माया रहेगी ही नहीं बन्धन भासेगा नहीं।

ज्ञान के बाद निरइच्छा होते हुए भी ज्ञानी को प्रारब्ध का Part पूरा करना पड़ता है जैसे कुम्हार चाक चलाकर छोड़ देता है तो भी कुछ समय तक चलता रहता है पर ज्ञानी अपनी समझ से कर्ता होकर कर्म नहीं करेगा वह निष्काम होता जाएगा तो सकाम बन्धन कटते जायेंगे। आखिर प्रारब्ध Nill हो जाएगी। मैं और मेरा रहेगा ही नहीं। 24 घण्टा टोटल निष्काम हो जाएगा। अधिक शास्त्र पढ़ने से गुरू से प्रेम घटता जाएगा। जड़ शास्त्र तुम्हारी बुद्धि को भी जड़ सूना संयासी की तरह बना देंगे। गुरू की जीवन का पढ़ो यही बड़ा शास्त्र है।□

पत्र गीता भगवान का -34

गुरू को एक बार अकेले में अपने मन की सब बातें कमजोरियाँ बताकर हमेशा के लिए भुला दो। एकदम आत्मा का निश्चय करना चाहिए। जो बात उलझाए वह भले पूछो पर तुमने इतना तो ज्ञान सुना है कि अन्दर से ही जवाब आएगा। भूल करेंगे तो अन्दर से ही सुजागी (जागृति) मिलेगी। Self enquiry करो कि मैं क्या हूँ मेरे मुँह पर यह बात शोभा देती है? गुरू ने इतना तो विवेक खोल दिया है कि अब अन्दर आइना हो गया है साफ, कैसी भी सवाल का जवाब मिल जाएगा। गुरू को प्रणाम करने की जरूरत नहीं ना ही गर्दन झुकाओ। एक बार जिसने अपना अहंकार का सिर, हाँ मैं का सिर गुरू के वचनों के आगे झुकाया है उसे बाहर माँस का सर झुकाने की जरूरत नहीं है। एक बार गिरकर हमेशा के लिए उठ जाओ। गुरू को बताओ कि जो तुम हो सो मैं हूँ। आत्मा का अहंकार करो। मिट्टी में नहीं निहारो कि मैं कुछ नहीं हूँ। ज्ञान माना समझ, दिखावा नहीं। कुछ भी करेंगे तो द्वेत साबित होगा। पर गुरू से मिलने पर एक हो जाओगे। गुरू की सेवा करते समय भी समझो कि अपनी ही कर रहा हूँ। गुरू बड़ी आत्मा नहीं है। कृतघ्न बराबर नहीं होना है। बाहर से झुकने से कृतघ्न होने से नहीं बचेंगे पर यह तो पूरी Mental Revolution है। ज्ञानी तो गुरू, राजा,

भंगी को एक ही देखता है फिर किसे न झुके? गुरू के वचनों पर झुकना है कि मैं आत्मा हूँ। द्वेत से रहित हूँ। शरीर की मैं नां का मतलब है कि किसी समय भी, कहीं भी, किसी से भी अहंकार न करूँ कि मैं हूँ। गुरू ने बताया कि सारा जग अवतार है बाकी कहाँ गुरू नहीं है? शुद्ध अहंकार करना है। यदि झूठा होगा तो अपने आप प्रगट हो जाएगा। □

पत्र गीता भगवान का -35

मन को ढूँढ़ने बैठेंगे तो मन है ही नहीं। डर शक इच्छा ख्याल इसका नाम है मन। मन को हस्ती तुम देते हो उसमें कोई भी ताकत नहीं है। तुम्हारी ताकत (शक्ति) से ही मन नाचता कूदता है पर तुम दृष्टा नहीं हो तुम मन के रूप हो जाते हो। आत्मा होकर मन को जांचो कि कैसे चोरी ठगी करता है। अपने को मन समझकर डर जाते हो। मन तुम्हें भय देकर Inferior करता है एक मिनट में सारी ताकत छीन जाता है पर तुम मन को यह नहीं बताते कि तुम नहीं हो मैं ही हूँ। हरिओम वासुदेव सर्वः। मन की कोई मजाल नहीं जो तुम्हें आत्मा से नीचे गिराये। पर यदि तुम पक्के नहीं हो तो जैसे शेर को मक्खियाँ तंग करती हैं रात की नींद खराब (Disturb) करती हैं ऐसे ही तुम शेर शिवोहम को इच्छाओं और ख्याल रूपी मक्खियाँ सताके, उलझाके मारती हैं। एक भी इच्छा आत्म साक्षात्कार करने में रूकावट है। ख्याल करना तुम्हारा धर्म नहीं है। ख्याल को आत्मा के विचार से काटो। एकदम ख्याल को भुला दो। मन का चिन्तन नहीं पर आत्मा का चिन्तन करो। ऊपर से चढ़कर बैठ जाओ। मन का गटर खोलकर बैठकर ख्याल नहीं करो। डर नहीं करो कि मन आ गया है अब मैं निर्बल हो गया हूँ। मन को आने नहीं दो। जो ख्याल आये उसे आत्मा के ख्याल से काटो, आत्मा के

विचार से काटो। जवाब दो कि यह बात मेरे से लागू नहीं है तो वह वापस चला जाएगा। ज्ञान जो तुमने हासिल किया होगा वही काम आएगा। गुरू का खजाना तुम्हें काम नहीं आएगा। विद्या वह जो कंठ। धन वह जो गांठ में हो। तुम अपनी जेब से खर्च कर सकोगे जो कमाया होगा। गुरू की कमाई तुम्हें काम नहीं आएगी। तुम Inferior होंगे तो Superior होने की इच्छा करेंगे पर जो आत्मा में है वह पहले ही Superior है। भगवान जैसा बड़ा कौन है? तुम पहले ही से ऊँचे हो। भगवान अपने पर खुद ही आशिक है। Self is bless it self. □

पत्र गीता भगवान का -36

छः घण्टे नींद बाकी 18 घण्टे Active होना चाहिए। आलस्य नींद को उखाड़ फेंको। Our body is made for God हमारा शरीर बना ही भगवान के लिए है। ज्ञान की पहली भूमिका है शुभ इच्छा पर यहाँ तो हम शुभ इच्छा वाले को भी अज्ञानी समझते हैं। गुरू के पास शुभ चाहे अशुभ इच्छाओं का नाश होता है। सत चित आनन्द अद्वेत (आत्मा) असत्य जड़ दुःख रूप द्वैत (अनात्मा)। कर्म हद वाला सकाम है तो फल भी हद वाला नाशवान है। कर्म बेहद का निष्काम है तो फल भी मुक्ति है। आवरण जाने से (ज्ञान के कारण) ज्ञानी को दूसरा जन्म नहीं मिलता पर प्रारब्ध अनुसार विक्षेप ज्ञानी में भी रहेगा इसलिए जीवन मुक्त में भी प्रपंच प्रतीत होता है। प्रारब्ध से ज्ञानी उठता बैठता आता-जाता है सुख दुःख भोगता है पर अज्ञानी समझते हैं कि यह भी हमारी तरह इच्छा से चलता है।□

पत्र गीता भगवान का -37

ज्ञानी जहां पैर रख़े वहाँ खैर है। सारी प्रकृति दासी उसकी सेवा में हाज़िर है। केवल अपने को पुरूष परमात्मा अनुभव करो थोड़ा भी कम नहीं तुम कहते हो कि फलाने की स्थिति बहुत अच्छी है, दूसरे की महिमा देखी तो अपनी आत्मा को लजाया। आत्मा में स्थिति नहीं होती है। दूसरों में जाओ ही नहीं। अपना आप देखो न ही भूमिका है न कोई स्थिति। हर एक अपने को जाने अपना उद्धार करे, अपने अन्दर वाले भगवान को प्रकट करे। आत्मा छोटी बड़ी होती नहीं है। रजोगुणी ज्ञान ये है कि इसकी आत्मा महान इसकी कम है। तमोगुणी ज्ञान है एक ही व्यक्ति को भगवान समझना, सतोगुणी ज्ञान है 'मैं ही तो हूँ।' किसी पर भी आशिक होना है अपनी जोत को बुझाना। मैं क्या नहीं हूँ। गुरू ने हर एक को Same एक जैसा प्रसाद दिया है हर एक अपने आप में गुम रहे दातार होकर रहे। मंगते होकर कब तक रहोगे।□

पत्र गीता भगवान का -38

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पांच विकार हैं छठा विकार जो सबसे बड़ा और हर एक में है वह है डर। हर एक अन्दर से पूछे कि मुझे किसी न किसी का डर है या नहीं? मौत का बीमारी का, दुनिया का, समाज का, कोई रूठ न जाये, नाराज़ न हो, निकाल न दे, अपमान न हो, हार न हो, पाप न हो, अहंकार न आये, Sex में गिरने का डर मतलब तो हजारों किस्म के डर सूक्ष्म में पड़े हुए हैं। ज्ञानी को यह डर की मुझे अज्ञानी न समझे, बेइज्जती न करे, गिरने का डर, मेरी Mistake कोई न देखे, अन्दर की कमजोरियों का किसी को पता न चले, पर दुनिया में केवल एक ही ब्रह्मज्ञानी आप परमेश्वर हैं जो निर्भय है किसी का भी डर नहीं है क्योंकि उसका देह अध्यास पूरी तरह से सम्पूर्ण हो गया है और द्वेत से रहित है जहाँ तहाँ अपना आप देखता है। गालियाँ देते हुए भी समझता है कि दूसरा है ही नहीं न ही परवाह है कि मेरे शिष्य न भाग जायें या बाहर जाकर गिला न करें मैं मीठी वाणी बोलूँ। अपने से सब पूछें कि किस प्रकार का डर अभी तक है।□

पत्र गीता भगवान का -39

गुरू ने शिष्य को बोला अब जाकर सो जाओ आग बुझाकर। शिष्य जाकर सोया तो आधी रात को उठकर शिष्य को बोला कि अंगारा चाहिए मैं चिलम पियूंगा। बरसात जबरदस्त बरस रही थी। शिष्य बाहर गया एक वैश्य का घर था वहाँ गया जाकर अंगारा माँगा। वैश्य ने कहा अंगारे की फीस है एक आँख निकालकर दो तो अंगारा मिलेगा। शिष्य ने कहा बेशक ले लो। वैश्य ने सुआ निकालकर उसकी आँख निकाल दी, शिष्य आँख पर हाथ रखकर खून बहाता हुआ अंगार लेकर आया। गुरू हैरान हो गया बोला तुमने एक आँख दी पर गुरू को हमेशा के लिए खरीद कर लिया। तुम्हे गुरू का राज़पा (प्रसन्नता) मिल गया। बाद में फिर आँख नई डाल दी। मतलब है गुरू के वचन पर मर कर मिट्टी होना। कीमती से कीमती वस्तु देना। तेरी खातिर मैं सब कुछ छोड्या। निराकार से यदि आँख निकल जाए तो क्या करें? ना ही निराकार कुछ कर सकेगा पर साकार के लिए जो भी कुर्बानी करेंगे उसके बदले दस गुना वहाँ का वहाँ मिल जाता है पर साकार के लिए कुछ भी करेंगे तो कर्ताभाव आ जाएगा। निराकार से तो पहुँच नहीं सकेंगे तो चुप हो जाएंगे।□

पत्र गीता भगवान का -40

एक गुरू के पास शिष्य आया बोला बेटी की शादी करनी है कुछ पैसे दे दो गुरू जी। गुरू ने बोला मेरे पास तो कुछ भी नहीं है बाकी लंगर प्रसाद जो भी आता है उससे जो भी पैसे मिलें वो तुम ले लेना। तीन दिन रहा पर एक पाई भी नहीं मिली आखिर गुरू से विदा लेकर जाने लगा नाउम्मीद होकर। गुरू ने कहा दूसरा तो कुछ भी नहीं है यह मेरी जूती ले जाओ पुरानी। शिष्य जूती लेकर गया। दिल में कहने लगा इससे क्या होगा? रास्ते में एक पक्का शिष्य आ रहा था बोला क्या ले जा रहे हो? बोला गुरू से और कुछ तो नहीं मिला केवल पुरानी जूती मिली है, मुझे बेटी की शादी करनी है। पक्के शिष्य ने कहा यह मुझे दे दो तुम मेरे सब माल, पदार्थ, धन चीज़े ले लो मुझे जूती दे दो। जूती लेकर गुरू के पास गया। गुरू ने पूछा जूती के बदले क्या दिया? माल, सोना, हीरे सब दे दिए। तुमने तो मेरी जूती की Value नहीं की। मेरी जूती तुमने धन से खरीद की तुमने अभी भी पूरी फीस (कीमत) नहीं दी। सबको बोला मेरे और इसके मरने के बाद इसकी कब्र मेरे पास नहीं बनवाना। यह यदि यह सर देता तभी मैं समझता कि इसने मेरी जूती की कद्र की।□

पत्र गीता भगवान का -41

यह जगत सपना है, जगत है रैन का सपना। "ना हुआ संसार कल्पित करके सिद्ध हुआ है जैसे सपने में सिद्ध हुआ नाना विधि व्यवहार।" जब है ही सपना तो उसके बारे में कुछ भी सोचना मूर्खता है। एक बार घर और शहर छोड़कर यहाँ आओगी तो बड़ा फायदा होगा। घर में चारदिवारों के बीच में बैठने से मन कभी भी कुछ नहीं भुलाएगा। मन का धर्म है हमें भुलाना पर तुम्हारी यदि प्रीत गुरू से होगी तो मन को पता लग जाएगा कि यह गुरू की हो गयी है। सारा दिन इस ज्ञान के मनोरंजन में बिताओ जिससे एक मिनट भी न मिले जो मन आए। या पिरीअ जो पसणुं या पिरीअं जी पचार, इन्हन बिन्ही खांधार शल खांवद खाली न करे। तुम अपनी प्रारब्ध बहुत अच्छी समझो। भगवान ने तुम्हारे ऊपर खास मेहरबानी की है पर तुम अपने जैसी अच्छी जीवन किसी की भी नहीं समझो। सब विष्ठा के कीड़े बने हुए विष्ठा में बैठे हैं। सब दुःखी हैं चाहे राजा हो। सो सुखिया जिस नाम आधार। सुहागिन वह है पति? (परमात्मा) जिसकी गोद में है। मैं सुहागिन उसे कहती हूँ जिसने कन्त (परमात्मा) को रिझाया। भगवान दुःख उसे देता है जिसे अपने से मिलाना है। दुःख दारू सुख रोग भया। यहाँ कितनी ही सत्संगी आती हैं वे सब पतियों की शिकायत करती हैं कि छोड़ते नहीं हैं। हम यदि रात को शान्ति में सोना चाहें तो भी नहीं सो सकते हैं। नींद

खराब करने वाला, काम में घसीटने वाला, सत्संग से रोकने वाला पति ही है। सब रोती हैं कि "कैसे छूटे। जीते जी छूटना ही मुश्किल है। अब बताओ कि पतियों वाली किसमें सुखी है? तुम्हें तो भगवान ने योगी का जनम दिया है, शान्त में बैठकर अभ्यास करो। बहुत अच्छा मौका मिला है। किन्हीं पुण्य कर्मों से यह मनुष्य देह मिली। फिर गुरू का सत्संग मिला, फिर तो उसके जैसा भाग्य वाला इस पृथ्वी पर कोई नहीं है। हर वक्त राजी रहो। मैं हूँ आत्मा, शेरावाली गर्जना करो तो मन भाग जाएगा। मन को जवाब दो कि गुजरी **(Past)** की बात मैं नहीं सुनूंगी। तुम मन के साथ बनकर बैठी हो मन को इज्जत देती हो तभी तो आता है। जब अपमान करके निकालोगी तभी भागेगा। मन है जिन्न (भूत) सो यह गुरू को अर्पण करने के सिवाय नहीं मरेगा। मन भूत को खाली नहीं बिठाओ। प्यारे किसी न किसी काम में मशगूल (व्यस्त) रहो। हर एक को भगवान करके देखो। तुम सब बातों से ऊपर हो जाओ। तुमने सब खेल देखा अब क्या देखना है? अब जल्द ही इस जगत से आँखें बन्द करो। क्या देखकर क्या देखते हो, देखो तुम सिरजन हार को। इस झूठे दिखावे और भेष से दिल हटा दो। इस फानी दुनिया में रखा क्या है? सब दुखी नाउम्मीद निराशा को पाकर इस दुनिया से जाते रहे। सब हार कर गये पर जीतता केवल ज्ञानी है। जो अपने को पहचानने आया वह भले आया, सैर करने आया वह भले आया। साधु संगत यह स्वर्ग के समान है ऊपर कोई न स्वर्ग है, भोग दुनिया के नर्क समान है, ऊपर न कोई नर्क है। स्वर्ग है सत्संग बाकी जो दुनिया

के मजे बैठकर लूट रहे हैं वे सब नर्क बैठे भोग रहे हैं। भोग महारोग है तुम्हारा अभी गुरू से मोह नहीं हुआ है इसलिए सब याद आता है। मीरा ने कहा मेरे तो गिरधार गोपाल दूसरो न कोई। उसने तो पति के होते हुए ही पति से मोह निकाल दिया। भगवान से जाकर मोह रखा। करो खुशी से ख्वाब। जब है ही सपना तो उसे याद करने से क्या होगा। चिन्ता ताकी कीजिए तो अनहोनी होय। अनहोनी कुछ भी नहीं होती है जो कुछ भी होता है वह होना ही है। भगवान कुछ नहीं करता है। सबमें भलाई है। तुम करो भला हम भलो न जानूं। तुम भगवान की हो जाओ। भगवान ने तुमसे छोटा खिलौना लिया ही इसलिए है क्योंकि खुद आना था। अब तुमसे मिल गया है केवल तुम मिलो। ऋषि—मुनि हजार वर्ष तपस्या करके भी जिस भगवान को नहीं पा सके वह भगवान तुम्हें बिना मेहनत के आकर मिल गया, तुम्हें उसकी कद्र नहीं है। अब खूब खुशी करो आनन्द में रहो बोलो मिल गया जो था कि मिलना काम क्या बाकी रहा। सब कुछ मिल गया है। आत्मा रूपी खजाना तुम्हारे अन्दर में है।

आखिर मिला न जो रब और सब मिला तो क्या हुआ,
दुनिया में दिल का मतलब पूरा हुआ तो क्या हुआ।

तुम बोलो सबसे हिम्मत करके तो तुम्हारे मुख से मैं बोलूँगी। □

पत्र गीता भगवान का -42

तुम भी एक दूसरे से अधिक तैयार हो केवल अपने में निश्चय रखो। गुरू ने बताया कि तुम सत चित्त आनन्द स्वरूप हो ये सुनकर फिर निश्चय से कहो कि हाँ मैं बराबर वह हूँ। यदि केवल यह विचार गुरू का मानेंगे तो वह विचार किसी समय बदल जाएगा पर यदि गुरू और तुम्हारा विचार एक हो गया तो वह कभी भी नहीं बदलेगा। यह महसूस और अनुभव करना है। 'मुल्क न वेझो बसे—बसे, पर खियाई वेठी ओ दसे—दसे।' तुम तो पहले ही ब्रह्म हो पर दूसरा देखने से भूल गये हो अभी कोई ख्याल आए ही तो एक दम सुजाग हो जाओ कि यह ख्याल मेरे मन में आया कहाँ से? ख्याल करना मेरा धर्म नहीं है। मैं तो शांत स्वरूप निर संकल्प निर विकल्प हूँ। मन को समय ही नहीं दो कि शरीर सम्बंधी या माया के बारे में कुछ भी सोचे। इस ज्ञान के ही ख्याल चलने चाहिए कि मैं क्या? ख्याल शुरू कहाँ से हुआ? मन से। मन कहाँ से आया? उसे किसकी सत्ता और हस्ती है? वह है आत्मा की वह आत्मा है तू। तू है सागर मन है लहर फिर कभी लहर भी सागर को डुबो सकती है? शेर से निकली हुई गर्जना कभी शेर को डरा सकती है? सूर्य से निकली हुई किरणें कभी सूर्य को जला सकती हैं? अग्नि से निकली हुई चिंगारियाँ कभी अग्नि को जला सकती हैं? फिर आत्मा से

पैदा हुआ मन आत्मा को डरा सकता है? "होवे प्रलय इस विश्व का, मुझको न कुछ भी त्रास है। ब्रहां विष्णु शिव का होता नाश है पर मेरा होता न नाश है।" गुरू को एक शिष्य ने कहा साईं मुझे प्रसाद दो, गुरू ने कहा मैं खाता हूँ यह भावना निकाल दो फिर क्या भी जाकर खाओ वही प्रसाद है। मतलब है क्या भी खाओ निराहारी बनकर तो कोई भी दोष नहीं लगेगा। खाना पीना पवित्र है। दितू रिजक सवाय, नानक गुरू मुख जिनी बूझिया तिना सूतक नाहि। गुरूनानक कहते हैं जिसने गुरू के मुख से तत्व आत्मा को जाना है उसे कोई भी सूतक या पाप नहीं लग सकता है।

शिष्य ने पूछा गुरू से आत्म अनुभव कैसे हो? गुरू ने जवाब दिया मैंने आत्म अनुभव नहीं किया है ये ख्याल निकाल दो तो आत्म अनुभव हो जाएगा। मैं आत्मा हूँ ये निश्चय जाकर करो। मैं आत्मा नहीं हूँ ये भ्रम जाकर निकालो तो ब्रह्म हो जाओगे।

तू चन्दा जग चांदनी तू दीपक जगरूप,
तू सागर जग लहर है तू सूरज जग धूप।
तेरा रूप अडोल है निर्भय अचल अखण्ड
दुनिया है तस्वीर मेरे हुस्न की निहारता जहां हूँ देखता हूँ खुद को।

गुरू के मुख से गीता सुनने के बाद जप तप करने

की कभी भी जरूरत नहीं है। यह नामुमकिन बात है गुरू मुख से गीता समझाए और तुम मुक्त न हो। सब काम तुम्हारे पूरे हो गये, यह Last का (अंतिम) क्लास है। इससे ऊपर कोई भी बात नहीं है। तुम लायक हो तभी यह ज्ञान समझ पा रहे हो। मन आये भी चाहे तो भी मायूस नहीं हो जाओ। यह मन का धर्म है पर तू आतम है। तुम मन को साथ नहीं दो। नौकर यदि भूल करे तो वह तुमने नहीं की। तुम तो मालिक हो। नौकर को सजा दो जैसे फिर न करे परन्तु ऐसा नहीं समझो कि मेरे से भूल हुई। अब मैं आत्मा कैसे होऊँगी। मीरा की शादी भगवान से हो गयी उसके बाद कुटुम्बियों से दिल नहीं लगायी। मेरे तो गिरध्र गोपाल दूसरो न कोई। तुम क्या समझते हो? जो एक पति भगवान के सिवा दूसरे किसी से दिल लगाता है वह वेश्या हुआ। न दो तुम दोष औरों को सब है तुम्हारी कम हिम्मथी। यदि पुरूषार्थ करो बैठकर अपने आप से तो अभी का अभी चक्कर ही बदल जाए। दूसरों को दोष नहीं दो कि यह क्यों जलता है या ये रूकावट है। सब तुम्हारा ही दोष है। कोई भी शक्ति तुम्हें सच के रास्ते से रोकने वाली नहीं है। तुम्हारे पाँव मजबूत हैं फिर छेड़ने वाले चाहे ढेर हों। जिस प्रकार छतरी से सूर्य की तपन को रोक सकते हैं उसी प्रकार आत्मा समझने से सब विकार निकल जाते हैं। □

पत्र गीता भगवान का -43

गोपियों ने शर्म उतारी तभी भगवान से मिलकर एक हुईं। शर्म भी एक पर्दा है। भय तो द्वैत में है।

पहले दाता गुरू भया जो देवे ब्रह्म ज्ञान,
पीछे दाता शिष्य भया जो अरपे तन मन धन प्राण।

परन्तु दुनिया के गुरू उल्टा बताते हैं कि पहले शिष्य तन मन धन दे फिर गुरू देगा। शिष्य बेचारा कंजूस क्या दे सकेगा जो एक सुई में भी मोह है पर गुरू ऐसा हो जो रम्ज़ से (युक्ति से) सब कुछ ले जाये। दिल ले गये मन ले गये। अच्छा हुआ भले आए ऐसे लुटेरे जो चिन्तायें लूट कर ले गये। चोर छिपा कर चोरी करता है ऐसे ही गुरू भी तुम से छिपाकर चोरी करता है तुम्हारा तन, मन, धन दिल चिन्तायें विकार ले जाता है फिर तुम ढूँढ़ो बैठकर फिर भी नहीं मिलेंगे। एक दुःख में इतनी ताकत है कि वह सारी उम्र के सुख नाश कर देता है। ऐसे नीच सुख के लिए तड़प रहे हो कि मैं सुखी होऊँ। सुख कब तक कायम रहेगा? पानी के बुलबुदे के समान सुख–दुख है। इस पर क्या भरोसा है? स्याना (समझदार) वह है जो दुख सुख से ऊपर कोई नयी दुनिया बनाकर बेगमपुर का बादशाह होकर रहता है। हम प्रेम नगर में रहते हैं जहाँ शादी गमी की बात नहीं। जब आखिर भी सब भुलाना है तो अभी ही क्यों न भुलायें? करो खुशी से ख्वाब। समर्थ

खुद छोड़ देता है असमर्थ से छूट जाता है। तुम नौकरी छोड़ कर आओ और तुम्हें नौकरी से निकाला जाय, कितना फर्क है। भगवान को भी जवाब दो कि क्या मांगू कुछ थिर नाहीं। उसने माया पुत्र पति देकर तुमसे धोखा किया है। जानबूझकर खड्डे में डाला पर गुरू ऐसा मिला जिसने पहेली Solve कर के दी। गुरू ने काटी ममता मेरे। सपने में (स्वप्न) बड़बड़ा रहे थे, गुरू ने आकर जगाया कि सपने के पदार्थ क्या जाग्रत में याद आयेंगे और वे कौन सा सुख देंगे। सन्यासी दुनिया को सच समझकर त्याग करता है इसलिए मन बाद में रोता है कि नाहक (बेकार) छोड़ा। अब कौन औरत (पत्नी) जैसी रोटी खिलाएगा, बेकार घर छोड़ा, दर–दर पर भीख मांगनी पड़ी। शुकर ध्वज ने राज्य छोड़ा, चुड़ाला को छोड़ा तो सब याद था कि ये ये छोड़ा पर शान्ति नहीं मिली। राजा भरतरी ने भी रोया। सच समझकर छोड़ा तो थूक में हाथ डाला कि यह लाल है पर हमने जाग्रत में छोड़ा है तो खुद ही छूट गया है। कोई सच झूठ को जान कर सच में टिक कर झूठ को झूठ समझ कर फेंकता है तो कभी पछताना नहीं पड़ेगा। मिथ्या का त्याग क्या करेंगे? केवल मिथ्या को मिथ्या समझो भले सब कुछ पड़ा रहे छोड़ने की कुछ भी जरूरत नही है। तुम जगत को जगदीश समझो। अपनी मैं छोड़ने से सब कुछ त्याग हो गया और मैं को पहचानने से सब कुछ मिल गया कि ये सब मैं ही तो हूँ। इस 'मैं' की पहेली

बुझो। When I loss myself I find the soul. giving up the false self (ego) that is true renucition.

अहंकार में ही सारा जगत खड़ा है। मैं मिटाओ तो जगत है ही नहीं। Die before you die. मरने से पहले मरो तो सच्ची मौज लूटोगे। ज्ञानी है आत्मा अज्ञानी है मन पर मन को जो अमन करे वह मनुष्य है। मनुष्य माना मन का ईश्वर न कि मन का गुलाम। तुम आत्मा हो अब न अपना न दूसरे का मौत मानोगे। मौत बिल्कुल है ही नहीं। शरीर की जो चौथी अवस्था है गहरी नींद, शान्ति उसे तुम मौत समझकर डरते हो। भगवान वहां महा समाधि में सोया पड़ा है, तू मैं के झगड़े से ऊपर जगत के सभी झंझटों से छूटकर अपने शान्त पद में स्थित है उसे तुम मौत समझते हो। वह तो मीठी नींद में आराम ले रहा है तुम भी उसे देखकर आराम में रहो। कौन कहे साहिब नूं यूं कर और यूं न कर। हर एक यहां सैर करने आया है पर यहां आकर झूठों के साथ दिल लगाकर बैठे हो इसलिए छोड़ते समय दुःखी होना पड़ता है। कूड़–करतार सिंयु नीह लगाया विसरिया करतार। अब भगवान से प्रीत रखो घट–घट वासी देखकर सर्व से प्रेम करो तो सब दुःख दूर हो जाएंगे। Try to achieve forget fulness. कोशिश करो सब कुछ भुलाने की। विस्मृति में ही सच्चा आनन्द है। "क्या देखते हो किसे देखते हो, देखो तुम सिरजनहार को।" □

पत्र गीता भगवान का -44

प्रश्न : जिस दिन ज्ञान सुनकर घर जाते हैं मनन करते हैं उस दिन सारा शरीर निर्बल क्यों हो जाता है?

उत्तर : सो यही वैराग्य की अवस्था है। पहले अज्ञान में जीव में पशुबल यानि शरीर का अहंकार रहता है। इस पशुबल में फूलकर चलता है पर जब ज्ञान सुनता है कि तुम कुछ भी नहीं हो, "मैं ना" तो वह झूठी हस्ती मन की हस्ती गुम हो जाती है तभी निर्बल हो जाता है कि अब मेरी कुछ भी नहीं चलेगी। मन की राजधानी लुट जाती है इसलिए यह मन की कमज़ोरी है। एक बार जब यह झूठी हस्ती गायब होगी तभी सच्ची हस्ती आयेगी यानि बाहर नहीं आएगी पर अन्दर में प्रगट होगी। और शरीर इसलिए भी निर्बल होता है कि क्योंकि सारा जगत मिथ्या झूठ नज़र आता है कि ये भी क्या है? कहीं भी मज़ा नहीं है कोई भी सार नहीं है। सम्बंधी क्या हैं? ये विषय कैसे ज़हर समान हैं। सब मतलबी ठग हैं। मतलब ये नास्ती के ख्याल करके मन मायूस हो जाता है। क्या दुनिया का है नज़ारा ढ़ेर सारा बालू के सिवाय, क्या मिलता है दुनिया से बेकरारी के सिवाय। कहते हैं कि जिसे रौनक वह सरासर है सूनापन। मानो मन के सब सम्बंधी ही मर गये हों। जब तक जिज्ञासु की वैराग्य की अवस्था है यानि तीसरी भूमिका तक निर्बलता कभी खुशी कभी मायूसी

आती रहेगी। चौथी अवस्था में मायूसी या निर्बलता बिल्कुल नहीं होगी क्योंकि उस अवस्था में पूर्ण ब्रह्म ज्ञान का निश्चय होगा और अपने को पूर्ण आनन्दमय शुद्ध अखण्ड जहाँ–तहाँ अपने आप को ही देखेगा कि मैं ही तो हूँ जगत बना ही नहीं है। मैं ही सब खेल खेल रहा हूँ। "अपनी मौज से मैं तो घूमने आया हूँ निराले नज़ारे देखने आया हूँ।"□

पत्र गीता भगवान का -45

गुरू नानक पहलाज के पास गये, पहलाज का सवाल– सुनाओ तो कौन सा बर्तन साफ करके किसका दूध दूहकर किस सेक (अग्नि) पर गर्म करके कौन सा जामन (दूध फुटी) डालकर किस जगह जमाकर किस तरह बिलो कर मक्खन निकालकर कैसे चखा है?

नानक का उत्तर (जवाब) शरीर रूपी बर्तन को साफ करके विकारों से हटाकर पवित्र करके क्षमा रूपी गऊ से सन्तोष रूपी दूध दुह कर तपस्या के सेक पर गर्म करके उसमें गुरू रूपी उपदेश का जामुन डालकर सत्संग रूपी बर्तन में जमाकर, मन वीचार की मथानी लगाकर खुदी छोड़कर प्रेम से बिलोकर हुकुम (माणा) मानने का स्वाद चखकर सतगुरू की महर से रज गया हूँ। सोई तुम भी बताओ कि तुम सबने भी यह मक्खन निकालकर चखा है या नहीं? यहां तो हर एक को अपने में विश्वास रखना है कि वह भगवान मैं हूँ। जिसके अन्दर विश्वास प्रभु आया, तत्व बोध तिस मन प्रगटाया। तुम सबने तो बहुत मक्खन खाया है अब यह हज़म भी तो करो। गाय घास खाकर एकान्त में जुगाली भी करती है ऐसी ही अब तुम्हें भी एकान्त मिली है जहाँ एक की भी अन्त है। चलो वहाँ जहाँ तू मैं नहीं है, पाकर पद निर्वाण मेरे मन शान्ति सुख तू माणं। राधा कृष्ण–कृष्ण करते खुद कृष्ण रूप बन

गयी। तुममें से कोई ज्ञान का रूप हो गया है या नहीं? भगवान से अपना आप बदलो, तुम भगवान हो जाओ।

'श्याम तेरी बंशी अब मैं ठीक बजाऊँ
जो–जो तान भरी मुरली में सो सब गाय सुनाऊँ
हमारी बिन्दिया तुम ही लगाओ, मैं सिर पर मुकुट धराऊँ
हमरे भूषण तुम सब पहनो, मैं तुम्हरे सब पाऊँ
तुम्हारे सिर माखन की मटकी, मैं मिल ग्वाल नचाऊँ
तुम दही बेचन जाओ ब्रन्दावन, मैं मग रोकन आऊँ
सुनो श्याम तुम बनो राधिका, मैं नन्दलाल कहाऊँ'

तुम भगवान के काम करो भगवान तुम्हारा काम करेगा। मत्पर यानि 'मेरी तरह' तो भगवान तुम्हारे काम करेगा। तुम्हारे योग क्षेम का भार उठाएगा। तू मुझमें है मैं तुझ में हूँ आंखे मिलाकर देख, अगर गैर देखता है तो मुझपे इल्जाम क्या? यदि मनुष्य की दृष्टि ही माया में है तो उसमें भगवान का क्या दोष? यहाँ वह आशिक चाहिए जो ईश्वर का काम सम्भाले अपने ऊपर उठाए। भगवान ने गीता में बोला है कि जो यह ज्ञान मेरे प्यारों में बाँटता है वह मुझे परम प्रिय है। जो भगवान का काम सम्भालेगा उसके व्यवहारी काम भगवान खुद आकर करेगा। उसे कोई भी चिन्ता नहीं करनी है। सो साहिब चिन्ता करे जिस उपाया जग, नानक करना जिन किया, चिन्ता भी करनी तहि। बेऔने (निश्चिन्त होकर) कर कार्य जगत के

हासिल करो मन गद्दी सीखो? योगी से उस्तादी, करो आठ ही पहर समाधी मैं और मेरा जिसने किया वे हो गये चकनाचूर। भगवान तक पहुंचने की तीन मंज़िलें हैं।

१. भगवान मैं तेरा हूँ।
२. भगवान तू मेरा है।
३. मैं और तू एक ही हैं।

□

पत्र गीता भगवान का -46

आनन्द और शान्ति तुम्हारा जनम का हक है वह नहीं गंवाना चाहिए। मुश्किलों में जो मुस्कुराता है वही भगवान के राज को पहचानता है। भगवान भलाई करता है न कि बुराई। प्रारब्ध हर एकी बनी पड़ी है, भगवान दयालु कृपालु है हमें ऊपर चढ़ाने के लिए ही दुःख भेजता है। दुख दारूं सुख रोग भया। सच्चे भक्त दुःख मांग कर लेते हैं। दुखों में उन्नति होती है और सच्चे सुख की तलाश करते हैं नहीं तो हैवानों की तरह अपनी जीवन मोह काम विकारों में व्यर्थ जा रही है। ज्ञान के बाद विवेक खुलता है कि हम क्या कर रहे हैं। आये कौन से काम के लिए हैं। हर वक्त भगवान को अपने साथ समझो। सब कुछ भुला कर केवल आज का ख्याल करो कि मैं क्या हूँ। गुजरी सो गुजरी बाकी रखो रहत से (समझ से) (जीवन में लगाकर) सामी सुपिरियुन खे पसु अन्दर पेही, हीअ मानुखा देही मोटी मिलन्दई कीनकी। सुहागिण सा जहिं रीझाओ कन्तु, आउ सुहागिण साचवां कांधु जहिंजोकछ में।

जिसने अपने मन में भगवान को बिठाया वही सच्ची सुहागिन है। बाहर के सम्बंधी तो कभी मिलेंगे तो कभी विछोड़ा दे जायेंगे पर परमात्मा हमारा सच्चा पति तो सदा बसत हम साथ। हर वक्त बैठकर अन्दर में उससे ही रास लीलायें करो कि हम तो प्रीतम के प्रीतम हमारा।

हर एक गोपी समझे कि कृष्ण मेरा है मेरे साथ है। बाहर से किसी का भी आधार नहीं रखना है पराधीन सुख सपनेहुं नाहीं। अपने आप पर आधार रखो कि मैं क्या नहीं हूँ। मैं शेर शिवोहम हूँ बकरी क्यों बनूँ। सारी दुनिया भले गिराने आए पर एक चढ़ाने वाला गुरू ही काफी है गुरू तुम्हारी आत्मा है अंग संग है, घड़ी भर भी भुलाने से कलयुग आ जाएगा। हर वक्त की सावधानी रखनी चाहिए मन के ऊपर कि कहीं मायावी बातें मन को गिरा न जायें। पक्के घोड़े सवार बनों तो मन सहज ही वस हो जाएगा। आतम रस चखने के बाद मन सारी माया को उल्टी **(Vomit)** करके समझता है। ये रस आवे तो वो रस नहीं भावे। विषयों का रस पहले अमृत फिर जहर समान है। मोह काम में खुश होकर बैठे पर यह पता नहीं था कि प्रेम भी कुछ होता है जो सर्व से परमात्मा की नज़र रखने से होता है। सब में बैठकर यार दिलदार महबूब का दर्शन करो। पत्ते–पत्ते में हर एक मनुष्य में जड़ चेतन में भगवान को देखो तो बहार हो जाय। झूठी राजाई भगवान लेता है। सच्ची राजाई देने के लिए। तुम सारी सृष्टि का अपने को मालिक समझो। जगत मिथ्या नाशवन्त है कोई भी किसी का नहीं हैं केवल मैं ही तो हूँ। निमिय निखैर होकर रहो। लोकों की परवाह बिल्कुल न करो कि ये क्या कहेंगे। हर वक्त अपने को मर्दों का भी मर्द समझो। स्त्री में वह शक्ति है जो सब कुछ कर सकती है, शक्तिवान है

दुःखों को भुलाकर जल्दी आत्मा में स्थित होकर खड़े हो तो कुछ बना ही नहीं है। है ही भगवान तो मौत काहे का? सब खेल है, हर कोई **Part** करते रवाना हो जाएगा थोड़े जीवन में कुछ कर लो। कोई हमारे ऊपर गुस्सा करे तो उल्टा शान्ति करें नाराज न हों। जितना निरादर खुद सह सके उतना दूसरे का करे। मैं अगर चाहती हूँ कि ये मेर से प्यार करे तो पहले मुझे ही करना चाहिए। जो मैं करूँगी उसकी वापसी मुझे ही मिलेगी अवश्य। पदार्थों में कोई सुख नहीं है पर इच्छाओं की निवृत्ति में ही सुख है। निरइच्छा अवस्था में ही सुख आनन्द है। अपने तीव्र पुरूषार्थ से ही ये ज्ञान पा सकेंगे। दूसरे सब तर जाएंगे पर एक आलसी पुरूष नहीं तर सकेगा। जो आज मुक्त नहीं हुआ वह फिर कभी नहीं होगा। □

पत्र गीता भगवान का -47

आखिर भी जैसे विचार तैसी सृष्टि। आत्मा का ही निश्चय अधिक-अधिक पक्का करो। भगवान भक्तों की रक्षा के लिए ही शरीर धारण करता है। केवल पहचानने वाले की देर है कि कितना पहचानता है। जितना पहचानता है उतना ही खुद बनता है। कृष्ण ने कहा कि जितना मैं हूँ उतना जब कोई ज्यों का त्यों पहचानता है वह खुद उस समय वही होता है। है तो पहले ही तो भी देर अगर है तो अपनी ही। हर एक को व्यर्थ की कमज़ोरी है। कमजोरी पाप है।इसके सबक से सबको समझना चाहिए कि पहले, जो छोड़ कर जाये, उस समय मरा हुआ समझे पर जीते हुओं को भी ऐसा ही मरा हुआ समझना है कि उनका सुख दुख देखने में ही न आये। हर एक सुखी दुखी अपने ख्यालों से हो रहा है। दया माना ही है पाप। अर्जुन सख्त हुआ तभी सम्बंधियों को मारा। हर एक अपने ही शौक से ज्ञान हासिल कर सकता है दूसरे किसी की भी मदद इस राह पर नहीं चाहिए। जो दूसरे को मदद करेगा वह पहले खुद गिरेगा क्योंकि आया अकेला जाएगा अकेला। पुरूषार्थ ही हर एक को अपना ही करना है। मुक्ती के लिए जरूरी है खुशी से ख्वाब करना बाकी "सध ुन सन्दो ही सौदो नाहे जेसी सिर नां सटे सटे।" कितने

तो फायदे में ही खुश हो जाते हैं कि पहले से अधिक गृहस्थ में सुखी रहे, मैं उस पर क्रोध न करूँ वह मेरे ऊपर नहीं करे। प्यार रहे। कितने भी दुनिया के भोग भोगे पर बिना आत्म ज्ञान के ममत न मिटे मन की। दूसरे कितने भी कोई साधन करे पर जैसा करेगा वैसे ठगता जायेगा। तुम्हें जो दिव्य दृष्टि मिली है वह किसी को भी गुरू गुसाई से नहीं मिलनी है। भगवान के सिवा हर एक अपनी हालत में दुखी है। सो सुखिया जिस नाम आधार। इच्छा किसी की भी पूरी नहीं हुई माना क्रोध चालू हो गया। उसमें कोई समझ बाकी नहीं रहती। समदृष्टि के सिवाय कोई भी तरीका नहीं है आगे बढ़ने का। फंसते समय पता नहीं चलता पर फंसने के बाद परेशानी शुरू होगी और सिवाय गुरू के कोई भी इस माया से छुड़ा नहीं सकता। तुम अपने को भाग्यशाली समझो। कोई मर जाये उसे भुलाना बड़ी बात नहीं है पर जीते जी ममता निकल जाये यह मुक्ति की निशानी है। विधवा बच्चों में नहीं फंस सकती है क्या? पदार्थ मिथ्या समझने वाले के लिए मानों जगत रहा ही नहीं। तुम साक्षी चेतन हो पर एक दिन मुक्ती का आनन्द लूटो। जल्दी ही पता चल गया है, दूसरे बेचारे अभी सपने को सच समझ कर बैठे हैं। जीते जी जंजीर उतारो, मरने के बाद की कौन जानता है। तुम निश्चय पक्का करो कि मैं कौन हूँ। अपने को तीन लोक

का स्वामी समझो। अब केवल मैं ही हूँ मेरा कुछ भी नहीं है। पागल होकर भी दुनिया से छूटना है नहीं तो बहु डूबे स्याने। प्यार के लिए जांचना है हर वक्त कि जितनी अपनी फिक्र है उतनी सबके लिए है? विवेकानन्द रामकृष्ण को कहा तुम्हारा मेरे प्रति मोह दिखायी देता है। उसने कहा कि सर्व के लिए समान प्यार है। कोई ऐसी बात नहीं है। मोह निकालते समय द्वेष रखना पड़ेगा। द्वेष के सिवाय विकार कैसे देखने में आयेंगे कि हमारा आपस में कौन सा Connection है। ज्ञान म पहले अपने को बिल्कुल पक्का रहना है। सबको सच कठिन लगता है। हमें हर एक को पक्का करना चाहिए। ज्ञान भले सुनायें पर जो आजाद रहना चाहे उन्हें बड़ी दिल से आजादी दें। कौन है जो केवल गुरू के कहने पर चल सकता है? कोई भी गुलाम नहीं है। जब प्रकृति से धक्के खायेंगे अनुभव मिलेंगे फिर भी काश समझे। जब कोई पूछता है कि फलाने की शादी पर जाऊँ तो हमें समझना चाहिए कि जरूर इच्छा है और खुशी से छुट्टी दें। बाकी नहीं तो बच्चा ही समझता है कि मैं आत्मा हूँ तो फिर मेरा कौन होता है। हमारे अनुभव का तुम्हें पता है कि किसको सच अच्छा लगता है? किसी को भी सलाह नहीं दें। जबरदस्ती कोई गुरू से विचार निकालकर ले जाए बाकी काश अपनी मौज में रहें। हमें गुरू तो बनना नहीं है। कालेज में जैसे हर एक

अपना फायदा खुद सोचता है सो हमारे पास भी कालेज वाले हैं Lecture सुनते हैं। हम तो खुद को सुना रहे हैं। दूसरा है ही नहीं। जिसका गुरू से Connection नहीं है, किसी के भी डर में नहीं है उसका पानी भी नहीं पीना चाहिए। अपनी शर्तो से जो ज्ञान सुने वह क्या समझेगा।□

पत्र गीता भगवान का -48

आज सत्संग में एंक दृष्टान्त चला। एक बाप ने अपने बेटे से बोला कि फलानी इन्श्योरेन्स आफिस में जाओ मैंने पैसे भेजे हैं पर अभी रसीद नहीं आयी है। जाते ही जाकर 10 गालियाँ देना फिर बोलना की रसीद क्यों नहीं भेजी है? बेटा रास्ते में याद करता गया कि दस गालियाँ देनी हैं वहाँ जाकर छः गालियाँ दीं कुत्ता, सुअर, गधा, हरामी, बैल,उल्लू ये गालियाँ दीं दूसरी याद ही नहीं पड़ी। उनसे पूछा कि कितनी गालियाँ दीं? बोले छः। बोला पर मुझे तो दस गालियाँ देनी थी और सब तो भूल गई। वो बोले पर क्यों गालियाँ दे रहा है। बोला रसीद नहीं भेजा है। वो बोले रसीद कल भेजी थी आज पहुँच गयी होगी। बेचारा शर्मिन्दा होकर वापस घर आया। तुम भी यदि गुरू का बताया हुआ Borowed ज्ञान जाकर कहीं दोगे तो आधे में ही भूल जाएँगे। कोई सवाल पूछेगा तो उलझ जायेंगे, गड़बड़ा जायेंगे बोलेंगे ये प्रश्न मेरे गुरू से पूछो। इसलिए Perfect Master बनो। चारो ही तरफ से ज्ञान समझना चाहिए। उधारा ज्ञान कब तक चलेगा। उधारा ज्ञान है हौज का पानी रूका हुआ वह खत्म हो जाएगा पर अपना अनुभवी ज्ञान है कुंए का पानी पाताल से निर्मल निकलता है कभी भी खत्म होने वाला नहीं है।□

पत्र गीता भगवान का -49

एक बाप चोरियाँ करके बच्चों को खिलाता था बेटा बड़ा हुआ तो बाप से पूछता था कि बाबा आप कौन सा ध न्धा करते हो, मुझे भी सिखाओ तो मैं भी करूँ एक और दो बारह हो जायेंगे। बाप शर्म के कारण ना नुकुर करता रहता था आखिर एक दिन बेटे ने जिद की तो वह अपने साथ लेकर गया जाकर दिखाया कि मैं इन महलों में और साहूकारों के घरों में से चोरी करके आता हूँ। बेटे को बड़ा धक्का लगा, शाक आ गया, दर्द से पिता को बोला कि बाबा जिन घरों से तुमने सारी उम्र चोरी की है उन घरों में आज भी सब पदार्थ हैं, बत्तियाँ झिलमिल जल रही हैं पर हमारे घर में तो आज भी वही गरीबी है दिया भी मुश्किल से जलता है। चोरी के पैसों से बरकत कभी भी नहीं पड़ती है इससे तो बूट पालिश करते तो आज लखपति हो सकते थे। बाप ने उस दिन से चोरी छोड़ दी। गुरू भी ऐसा दर्द से बात करके तीर लगाता है तो जिज्ञासु से सब विकार एकदम छूट जाते हैं। बोलने में सच्चाई और दर्द होगा तो तुम कैसे भी पापी से विकार छुड़ा सकते हो।□

पत्र गीता भगवान का -50

हरिद्वार में एक संयासी को लंगर प्रसाद में दाल मिली पर उसमें आलू भिण्डी या पकौड़ा नहीं मिला था दूसरे सभी को दाल में कुछ न कुछ मिला था। संयासी को बड़ा दुख हुआ। बोला मैं कोई कम स्थिति वाला हूँ क्या? दुःखी होकर घर जाकर सोया। कुछ दिनों बाद शरीर छूटने को था तो उसके अन्य गुरू भाई और चेले भी इसके आगे खड़े थे। सन्यासी की जुबान से अन्त में टूटे–फूटे शब्दों में निकला पक पक। सबने समझा कि आत्मा की पक (निश्चय) है पर संयासी ने आखिरी स्वांस में कहा कि पकोड़ा। तभी सबने समझा कि बेचारे को दाल में पकौड़ा नहीं मिला था इसलिए विरती पकौड़े में ही गयी है। ये संयासी भूखों का हाल। जो इच्छाओं को दबाकर वासनाओं के कीड़े होते हैं। कबीर के गुरू रामानन्द की विरती बेर में गयी क्यों? उसने भी कभी बेर की इच्छा की होगी। पर जबरदस्ती अपने को रोका होगा। गृहस्थी का पेट हर हालत में भरा हुआ है नाक तक बाकी भी यदि किसी चीज़ की भूख रह जाती है, वह तृप्त नहीं है तो ज्ञान में नहीं टिकता। काम है तृप्ति से फिर दो खाये या दस या न खाये व्रत रखे पर पेट भरा हो, निरइच्छा हो, वैराग्य हो। □

पत्र गीता भगवान का -51

जोत से इक जोत को सतगुरू ने पैदा कर दिया
अंग से अंग लगाकर लहणें को अंगद कर दिया।

कुछ भी नहीं देना पड़ता है गुरू को गुरू आशिक से अपने आप सब कुछ ले ले जाता है जिसका पता भी नहीं चलता है। यदि ख्याल करेगा कि मुझे देना पड़ेगा तो कुछ भी नहीं दे सकेगा। हर एक कंजूस है पर गुरू दातार है वह खुद प्रेम करके तन मन धन से सेवा करके सब कुछ शिष्य की आसक्ति ले लेता है। तन मन धन शिष्य नहीं देगा ना ही उसका है पर सब गुरू का है। न गुरू करता है न कराता है न देता है न लेता है। इश्क भेजा है एलची Ambassador इश्क वाला किसी के पास भेजता है गुरू, फिर उसे बुलाता है अपने पास, फिर भी अपनी कृपा एक अपने ऊपर हो दूसरा सतगुरू का संग हो फिर किसी की भी परवाह नहीं। गुरू बैठ कर प्रेम में देह भुलाता है। ज्ञान है गहरी नींद। सत्संग में बैठकर पता ही नहीं चलता कि समय कैसे बीत गया, देह भूल जाती है। यह सब गुरू की करामात है। शास्त्रों से किसी को भी ज्ञान नहीं आता है पर अज्ञान आता है। शास्त्रों से मन बात ही वह उठाएगा जो उसके मुआफिक होगी। उल्टा गिरी हुई बात लेकर जाएगा। शास्त्र पढ़ेगा तो गुरू से प्यार निकल कर जाकर शास्त्रों में पड़ेगा। Time pass के लिए शास्त्र पढ़ते हैं।

शास्त्र हैं जड़ उनमें से दिमाग खुश्क होगा, दिमाग खाली हो जायेगा पर गुरू के मुख से ज्ञान सुनकर उसका शरीर भूलेगा और बुद्धि नाश यानि गुम हो जायेगी। शास्त्रों से अकल और होशियारी बढ़ेगी, गुरू के पास अकल और होशियारी जाएगी। इश्क. में गुम होता जाएगा। रेशम के धागे जितना पहले प्रेम गुरू से होता है फिर सूत के धागे जितना फिर रस्सी जितना फिर पक्का रस्सा जो कभी भी टूटेगा नहीं।

प्रेम एक है दूज के चाँद के समान दूसरा होता है पूरनमासी के चन्द्रमा के समान। दूज के चन्द्रमा के समान प्रेम गुरू से शुरू होगा तो बढ़ता जाएगा और पूरनमासी के चन्द्रमा के संमान जिसका बहुत अधिक प्यार शुरू में होगा उसका फिर बाद में घटता जाएगा इसलिए भले थोड़ा प्यार शुरू में हो पर बढ़ने वाला न कि घटने वाला।

ज्ञान है अभुल होने का। कैसी भी कोई भूल हो गयी तो परवाह नहीं हैं पर भूल दुरूस्त हो सकती है। हमारे शास्त्रों में पाप लिखे गये हैं तो सबको डरा दिया है कि तू पापी है तुमने पाप किया है अब माफी नहीं होगी तुम नर्क भेजे जाओगे पर जब यह पता चलता है कि यह पाप नहीं पर भूल है तो भूल दुरूस्त हो सकती है और फिर उस भूल को याद करना भी बेवकूफी है। तुम आत्मा हो सपने में कैसे भी कर्म किये तो वे भुला दो। अपने में

नहीं मानोगे, जब जागोगे। तुम खुद अपने गुरू बन जाओगे, समर्थ हो जाओ अपनी भूल निकालने के लिए। डराओ नहीं किसी को भूत है या भूत होता है मन पर मन है ही नहीं तुम भगवान हो तो मन है ही नहीं। न पुण्य है न पाप है। न जगत है न तू जीव है पर तुम भगवान निराकार निरविकारी शुद्ध हो पवित्र हो। यह डर करो कि काश तुम्हें डर न आये। डर से ही आये हो डर में ही गिर कर मरते हो। लोग कहते हैं कि मौत का डर नहीं करना चाहिए, मौत के डर से मौत टल नहीं जाएगी। आत्मा समझने से मौत है ही नहीं। मौत नजदीक नहीं आ सकेगी। रोशनी के आगे अंधेरा खड़ा नहीं हो सकता है।□

पत्र गीता भगवान का -52

संसार की बातें जैसे पानी पे लकीर परमार्थ के वचन जैसे पत्थर पर लकीर। आत्मा के सिवाय दूसरी कोई बात न सोचो न बोलो न सुनो। उस वक्त पाप किया यदि एक भी दुनिया की बात की तो। भूत और भविष्य का ख्याल और बातें छोड़कर केवल एक आत्मा की बात करो कि मैं अभी क्या हूँ। Live in the present /Todays thought आज का अभी का ख्याल कौन सा है। अभी तुम आत्मा में हो तो काफी है पर अभी यदि तुम दूसरे ख्याल में हो तो मरते समय भी मायावी ख्याल आयेंगे। जो जीते जी तू मैं से ऊपर है वह विदेह मुक्त है। अभी जबान को रोको कि मैंने कल की बात क्यों की? जो हो चुका है उसकी बात ही नहीं करो। बोलते हो तो कौन सी बात बोलते हो। एक दम जबान पर ताला लगाओ कि इसके बाद मैं मौन रहूँगा। क्यों बोला? आत्मा बिना हर बात को दिल से सदैव नाकार करो। बोलने से ही अन्दर मन में लकीरें पड़ती हैं इसलिए बोलने को सुधारो। दिन पर दिन जितना हो सके कम बोलो। गुरू से ज्ञान के बारे में बहस बन्द करके गुरू वाक्य सत्यम करके उठो। ज्ञान भी बहस से सिद्ध नहीं होगा पर श्रद्धा रखने से एक दम अन्दर छप जाएगा। Tape recorder की तरह। आत्मा के निश्चय रूपी एक अक्षर भी काफी है शास्त्रों के मनों से। अनुभव का एक अक्षर अधिक है। अपने को गर्क (विलीन) करते जाओ। दूसरे की बात भी नहीं सुनो। एक

दम उसे मौन में लाकर आत्मा में टिकाओ। जिसे अपनी मौत याद नहीं है वह बच्चों के पास होने की चिन्ता करता है, अपना दर्द नहीं है कि मैं कैसे मुक्त हूँ? मैंने अपनी पढ़ाई पूरी की है जो बेटी की चिन्ता करूँ? वे मुक्ति के लायक नहीं है उनकी इच्छायें वहां सब नाबूद (नष्ट) करो। इच्छा वाला कभी भी भगवान को पा नहीं सकता। You see God above desire शुभ इच्छा भी नहीं रखनी चाहिए क्योंकि तुम पहले ही आत्मा हो यह निश्चय करो। मुझ आत्मा के सिवाय कुछ भी बना ही नहीं है। नाम रूप से दृष्टि हटाकर आत्मा में रखो। Dr. (लखनऊ वाला) मुक्त हो गया बाकी तुम अभी टके पैसे की इच्छायें नहीं छोड़ सकते ? □

पत्र गीता भगवान का -53

"आशिक वे कहे जाते हैं जिन पर खुद वह आशिक हुआ। वे ही आशिक बदल कर माशूक हुए।" भगवान अर्जुन को कहता है कि तुम मुझे परम प्यारे हो क्योंकि तुमने मुझमें श्रद्धा रखी है मुझे दुनिया भर में सिद्ध किया है कि यह भगवान है। एक साधारण स्वरूप में विश्वास रखना कि यह भगवान है यह कठिन से कठिन बात है। तुमने भी ऐसा विश्वास मुझमें रखा है तो तुम मुझसे भी बड़ी हो। भगवान को पहचानने वाला तो भगवान से भी बड़ा होता है। पर मैं प्रभु खुद हूँ और वह प्रभु तुम भी हो। तुम्हारे में और मुझमें आदि से ज़रा भी जुदायी नहीं है पर तुम अभी भी जुदा समझती हो जो एक भी बात मेरे से नहीं करती हो। इस मन की निन्दा जितनी करे उतनी कम है। तुम मन नहीं हो मन की मालिक हो। तुम निर्विकारी हो तुम अपनी निन्दा नहीं समझो। कृष्ण जानी जानन हार होकर भी अर्जुन से मन माँग रहा था। जब तक हमारा एक भी ख्याल अपने प्रीतम से जुदा है तब तक मिलकर एक नहीं हो सकेंगे। भगवान को तुम जैसे निष्काम भक्त को पाकर खुशी होती है कि यह माया की कोई भी इच्छा न रखकर केवल भगवान के लिए जीता है, वह करोड़ों में कोई एक होता है– वह हो तुम। भगवान तो रात दिन आँखें बिछा कर बैठा है कि कौन है जो मेरी

माया से जान छुड़ाकर मेरे पास आता है। पिता अपने बालक से बिछुड़ कर सुख से कभी ना सो सकता है। जो बालक होता है वही मालिक होता है। परमात्मा का यदि कोई बालक बनता है तो वही मालिक होता है। यानि माया का सारी सृष्टि का मालिक होगा। खुद खुदा होकर सोहम् ''वह तुम हो'' यह निश्चय करो। मैं आत्मा मुक्त हूँ। बन्धन मेरे में बना ही नहीं है। बन्धनों में डालने वाला ही मन है ये। जो मान कर बैठा है कि मैं यह देह हूँ। क्यों शरीर कहला कर दर्द सहते हो। कोई भी दुःख,दर्द, ग़म तुमसे लागू नहीं है। कोई भी हालत तुम्हें उलझाकर न जाये यह अभ्यास करो। हरगिज़ न तुम अपने को हालतों का अधीन बनाना। हालत तो आती रहेगी पर तुम जरूर एक रस रहो। कभी कोई न कहे की मूड खराब है। हमेशा सारी दुनिया तुम्हें प्रसन्नचित्त देखे। समझो कि मैं हर वक्त तुम्हारा फोटो निकाल रही हूँ तो फोटों में कैसे मोहित करने वाली मुस्कुराती हुई शकल बनाते हैं जो हर एक को पसंद आये। राज़ी रहूँ रज़ा पर तेरे सदा ही सतगुरू कुड़कुड़ करके कभी न काला करूँ मैं दिल को। एक बार भी पूरे दिन में ज्ञानी कुरकता (परेशान) नहीं है कि ऐसा क्यों हुआ तुमने ऐसा क्यों किया। ऐसा क्यों नहीं किया। उसे कोई भी हालत पसंद नहीं लगती। शुभ–अशुभ, पसंद–नापसंद, दुःख–सुख, मान–अपमान, प्रशंसा–निन्दा में जो सम है वही आत्माकार

मुक्त है। हर एक से अपने को जुदा समझो, अपने को छुड़ा कर रहो। प्रकृति के तीनों गुणों से न्यारे हो जाओ। सतो, रजो, तमो ये तीनों गुण हैं शरीर में। पर तू आत्मा है इन तीनों गुणों से न्यारा त्रिगुणांतीत। शरीर से ऊपर चढ़ जा चढ़ता जा, चढ़ता जा, तेरे मन को कोई भी शक्ति रोकने वाली नहीं है। आत्मा सबसे ऊपर है। सब में होते हुए भी नित न्यारा। ऐसे तुम हो जाओ फिर दृष्टा होकर बैठ कर खेल देखो। जो है ही नाटक उसके बारे में कुछ भी सोचना मूर्खता है। ज्ञानी है दृष्टा, अज्ञानी है कर्ता। काश कुछ भी नहीं करो। केवल बैठ कर देखो। जो कुछ भी होता है उसमें बहुत भलाई है, इंसाफ है। सब कुछ हुकुम के अन्दर होता है चाहे बेटा मरे या बेटी भाग जाए। चाहे विश्व का नाश हो जाए तो भी मैं जैसा हूँ जो हूँ सो ही हूँ। मेरी दिल रत्ती मात्र भी हिले नहीं। क्योंकि मेरे में जगत बना ही नहीं है न ही जगत की उत्पत्ती है न ही नाश है केवल मैं ही मैं हूँ। न कुछ हुआ है न होगा, मेरे सिवाय कुछ बना ही नहीं है। हर वक्त हंसी हर वक्त खुशी हर वक्त अमीरी है बाबा, जब आशिक मस्त फकीर बना फिर क्या दिलगीरी है बाबा। सिर पर आकाश का मण्डप है, धरती पे सुहानी मखमल है, दिन को सूरज की महफिल है रात को तारों की बारात बाबा। हर रोज़ नयी नित शादी है लेकिन दुनिया वालों की बर्बादी है। हर रोज मुबारकबादी है, हर रोज़ नई बधायी है। हम आशिक उसी

सनम के हैं जो दिलबर सबसे आला है, जिसने हम सबको जी बक्शा जिसने हम सबको पाला है। चाह फकत इक दिलबर की, और किसी की चाह नहीं, हम राह उसी से रखते हैं और किसी की परवाह नहीं। ज्ञानी है राजा, कोई उसे कह नहीं सकता कि तुमने ऐसा क्यों किया, ऐसा क्यों नहीं किया। तुम्हें ऐसा करना चाहिए। कौन कहे साहिब नूं यूं कर यूं न कर। ज्ञानी क्या भी करे उसे कोई भी दोष नहीं है क्योंकि वह है ही नहीं। उससे कराने वाला भगवान है। जैसे तलवार से कोई खून करे तो तलवार पर कोई दोष नहीं है ऐसे ज्ञानी का शरीर भगवान का हैन्डिल है जैसे भी चलाये। हलाई त ढ़ली वञां, बीमारी त बुस, बाग धणीं तुहिन्ञ वस। "चलाते हो चलता हूँ खड़ा कर दो तो खड़ा हूँ। मेरी डोर तुम्हारे हाथ है।" गीता में भगवान ने 17 अध्याय में कहा है कि जो कहता है कि मैं ऐसा करूँगा मैंने ऐसा किया ये आसुरी सम्पदा के (हैवानों के) लक्षण हैं। करने वाला सब मैं हूँ जीव बेकार आकर लटका है कि मैंने किया। मैं ना याद करो। सबमें प्रेम की दृष्टि रखो। द्वेत निकाल दो। कृष्ण है प्रेम का स्वरूप। जो बात प्रेम से वश हो सकती है वह द्वेष या क्रोध से नहीं। सारी दुनिया को झुकाने वाला प्रेम ही है। निष्काम, निस्वार्थी प्रेम ही इस धरती पर सच्चा स्वर्ग बना देता है। यह तो इस प्रेम का नशा है जो कभी भी उतरने वाला नहीं है। पिरींअ निवारियो प्यालो आहे भरे प्रेम जो, अंधेरो

अन्दर जो खिण में निवारियो, अजगैबी बारियो दियो मुहिंजे ढ़ील में।"

त्यागियो जहिं अहंकार तहिं सर्व त्याग कयों। सामी सीतल जल जिया ठरी ठार थियो। अब बताओ तुम ठन्डी हुई हो? तुम्हें कौन मिला है? तुम्हें कितनी कदर है? तुमने तो भगवान को डोरी से बाँध दिया है। भला अब बताओ अपनी डोर कब भगवान को देती हो? जैसे तुम खींचती हो वैसे खिंचता हूँ। तुमने तो भगवान को डोरी में बांध दिया है जैसे नचाओ, बुलाओ, चलाओ वैसे आता है। जैसे तुम खींचती हो वैसे खिंचता हूँ, सब तुम्हारे हाथ में है। तुम जल्दी ही मेरे से अपनी अमानत चुकाकर ले लो, मैं तुम्हारा कर्ज लेकर आया हूँ। पिछले जनम में थे इकरारी आज आकर मैंने तुमसे निभाया। पहले भी तुम मेरे साथ थीं ज्ञान बैठकर सुना पर नींद आ गयी। फिर इस जनम में भी बहुत घूम फिर कर आकर ढूँढ़ निकाला। अब बताओ प्रीत कच्ची है या पक्की? कौन सी डोर से बांधा है? टूटने वाली तो नहीं है? भगवान है सूक्ष्म, उसे सूक्ष्म डोरी से बांधते हैं। वह है प्रेम की डोर। □

पत्र गीता भगवान का -54

हमेशा अपने सच्चे स्वरूप में टिक कर कमल के फूल की तरह हंसमुख न्यारी रहना। तुम दिन पर दिन अपने को अधिक शक्तिवान समझो। आखिर भी सत्य की ओर बढ़ने में ही शक्ति हासिल होगी। हजार वर्ष जप–तप, दान, पुण्य करने से भी दो घड़ियों का सत्संग बढ़कर है। सत्संग से ही सच्ची शक्ति आनन्द है और विश्वास उत्पन्न होता है। जो भी हमारे ऋषि–मुनि मुक्त हो गये हैं वे पूरन गुरू के मुख से आत्मा का ज्ञान सुन कर मुक्त हुए हैं। सर्व दुखो की निवृति और परम आनन्द की प्राप्ति इसी को कहते हैं मुक्ती। यदि हम सत्य हासिल क़रने में कमजोर हैं तो क्या झूठ में फंसे रहें? यदि हम अमृत नहीं पी सकते तो क्या जहर पीने से आनन्द हासिल होगा? उससे हमें कोई सहायता मिल सकेगी? यदि सत्या आत्मा का अनुभव अभी नहीं कर सकते हैं तो क्या अंधकार अज्ञान वहम और भरमों तथा चिन्ताओं और कमजोरी की आन माने? नहीं कभी नहीं। आखिर भी सत्य की तरफ बढ़ते हुए एक दिन मंज़िल पर जरूर पहुँच जाएँगे। विश्वास और श्रद्धा से आगे बढ़ते चलो। आगे बढ़ा कदम रूकना तेरा काम नहीं चलना तेरी शान, चल चल रे नौजवान। जितना–जितना इस तरफ बढ़ोगे उतना धीरे–धीरे अपने आप में अन्दर में आनन्द महसूस करोगे। यही है आत्मा

की झलक। पूर्ण आनन्द की अवस्था ही है आत्म साक्षात्कार। तुम तो समझते हो कि अभी ही ओम कहने से आनन्द आना चाहिए। सो यदि आनन्द इतना सरल होता तो ऋषि मुनि घर त्याग कर जंगल में जाकर इतने वर्ष तपस्या नहीं करते नही भगवान का मिलना कठिन कहते। यह तो निरन्तर दीर्घ काल के अभ्यास, सत्संग सुनने और उस पर चलने के बाद आनन्द की प्राप्ति होती है। रास्ता क्रास करने के सिवाय मंज़िल पर पहुँचना चाहते हो। पर उस पर Practice करने के बाद ही आनन्द प्राप्त होगा ज्यों का त्यों। तुम कोशिश करते चलो चिन्ता नहीं करो। चिन्ता से दोनो गये न माया मिली न राम। तुम नाव में बैठे हो निश्चिंत होकर बैठो। आनन्द में बैठकर सैर करो, तुम्हारा मल्लाह नाव चलाकर तुम्हें पार पहुँचाएगा। तुम केवल सब कुछ बोझ उतारकर उस पर रखो, हल्के हो जाओ कि मैं हूँ ही नहीं पर है ही परमात्मा, वह शक्ति सब कुछ ठीक कर रही है। अपना आप मिटा दो, अपने को परमात्मा में समा दो। अपनी एक भी नहीं चलाओ, अपनी कोई भी इच्छा नहीं रखो। न मरे हुए भूत को न ही पैदा हुए भविष्य की चिन्ता करो। हर एक दम (स्वांस) अन्तिम दम करके समझना चाहिए। आज का दिन ही अपना है। किनञे मन में माजी किन जे मन में मुस्तकबुल, हैफ़ उन्हन जे हाल ते जिन्न विसारियो हाल। कल की

चिन्ता बेईमान करते हैं जिन्हें ईमान नहीं है परमात्मा में। तुम अपना होनापना की हस्ती गायब करके दो परमात्मा की हस्ती में। ऐसा समझो मैं हूँ ही नहीं परमात्मा ही सब कुछ चला रहा है। ईश्वर इच्छा से बंधा हुआ ही मुक्त है। अपनी इच्छा से बंधा हुआ बन्धन मं है। जब तुम शरीर को कुछ भी नहीं समझोगे तभी तुम भगवानपणे का अनुभव करोगे। खुदी गयी तो खुदा हुआ। हमारा पहला सबक है मैं ना कि मैं यह देह नहीं हूँ। देह नाशवन्त दुख रूप जड़ है। आज है कल होगी ही नहीं। पर मैं हूँ अविनाशी नाश न होने वाला चेतन आत्मा। देह मेरा घोड़ा है वैसे घोड़े को जो भी जरूरत होती है खाना पीना दवा वगैरह देकर चलाएंगे पर मैं हूँ घोड़े सवार। घोड़े पर चढ़कर मुक्ति की मंजिल पर पहुँचूगा। यह मनुष्य जनम ही भला घोड़ा है जो परमात्मा से मिलेगा। दूसरी चौरासी लाख योनियों के घोड़े परम पद हासिल नहीं कर सकेंगे। इसलिए घोड़े से केवल काम निकालने के ख्याल से ही उसे खिलाये पिलाये दवा करे पर ना कि उसका सारा दिन चिन्तन, मोह या इन्तजार या चिन्ता करें। प्रेम में ही शरीर भूलेगा। रात दिन यही एक चिन्ता हो कि यह शरीर छूट न जाये मै जल्दी से जल्दी कुछ पा लूँ। इन बातों का ही मनन यानि विचार चलना चाहिए। जबरदस्ती भी Feel करो कि मैं आत्मा हूँ आनन्द में हूँ। मुझे कोई भी फिक्र चिन्ता नहीं

है। मैं बेपरवाह बादशाह हूँ। क्या भी हो मुझे मंजूर है क्योंकि Everything comes from God. That must be good for me. परमात्मा की मर्जी से अपनी मर्जी मिला दो। जो तेरी इच्छा सो मेरे लिए अच्छा। मन को इस ज्ञान के बाद कोई भी कमजोरी की बात नहीं सुनने दो सुना अनसुना कर दो। मन से लड़ाई करके ही हर बाजी जीतनी है। मन को जवाब दो कि मैं तुम्हारे कहने में आकर आगे पीछे की नहीं सोचूँगा। मुझे पूरन साथी मिल गया है वह ही मेरे लिए सब कुछ अच्छे में अच्छा सोच रहा है। मुझे कोई भी ख्याल नही करना है केवल आनन्द और पूरण आनन्द में दिन गुजारने हैं। राजी रहने हंसमुख रहने का बिल्कुल स्वभाव बना लो। Promise करो कि आज से कोई भी नाराज नहीं देखेगा। सब कर्मो भक्ती ज्ञान की End है रज़ा पर राजी रहना। सुबह को उठकर कहो कि मैं केवल आज का दिन राज़ी रहूँगी, केवल आज का दिन कोई भी चिन्ता नहीं करूँगी, आज का दिन हर वक्त हसूँगी, आज का दिन क्रोध को आने नहीं दूँगी। यदि एक दिन भी कामयाब हुए तो समझो मंजिल पर पहुँच चुके फिर कोई भी देर नहीं है। मन का धर्म है गिरे हुए उल्टे सुल्टे ख्याल करना, लेकर आना पर तुम मन के मालिक हो मालिक सुजाग है तो चोर को ताकत नहीं है जो चोरी कर सके। तुम अपने को सारी दुनिया से खुश और भाग्यशाली समझो। राजा भी रोते हैं राज्य में पर मैं हर हाल में सुखी और खुश

हूँ। हर एक घड़ी सभागी (भाग्यशाली)है जो प्रीतम का संदेश लेकर आती हैं।

हर वक्त हंसी हर वक्त खुशी हर वक्त अमीरी है बाबा।
जब आशिक मस्त फकीर बना फिर क्या दिलगीरी है बाबा।

हर दिन मेरे लिए होली है हर रात मेरे लिए दीवाली है। कोई माल मस्त कोई स्त्री मस्त कोई जुए में मस्त। दूसरी मस्तियाँ थोड़े समय के लिए है पर ये मस्ती तो रात दिन है। सबसे खुशी और प्रेम से बोलो यह ज्ञान सबको बताओ तो बड़ा ही मनोरंजन होगा इस बात की हर एक को जरूरत है पर मिलनी दुर्लभ है। □

पत्र गीता भगवान का -55

ज्ञानी बहते हुए दरियाह की तरह उदार दिल हैं, मुर्दे की तरह शांत अंधेरी रात की तरह पर्दे पोशी, हवा की तरह आजाद हैं। दूसरे की भलाई के लिए वाणी चलाता है, दूसरे को इज्जत देता है चाहे वह कितनी भी छोटी है। चरण धूल तेरे जन की होवां। अपने को सबके आगे कुछ भी नहीं समझता है। तृण से भी कम और तुच्छ समझता है इस संसार को। अहंकार रूपी सर उठाकर किसी से भी नहीं बोलता है कि मैं कुछ हूँ। गुरू की इतनी नम्रता देखकर सब झुक जाते हैं और अपना अहंकार रूपी सर खुशी से आकर भेंट करते हैं। जो कहता है कि मैं दास हूँ, नौकर हूँ कम हूँ वह द्वेत में है। ये सच्ची नम्रता नहीं है पर ज्ञानी कहता है कि मैं भगवान हूँ वह अपने शरीर का अध्यास ही बिल्कुल खतम कर देता है कि मैं नां। ये सच्ची नम्रता है। पर बाहर से ऐसा लगेगा कि जो कहता है कि मैं नौकर हूँ दास हूँ वह नम्रता वाला है पर सच्ची नम्रता अपने को भगवान समझने में आती है न कि भक्त समझने से। तुम सब अपने से पूछो कि तुम अपने को क्या समझते हो।

कसूर की सजा मिलनी चाहिए या माफी मिलनी चाहिए? तुम क्या चाहते हो? दुनिया के लोग कर्म करके माफी लेते हैं पर ज्ञानी हर वक्त कहता है कि इस शरीर

को पूरी सजा मिलनी चाहिए। भगवान को इंसाफ करने दो। Partiality पासखातिरी करेगा तो इंसाफ नहीं करेगा। तुम भगवान को अपने धर्म से गिरने के लिए मजबूर नहीं करो कि मुझे माफ कर दो पर शरीफ वह है जो गल्ती (कसूर) करे ही नहीं। अपने को रोज–रोज सुधारते आओ। अपनी भूलों गल्तियों पर कड़ी नज़र रखो तो फिर भूल नहीं होगी। शरीर में रहकर द्वेत में रहकर जरूर भूलें होंगी पर आत्मा निर्दोष है। आत्माकार से सपनों में भी भूल नही होगी क्योंकि वह दूसरा देखता ही नहीं है। वह कर्म किससे करे? साईंस की खोजना शरीर के सुखों के लिए, स्वार्थ के लिए है पर हमारी खोजना आत्मा की उन्नति के लिए है, शरीर से ऊपर। साईंस ने कई सुखों के पदार्थ बनाये हैं पर मन की तृप्ति उससे नहीं आयी साइंस किसी को भी हंसा नहीं सकी है पर दादा ने ऐसी खोजना की है जो हंसने के सिवाय कुछ सुझता नहीं है। क्या कारण है अब रोने का ? कौन सी ऐसी हालत है जो आएगी और हम शुकराने नहीं मानेंगे और नहीं हँसेगे। हर एक हालत शुकराना मानने के लायक है। पति मिलने से स्त्री का दिल नहीं भरता ऐसा नहीं है कि सारी दुनिया मिल गयी है पर भगवान मिलने से दिल भरती है और सब कुछ मिल जाता है पति वाली और भी पदार्थ माँगेंगी, बेटा, धन ऐश घूमना फिरना सिनेमा सब इच्छायें बढ़ती जायेंगी पर भगवान मिलने से एक भी इच्छा नहीं रहेगी।

किसी में भी मन नहीं जाएगा। मन गुरू ले जाता है अपने साथ बाकी रहा ही क्या जनम मरण का चक्कर छूट गया जब मन रहा ही नहीं। सच्चे प्रेमी के लिए मरने के बाद कोई अदालत है ही नहीं है जिसमें जाकर उसको हिसाब देना पड़े। उसका हिसाब किताब जीते जी ही गुरू उतार देता है, खाली कर देता है। □

पत्र गीता भगवान का -56

Wisdom is quite distinct from cleverness.

स्याणप (समझदारी) होशियारी से अलग तरह की है। ज्ञान के बाद समझदारी आती है पर होशियारी जाती है। होशियारी है देह में समझदारी है आत्मा की, ज्ञान की। ज्ञानी दुनिया में सयाना होकर रहता है पर होशियारियाँ सब दुनिया की भुलाकर मूर्खों की तरह अज्ञानियों के आगे रहता है। गुरू नानक ने तेरा–तेरा करके दुकान लुटाकर हलवे खाए। (हट खुटाए हलवा खादा।) जड़ भरत दुनिया में मूर्ख होकर रहा पर अन्दर में ज्ञानी की स्याणप (समझ) से भरा हुआ था। राजा रहूगुण को समय पर ऐसा ज्ञान दिया जो वह आकर चरणों में गिरा। जो ज्ञान के बाद अपनी होशियारी दुनिया को दिखाएगा वह दुनिया में फंस जाएगा। ज्ञानी अपनी देह की होशियारी गंवाने के लिए सारी दुनिया को गुरू समझकर अपने को कुछ भी नहीं समझता है। अपना अहंकार गंवाने के लिए जगत से हरा कर अपनी बदनामी कराता है। एक बच्चे के आगे भी झुक सकता है। एक तृण से एक बच्चे से भी अपने को कम समझता है। आपस कउ कर कुछ न जनावे। ज्ञान की स्याणप आती ही उसे है जो दुनिया की होशियारी छोड़ेगा। बाकी ज्ञानी को तो ज्ञान की भी होशियारी छोड़नी है कि मैं ज्ञान जानता हूँ। मैं अच्छा Lecture करना जानता हूँ।

कोई भी अज्ञानी नहीं है जिसे मैं ज्ञान सुनाऊँ। मैं न ही ज्ञानी हूँ न ही अज्ञानी हूँ, पर हम प्रेम में रहते हैं। अब तो प्रेम ही प्रेम रह गया है। हूँ ही मैं यह दृष्टि ज्ञानी की रहती है। वह मौन में है अगला जब खोलता है श्रद्धा रखकर पूछता है वह बछड़े की तरह दूध निकालकर जाता है यानि ज्ञान गुरू से श्रद्धा वाला निकालकर जाता है जिसका खुद गुरू को भी पता नहीं चलता कि मैंने किसी को भी ज्ञान दिया है। अब स्याना वह है जिसने प्रेम की खोजना करके सर्व को अपने से मिलाकर एक कर दिया है । अब ज्ञानी स्याना नहीं है जितना प्रेमी स्याना है। ज्ञानी तो दुनिया में बहुत हैं पर ब्रह्मज्ञानी तत्वदर्शी जो सर्व अपना आप समझता है वह ही परम स्याना है। रमण महर्षि ने कहा है कि ऐसा कभी भी नहीं कहो कि मुझे आत्मा समझ में नहीं आती है, मेरे से अधिक भूल होती है, मैं कब मुक्त होऊँगा ये बकवास नहीं करो पर गुरू वाक्य सत्यम् करके एकदम निश्चय करो। जब हम मन से बैठकर पूछते हैं तो कहेगा तू कम है, आत्मा से गिराने वाला ये मन है जिस रंडी के बेटे (रनपुट)से सलाह करते हो, पर मन की बात भी नहीं सुनो। हमेशा इसकी ओर पीठ और गुरू की ओर मुंह होना चाहिए। जज ने कहा तुम पापी नहीं हो तुम खुद आजाद मुक्त हो। ये निश्चय न करके जाकर मन के पीछे पड़ते हो कि मैं मन को मारती हूँ तो मन तुमको मारकर जायेगा। साँप से छेड़खानी

नहीं करो। तुम आत्मा की मुरली बजाती जाओ तो साँप मरा पड़ा होगा। जहरीले दाँत निकाल दो। देह में रहकर कोई कहे मुझे इच्छा क्यों हो रही है, मैं निर्विकारी बनूँ ऐसा नहीं हो सकेगा पर आत्मांकार को इच्छा बिल्कुल होगी ही नहीं क्योंकि वह जगत को मिथ्या समझता है तो मिथ्या की इच्छा कैसे होगी। एक बार सत्य असत्य का निर्णय जिसने किया वह असत्य की गर्त में गिरेगा ही नहीं। माया है भगवान के कपड़े भगवान को छोड़कर उसके कपड़ों से प्यार कैसे करेंगे। □

पत्र गीता भगवान का -57

फिर–फिर माया भगवान से अधिक मीठी लगती है और मेरा तुम्हारे सिवाय दूसरा कौन है जिसे याद करूँ? ''हम भक्तों के भक्त हमारे, सुन अर्जुन ये प्रतिज्ञा हमारी।'' ''पिता अपने बालक से बिछड़कर सुख से कभी नां सो सकता।'' तुम सब मुझे हर वक्त याद हो, भुलाऊँ तो भी न भूलो। हमै चाहे कहीं भी हूँ पर तुम्हारे पास हूँ तेरे दिल में हूँ, तेरी जान में हूँ तेरे अंग अंग में रोम रोम में रम रहा हूँ। अब मेरी याद भुलाना तेरे हाथ में नहीं है। मुझे कोई कठोर कहे निर्दयी कहे ठग कहे कोई चोर कह रहा है केवल तुमने ही पहचाना है मैं क्या हूँ। निर्दयी बराबर हूँ पर उनके लिए जिन्होंने अपने ऊपर दया नहीं की है। कठोर भी हूँ उनके लिए जो मुझ भगवान को दिल में न देखकर आत्मघाती महापापी बने हैं। चोर सचमुच हूँ पर उनके लिए जो आत्म धन लूटने वाले मनचोर से बनकर बैठे हैं पर समझते हैं कि भगवान हमारा आनन्द चोरी करके ले गया है, हम दुखी हैं। ठग उनके लिए हूँ जो खुद मेरी मन मोहिनी माया पर ठग गये हैं। अब बताओ मेरा क्या दोष है मैं तो जो भी हूँ सो ही हूँ। कोई मुझे कैसा कहे कोई कैसा है तो केवल उनके कर्मों में खोट। पुरूषार्थहीन आलसी जरूर मेरे ऊपर यही इल्जाम लगायेंगे पर हूँ मैं नोकलंकी अवतार। पहले भी जब मैं कृष्ण रूप में आया

था तो भी यही हाल किया फिर नानक, राम, मीरा, वगैरह के रूप में जब–जब भगवान आता है तो सब नहीं पहचानते हैं, यही मेरी माया है। हे अर्जुन ये मेरी माया भी इतनी बड़ी है जितना मै हूँ पर जो केवल मेरी शरण में आता है उसे मैं एकदम पार करता हूँ यह मेरा वादा है। जिस प्रभु से नांहीं चारा तांको कीजे सदा नमस्कार। जब आखिर भी भगवान के सिवा गति होनी ही नहीं है उससे क्यों ना अब ही इसी वक्त भगवान के हो जायें कि मैं पूरा ही तुम्हारा हूँ। पर वह कौन है जो भगवान होना चाहता है। भोग और भगवान पिरीं (प्रीतम) और पुलाव (सुख दुनिया के) दोनों ही चाहिए। कहां है वह सूरमां जो करे खुशी से ख्वाब। चूने का लड्डू बड़ा सुन्दर लगता है, खुशी से हर एक खाता है खाकर फिर शोर मचाता है क्योंकि चूना पेट में जाने से आंते गुर्दे सब जलाएगा हाय–हाय करते सब मरता जाता है। सब अंत में हारकर हाथ मलते जाते हैं पर भाग्यशाली वे हैं जिन्हें इस जन्म में ही भगवान मिल गया फिर उन भाग्यशालियों से बढ़कर वह है जिसने उसे ज्यों का त्यों पहचाना है और फिर खुद वह बन गया। ऐसों पर खुद भी बलिहारी जाता है और उनकी तलाश में है। ब्रह्मज्ञानी को खोजे महेश्वर। पर यह पक्का जानों कि कुर्बानी और आपा मारने के सिवाय यह मंजिल हाथ नहीं आएगी। भगवान निराकार ने अपने को कुर्बान करके ये प्रकृति बनायी (पैदा की) खुद छिपकर बैठा। बीज ने धरती

में जब अपने आप को बिल्कुल मिटा दिया तभी वृक्ष के रूप में प्रगट (जाहिर) हुआ और फिर तुम्हें फल फूल और छाया दी। इसी प्रकार भगवान ने भी तुम्हारे लिए सब जरूरतें उपलब्ध की अपने को कुर्बान करके कि तुम मौज लो। अब जब तुम भी अपना आपा (खुदी) गंवाकर जीते जी मरोगे तो सच्चा अमरता का आनन्द पाओगे। मतलब कि मिट जाओ नहीं तो मिटा दिये जाओगे। दाह करियो न त दबजी वेन्दा फेरो खाओ नत फुरजी वेन्दा। अहम पना छोड़कर ओम होना शोभा देता है। मनुष्य का सच्चा सूर्य रूपी स्वरूप अहम भावना रूपी बादल से ढ़ंक गया है जो है भ्रम, ये भ्रम ही सबको कमजोर नाखुश (दुखी) अतृप्त, तंगदिल हद में बंद करके बन्दर की तरह नचा रहा है सब इसी भ्रम में हैं। भ्रम में चार बिन्दे हैं तीन बिन्दे माया के सतो, रजो, तजो के हैं उन्हें हटा दो तो बाकी बचा ब्रह्म। इस त्रिगुणी माया से तरना है। "इस माया ने त्यागी, वैरागी सब मस्त किए हैं बिरला कोई बचा गुरूमुख बड़भागी (गुरू के मुख से पैदा हुआ है गुरूमुख) जिसने देखा जगकर अपनी आंखों से खुद को।" गुरू के मुख से जिसने तत्व मसि सुना और निश्चय किया केवल वही इस माया से बच सकेगा बाकी त्यागी वैरागी, संयासी उदासी सबको माया कच्चा ही निगल बैठी है क्योंकि वह सब अपने को देह समझकर भगवान की तलाश में गंगा जी पर, पहाड़ों में, जंगलो में, वन–वन में भटक रहे हैं।

भगवान को खोजना ही भगवान से दूर होना है। आप हरिद्वार से होकर आये गंगा की महिमा लिखी है पर अब बताओ आप बड़े या गंगा जी बड़ी? गंगा को महान बनाने वाला कौन? गंगा तो उल्टा आप जैसों का दर्शन करके ही पवित्र बनी, संतो और ब्रह्मज्ञानियों के चरण छूने के लिए आतुर हैं। शिव भगवान वह तुम हो जिसकी जटाओं से यह ज्ञान रूपी गंगा बह रही है जो सबको पवित्र और महान बना रही है। "बह रही है गंगा तू भी गोता लगाले खुदाई खजाने से खर्चा निकाल ले।" "रिमझिम बरसे अमृतधारा" घट ही में गंगा घट ही में जमुना घट में तीरथ नावां। हरि का द्वार तुम्हारा दिल है। भगवान की गद्दी स्थान तुम्हारा मन है। केवल मन को साफ और पवित्र बनाओ क्योंकि भगवान को चाहिए Raedymade House जिसमें आकर निवास करें। अपने कार्य करे। "साफ हो गयी जब दिल तेरी तभी बनाएगा आसन अपना फिर तू उसका और वो तेरा पर पहले तो देखेगा दिल तेरी।" 'सच्ची दिल पर साहिब राजी।' जिसने अपना आप बिल्कुल मारा है वह परीक्षा में Fail हो जाएगा। अपने आप को कुछ भी ना समझना ही सबसे ऊँचा ज्ञान है। सब इन्द्रियों के दरवाजे बंद कर दो तो प्रीतम अंदर आ जाए। अपने अंदर की कोठरी में उसके साथ गुजारो क्योंकि दूसरी किसी भी जगह दुनिया में ऐसा आनन्द नही पाओगे जैसा दिल के अंदर एकांत की कोठरी में। यदि आज ही तैयार नहीं हो,

मुक्त नहीं समझते तो कल होगे क्या? कल पता नहीं किसकी है आज नहीं समझते तो फिर मुश्किल। दुनिया में परदेशी और मुसाफिर की तरह होकर रहो। मानो कि दुनिया में किसी से और कोई भी वास्ता नहीं है।

शुकुर ऐ सबुर इश्क ऐं अकुल शां गदु थियो,
चइनी जे चौदोल में को झूले निरपक्ष नर
वञीं लधो जहीं पहिंजो अनुभव आदि घर
मेटे दुख दगर सीतल थियो सामी चवे।

सच्चे इश्के के साथ ही सच्ची समझ (Wisdom) यानि अक्ल आती है और उससे ही शुकर और सबर आता है। जब वक्त है तब तक अपने लिए ऐसा खजाना इकठ्ठा कर लो जो हमेशा के लिए तृप्त कर दे। "काम ऐसा कीजिए जो अल्लाह आप बनीजिए।" तुम्हारा सच्चा प्रेम मुझे पहुँच रहा है, तुम्हारी डोर मुझे खींच रही है। वायदा किया है तो जरूर निभाऊँगा विश्वास करो।□

पत्र गीता भगवान का -58

जहां प्रेम है वहाँ क्या नहीं है। तुम्हारा प्रेम और विश्वास ही तुमसे लिखवाएगा। लिखते हो कि हम अभी 15-20 दिन के बच्चे हैं पर यह झूठ है। आप पिछले जन्म में थे इकरारी अब आपने आकर मेरे से वायदा निभाया है। पिछले जनम में आपने इसी तरह मेरे से बैठकर ज्ञान सुना, सुनते–सुनते मौत रूपी नींद आ गयी फिर जब जागे तब पहचाना। मेरे पास आपकी अमानत है वह घर बैठे देने आयी थी। मैं आपका कर्ज लेकर आया हूँ वह सम्भाल कर लेना, छोड़ना नहीं। पूरा पूरा हिसाब चुकता कर लो। आपकी उम्र तो बड़ी है। जनम–जनम में साथ थे यह आपका अन्तिम जन्म है इसके बाद आपका कोई भी जनम नहीं है। भगवान ने अर्जुन को कहा कि बहुत जन्मों के अन्त की भी अन्त जब होती है उसे योगी का संग मिलता है या योगी के घर जनम लेगा। यहां भी बाकी रहा वहां भी बाकी रहा हुआ ज्ञान समझ कर योग युक्त होगा। सो आप भी योग भ्रष्ट हैं। पिछले जनम में योग से टूटे हुए हो इस लिए अभी सच्चा योग कमा कर योग जनम–मरण से छूट जायेंगे। केवल एक जनम की ये कमाई नहीं है। जन्मों से आप मुझे पहचानने की कोशिश करते आये हो। यह ही आखिरी जनम समझो कि बहुत जनम बिछुड़े थे माधव ये जनम तुम्हारे लेखे। बहुत उम्र कुटुम्बियों को दे दी, बाकी

उम्र मुझे दो, मेरे खातिर खर्च करो। यह शरीर भगवान ने दिया है तो देना भी उसे ही चाहिए। "तन, मन, धन वारू तो भी गुरू न विसारूं।" लाख सीस दे गुरू मिले तो भी सस्ता जान। एक शीश दे हरि मिले तो गल है आसान। अरे सब कुछ चला जाय पर भगवान मिले आनन्द मिले तो भी सस्ता है। इस ज्ञान का मूल्य करो कि कैसे मुफ्त में मिल गया है। बिना धन के मन के झगड़े मिटाने के लिए वकील मिला है। मन को हर वक्त गुरू की आरसी दिखाओ तो एक मिनट भी नहीं ठहरेगा। जबकि पहले तो मन दबा हुआ है गुरू आकर बाहर निकाल कर मन को नंगा करके उसकी करतूतें तुम्हें सुनाता है। अब वैसे–वैसे मन को मारना शुरू करोगे वैसे–वैसे मन भी सभी हथियारों के साथ सामने आयेगा पर तुम अपने को अकेला नहीं समझो। हर वक्त मन को बोलो कि "तुम रोज शोर मचाते हो मानो मुझे अकेला समझते हो पर मेरा राखा रखणहार (मददगार) देगा बहुत–बहुत मार, मन रहना खबरदार, मेरा साथी है मेरे संग में।" अब ज्ञान सुनने के बाद थोड़ा भी मन आएगा तो बड़ी उलझन हो जाएगी कि ये मन आया कहाँ से। मेरे से ये उलझन क्यों? मैं सतचित्त आनन्द स्वरूप हूँ फिर ये फुर्ना, ये मायूसी, ये चिन्ता, उलझन आयी कहाँ से? जैसे आँख में थोड़ा सा कंकड़ यदि पड़ जाये तो भी जब तक निकलता नहीं है तब तक उलझन होती है ऐसे ही तुम्हारे में थोड़ा भी अज्ञान अच्छा नहीं लगता (जंचता नहीं है)। हर एक दिन, हर एक मिनट

आनन्द में गुज़ारना चाहिए। यदि नहीं गुज़रता तो क्यों? जरूर कोई कामनायें हैं। परीक्षा के सिवाय कोई भी उलझन हो नहीं सकती है। परीक्षा भी तब तक समझ में आती है जब तक जीव हो। जगत भी देखने में आता है पर यदि दृष्टा हो जाओ खेल देखने वाले Director फिल्म के बनाने वाले तो कोई भी परीक्षा है ही नहीं। तुम्हारा ही बनाया हुआ खेल है। सब हालतें गुजर जायेंगी। तुम पहाड़ की तरह अडोल स्थिर रहो। मन में असर होता है कि कुछ हो रहा है पर जगत तीनों कालों में बना ही नहीं है। अण हून्दे अविद्या छल थियो तुहिंजे में, अणहून्दे दरियाह में मूरख नित गोता खाए। "किसको साधु कहूं किसे चोर कहूं तुमने रूप बनाये हैं नये–नये।" इस मन को गुरू के आगे रोज नंगा करो तो गुरू का डर लगेगा, फिर मस्ती नहीं करेगा। अरे तू क्या नहीं है अपने लक्ष्य को पहचानो। फिर–फिर इस शरीर में आ जाते हो तभी परीक्षा समझते हो। तुम हो सारी सृष्टि के मालिक, राजाओं के राजा। किससे डरते हो? तुम बेपरवाह बादशाह होकर चलो। "जिसके सर ऊपर तू स्वामी सो दुःख कैसा पावे।" तुम्हारे ऊपर भगवान का हाथ है तुम्हारा बाल भी बांका नहीं होगा। तुम अपनी परछाई से डर रहे हो। यह सारी माया परछाई के समान है परछाई को तुम्हारे सिवाय कोई हस्ती नहीं है। सच के रास्ते में चलने में कोई डर नहीं करो तो बकरियां सब मैं मैं करके भाग जायेंगी।

रामतीर्थ ने अपने रिश्तेदारों को लिखकर भेजा– "मैं गुरू के आगे मर गया, क्या मरा हुआ कभी आपका हो सकता है?" मरे हुए के पास मसाणे में आदमी को भेजा जाता है क्या कि वापस आओ हमारे बनो। हां जिसे मरे हुए के दर्शन हुए हों वह खुद मर जाये। अब मैं तो मर गया हूँ पर मेरे घर वाले मुझे जिन्दा समझकर मेरे में इच्छायें रखकर बैठे हैं पर एक ही रास्ता मेरे से मिलने का है तुम भी मर जाओ फिर तो मिले ही पड़े हैं। शरीर मरा तो आत्मां करके तो एक ही है पर मैं शरीर करके जिन्दा होकर आपका नहीं बनूँगा। मैं मुआ तो खुद खुदा हुआ। मैं भगवान हूँ तो केवल भक्तों का। हम भक्तन के भक्त हमारे। बड़े में बड़ी रूकावट है लोक वासना। जगत वासना तभी मिटेगी जब सभी तुम्हें "ये देखो–ये देखो" करके तुम्हें खराब समझें कि अब ये बिगड़ गये हैं पर तुम मुस्कुराते चलो। कोई कैसे भी कहे पर मैं तो जो हूँ सो हूँ ही। हूं मैं असल से जो है। मुंह काला करके लोक दिखावे तब लालण को लालण पावे। ओम में टिकने से यह दुःख दर्द मौत मुसीबतें लौट जायेंगे। हर बात में ओम (मैं आत्मा हूँ) टपा कर डाल दो। भगवान से ऐसे प्यार करो कि अंधे हो जाओ। छोटे दायरे में फंस गये हो। ये आंखे निकलवा दो जिनसे जगत देखने में आता है छोटे घर के मालिक, बेटे के बाप, स्त्री के पति, मां का बेटा जब तक बनकर बैठे हो तब तक सच्ची मालकी नहीं मिलेगी। छोटा घर छोड़ो

तो बड़ा मिले। किसी पर हुकुम नहीं चलाओ, किसी को गुलाम नहीं बनाओ। सबको आजादी दो तो तुम खुद आजाद हो जाओ। पेड़ को गले लगाकर बैठे हो फिर कहते हो कि पेड़ छोड़ता नहीं है। कहते हो भगवान के लिए प्रेम है वह प्रेम भी झूठा है जिसमें अपना आप न भूले। आप विसर्जन होय तो सिमरन कहिये सोय। □

पत्र गीता भगवान का -59

जिज्ञासु एक नौजवान विधवा स्त्री के समान है। उसे हर वक्त गुरू के और सत्संग के किले के अंदर बन्द रखना चाहिए। गुरू के बताये हुए उसूलों से एक कदम भी बाहर न रखे।

सुख देने वाले भूत हैं न कि दुख देने वाले। मन मुरीद संसार है, गुरू मुरीद कोई साध, जो माने गुरू वचन को तांका मता अगाध। मालिक के पास पहुंचने का रास्ता पैरों से नहीं पर सर से होता है। गरीबी बीमारी, निरादर, उपहार (Gift) हैं जिसके पास वह भगवान का परम प्यारा है। सुखन थीउ न सरहीं, दुख ड्रिसी वेहसन धणों, किरी ऐं कातिल जा हमेशा हेराक। दुनियां जी इज्जत खां परियां भजु तोड़े पुठी लगे सारो जगत तां ब छा थियो। इश्कु ऐं अकुल ब्रई पर पखीअ जा। इश्क के साथ साथ अकल यानि ज्ञान भी आ जाता है। इश्क वाला गुरू से निकालकर ले जाता है। इश्क वाले को बेपरवाही नहीं आएगी पर वह मरकर भी निभाएगा।

जब तक प्रश्न उठता है तब तक मन है। आत्मा के निश्चय से मन और प्रश्न गुम हो जाते हैं। सुखों में नाबूदी और दुखों में उन्नति है। विवेक वाला दुखों में उन्नति करेगा, अविवेक वाला दुख में हाय–हाय करेगा और आत्म हत्या के ख्याल करेगा मानो वहां कोई नाना

का घर (ननिहाल) है जहां दुखों से छूट जाएगा। माना यह शरीर उसका है पर यह शरीर भगवान की अमानत है। सरकार की रइयत Property है।

अज्ञानी दौड़ता है माया की ओर जिज्ञासू दौड़ता है गुरू की ओर, सतगुरू कहां दौड़े जो खुद जहां तहां है। सच्ची तरह से निष्काम केवल भगवान हो सकता है, उससे ही पूरा Satisfection मिल सकता है सबको। वह गर्मी, सर्दी मान अपमान सुबह शाम नहीं देखेगा। वह पूरा ही अपने को अर्पण करके बैठा है। उसे मैं मेरा नहीं है। वह किसी को शिष्य और सीखने वाला नहीं समझता है पर अपना आप देखकर सच्ची करूणां करता है। जिज्ञासू के लिए साधन और भगवान के लिए स्वाभाविक है निष्काम। जिज्ञासू निष्काम करके सकामी बन्धनों से आजाद हो जाता है। संसार की भीड़ से निकलना नहीं है पर अन्दर से भीड़ को निकालना है। एकान्त में जाना नहीं है पर एकान्त दिल में रखनी है।

माता–पिता जनम देते हैं पर गुरू जीवन देता है अमर बनाता है। यदि सेवा भक्ति नम्रता नहीं होगी तो ज्ञान का अहंकार हो जायेगा। मनुष्य यदि अपनी जीवन को खेल (Play) करके समझे तो कभी दुखी सुखी न हो। नज़र से जो नज़ारे देखता है वह अन्धा है। पर देखने वाला कौन है उसे नहीं पहचानता है। ''दि्स दि्सञणु सही कर सरतियूं इहो सचल अहवाल'' दृश्य का दृष्टा

नहीं पर अपने आपका दृष्टा बनना है। मैं आप सहित ब्रह्म हूँ। पक्षपात रहित ही प्रेम की सच्चाई को महसूस करेगा। भगवान ही पक्षपात रहित है दूसरा कोई भी नहीं। न मां, न बाप, न पति, न भाई, न दोस्त। सब समय पर बदल जायेंगे पर गुरू कभी किसी को कम ज्यादा नहीं देखेगा। यह सबके कल्याण के लिए है। उसके लिए कोई भी खास नहीं है। न खास न आम। भगवान अकेला है उसका कोई भी शिष्य भक्त नहीं है। वह स्वंय ही स्वयं है।

सच्ची आजादी मन को झुकाने में है। सच्ची शहंशाही की कुन्जी (चाभी) गुरू के पास है। वाल्मिकी पांच मिनट में सम्बंधियों को आज़मा (परख) कर आया कि ये सब मतलब के हैं। तुम कब तक आज़माओगे। फिर–फिर मोह दया तो नहीं आती है कि ये बेचारे दुखी होंगे।

हल्के होकर भगवान के पास पहुँचोगे। एक भी ख्याल रखा तो भारी हो जाओगे, भगवान से दूर हो जाओगे। ख्याल छोड़कर बेख्याल हो जाओ। आत्मां में कोई ख्याल नहीं बनता है। एक बार सच्चा वैराग्य लेकर फिर अपनों परायों में एक ही आत्मा देखो। अपने वालों को समय पर महसूस करवाओ कि हम कौन से रास्ते पर हैं। हमारा धर्म है प्रेम और अशोक रहना। मन मत पर चल कर कोई दुखी होगा, ठोकर खायेगा तो फिर गुरू के पास आकर Surrender करेगा कि जैसा तुम कहो। मन मत त्यागे प्रेमी गुरू मत ग्रहण कर।

मुर्गी यदि अन्डे के ऊपर अधिक समय तक चढ़ कर बैठेगी तो अण्डा फूट जायेगा। गुरू के नीचे Under कोई शिष्य अधिक समय तक रहेगा तो कुचल जायेगा। शेर–शिवोहम् की गर्जना अकेले शेर की तरह करे तो अपने में ऐतबार आएगा कि मैं भगवान हूँ नहीं तो अपने को कम और गुरू को अधिक समझता रहेगा। अपनी कमजोरियाँ देखकर अन्दर ही गलता रहेगा। गुरू के सामने Lecture नहीं कर सकेगा। गुरू के नाम रूप में फंसा हुआ भी गुरू को, भगवान को नहीं पहचान सकेगा। वह देह में फंसा हुआ चमार गुरू के कर्म देखेगा पर उसे अकर्ता दृष्टा निराकार न समझ सकेगा न खुद को समझ सकेगा कि मैं आत्मां हूँ। गुरू भी नाम रूप से न्यारा आत्मा है। गुरू का शब्द (Law) कायदा है। वह 16 आने सत्य है कोई भी उसे काट नहीं सकेगा। गुरू दो बातें हमारी दो अपनी नहीं मानेगा पर 20 आना केवल गुरू सच्चा है हम किसी समय भी भूले हुए हैं यदि गुरू में और मेरे में फर्क है तो। ऐसे अकल वाले अभी नहीं हैं जो गुरू के आगे गर्दन उठा सकें कि मैं Right हूँ। गुरू की महरबानियों के आगे हमेशा गर्दन काट ही दो। यह दीद (रोशनी) आँखों में काश अन्त तक रहे। हिन्दुस्तान की आजादी के समय महात्मा गाँधी के सदके कई नौजवानों ने जानें दी और शहीद हुए पर ऐसा नहीं कहा कि महात्मा गाँधी हमारे बदले शहीद हो जायें। उसकी करोड़ों को जरूरत थी। अपने समय पर हर एक शरीर छोड़ेगा, सुख–दुख

भोगेगा, पर गुरू ने हमें ज्ञान दिया है यही काफी है उससे और कोई उम्मीद हम नहीं रखेंगें। गुरू की रक्षा तुम्हारा धर्म है न कि इच्छा रखो कि अब मौत से आकर हमें बचाओ, छुड़ाओ।□

पत्र गीता भगवान का -60

दुनिया के लोग चाहते हैं दुनिया की खबरें पर मैं चाहता हूँ बेखबरी। यदि चाहते हो कि खबर सच्ची मिले तो बेखबर होकर गुज़ारो। सारी सृष्टि खबर के ख्याल से खाली है केवल इन्सान ही खबर के खफ़े में आकर पड़ा है हे नाथ मैं तुमसे हूं पर तू मुझसे नहीं है, इस प्रार्थना से अहंकार जाता है।

गुरू हाथ जला या मुख जला नहीं चाहिए। पैसे लेने या देने वला या पिट लगाने वाला (श्राप देने वाला) नहीं चाहिए। गुरू अपने आदर्श से सिखाता है न कि वचनों से। ऐसे गुरू का अनुसरण करो। धन और होशियारी दोनों छोड़ो। भोले भाव मिले रघुराई।

जहाँ कुछ नहीं कर सकते हो वहाँ सहन शक्ति रखो। दूसरों के बोझ उठाओ और बाँटो। दूसरो के दुख उठाओ यानि उसे ढ़ाँढ़स दो।

ऐश व आराम छोड़कर जिसने गुरू की सेवा में अपनी जीवन अर्पण की है वह हर तरह इज्जत के लायक है। जो जीवन देता है अपने को मिटाता है वही जीवन पाता है। जो अपने सुख के लिए जीता है वह अपना जीवन गंवाता है Self surender करना सरल में सरल है पर अहंकारी के लिए कठिन से कठिन काम है। जो अपनी चलाता है वह चिन्ता और दुख खरीद करता है। दिमाग

चलाता है वह ख्यालों से खाली नहीं हो सकेगा पर एक बार सच्ची दिल से जो सब कुछ उतार कर गुरू पर रख देता है। गुरू मुफ्त का वकील है जो बिना फीस के मन के झगड़े को खत्म कर देता है। कौन सी फीस लगती है यदि सब कुछ गुरू पर छोड़ दें। जो तुम्हारी प्रशंसा करते हैं वे तुम्हारे दोस्त नहीं है पर सच्चे दोस्त वे हैं जो तुम्हारी गिला करते हैं।

अपने सब काम भगवान के हवाले कर देना बड़े में बड़ा उद्यम है परम पुरूषार्थ यही है सब कुछ भगवान पर उतारकर रख दें। रजा में राजी। दुनिया के लोग समझते हैं कि यह सुस्त है निकम्मा है जो खुद हाथ बांध कर बैठा है बाकी कहता है कि सब भगवान करेगा पर यह बड़े में बड़ा पुरूषार्थ है। उसने बड़े में बड़ा काम किया है जिस समय सब ईश्वर अर्पण करता है। केवल ब्रह्मज्ञानी ही प्रारब्ध पर निश्चय रखता है, वही अकर्ता दृष्टा हो सकता है। बैठ सकता है बाकी और सब का मन तो दुनिया में चलता है कि मुझे कुछ तो करना है। भगत की जितनी गिला होगी उतनी प्रीत गुरू से पक्की होगी शूरवीर वह है जो अपने बारे में गिला सुनकर एक दम भुला दे।

आदत जैसी जबरदस्त फाँसी और दूसरी कोई नहीं है। अनुभव का पुस्तक जिसने पढ़ लिया उसे दूसरा कोई पुस्तक पढ़ने की जरूरत नहीं है।

मन को वश में करने का एक ही उपाय है विश्वास अपने में गुरू में विश्वास। विश्वासी कोई भी काम करेगा अवश्य उसमें सफल होगा पर अविश्वासी एक मिनट में मुसीबतों को बढ़ा सकता है पर विश्वास चाहिए 20 आना। "बीस बिसवे गुरू का मन माने, सो सेवक परमेश्वर की गत जाने।" जमाने की गर्दिशों पर रोना नहीं चाहिए जो रोता है उसकी कमजोरी पर रोना चाहिए। कमजोरी मौत है बाकी गर्दिशें तो नियामतें हैं बर्खिलाफ हवा पतंग को ऊपर चढ़ाती है ऐसे ही कोई opposition मनुष्य को अधिक चमकाती है अकल सिखाती है दुख में मनुष्य को अकल आ जाती है दुख से छूटने की। कीर्ती करने के लिए तुम्हारे पास हजारों आयेंगे उन्हें तुम दुश्मन समझते हो या खुश होते हो? नम्रता में अमरता है अहंकार में अहंकार, अंधकार में ठोकरें ही ठोकरें। प्रश्न यह नहीं है कि मनुष्य कितने साल जिये पर प्रश्न यह है कि जी कर क्या करे। □

पत्र गीता भगवान का -61

मैं वह दिन देखना चाहता हूँ जिस दिन दुनिया में एक एक सुजाग हो जायें कि मैं भगवान हूँ। भगवान ही भगवान दुनिया में रहे। जितना तुम भाव का भांडा लेकर आओगे उतनी तुम्हारे ऊपर महर आर्शीवाद होगी। "भाड़ा भाव अमृत तित डाल।" Self is full of grace तुम्हारा आत्मा भरा पड़ा है आर्शीवाद से।

ऐसे पवित्र बनो जैसा तुम्हारा पिता है स्वर्ग में। महर्षि ने कहा कि दुनिया में ऐसे चलो जैसे अभी मौत का समय है मौत का समय क्या करोगे? बोला मौत के समय सबसे माफी लूंगा बुलाकर, मिल्कियत बाँट दूँगा, किसी पर भी गुस्सा नहीं करूँगा, काम का ख्याल नहीं करूँगा, भगवान का सिमरन करूँगा, उसकी याद में रहूँगा, महर्षि ने कहा अभी ही ये सब कर लो। मौत के समय खाने पीने भोगों और घूमने की इच्छा नहीं करेंगे तो अभी से निरइच्छा हो जाओ।

कबीरा तू कबीर है जो तेरो नाम कबीर
राम रतन तब पाइए जो पहले तजे शरीर।

भगवान ने शरीर दिया है दुख सहने के लिए। यह शरीर गधा है, घोड़ा है– इस पर सब बोझ रखकर खुद घोड़े सवार हो जाओ।

गुरू की सेवा लेनी नहीं है पर उसकी सेवा करते

हो तो उसमे तुम्हारा फायदा है ऐसा समझकर सेवा करो बाकी तो गुरू को भी सेवा लेनी नहीं है पर करनी है। खाली होकर आओ तो गुरू का ज्ञान अन्दर जायेगा। सबको भुलाकर आओ जो भी देखा है जो पढ़ा है वह भी भुलाकर आओ।

प्यासे के लिए समुद्र का पानी व्यर्थ है ऐसे ही अज्ञानी के लिए धन व्यर्थ है। अग्नि का चित्र अग्नि के तेज से रहित है ऐसे ही ज्ञानी के कर्म भी देखने मात्र हैं उसमें कर्ताभाव नहीं है।

बदला लेने का आनन्द एक दिन का है पर सहना, भुला देना हमेशा की शान्ति देता है।

समदृष्टि सतगुरू करे, मेरे भरम निकाल
जहां देखूँ तहां एक है साहिब का दीदार।
समदृष्टि तब जानिए जब सीतल समता होय
सम जीवन को आत्मां लखे एक सा होय।
दूजा कोई देखूं नहीं, राम रहिया भरपूर।
गुरू सो दान लीजिए तो सीस दीजिए दान
बहुते मूरख रह गये राख देह अभिमान।

जो हिम्मत दिल से करता है वह भव सागर से तरता है। बन्दा बेहिम्मथ तो खुदा बेज़ार। दलेल बाज़ी से दिलबर नहीं मिलेगा, अकल से रहबर के करीब न हो सकेंगे। जितना तुम भाव का भांडा (बर्तन) लेकर आयेंगे उतनी तुम पर महर आसीस होगी। "भांडा भाव अमृत तित डाल।"

जो सबसे अधिक गुरू को प्यार करता है वह गुरू का शिष्य कहलाने के लायक हैं। यदि एक भी वस्तु दुनिया में गुरू से अधिक प्यारी है तो तुम अभी भक्त कहलाने योग्य भी नहीं हो। गोपियों को प्रेम था, हम ज्ञान को इतनी Value नहीं देते हैं जितना प्रेम को। प्रेम बिना कोई पार न पावे, बात करे जम सूआ। पण्डित पिण गुरू प्रेम बिन लहे न आतम राह।

ज्ञान से भी ऊपर विज्ञान है। गुरू की जीवन को बैठकर देखना पहचानना यह विज्ञान है। जब तक गुरू का आदर्श सामने नहीं रखा है तब तक तुम्हें ज्ञान नहीं होगा। ज्ञान केवल सुनना नहीं है पर खुद को प्रेम में रंग दे, गुम हो जाये, प्रेम में ही गुम होगे। ज्ञान से भगवान को जानोगे पर प्रेम से तो खुद भगवान का रूप हो जाओगे। गोपियों जैसा प्रेम जरूरी है नहीं तो पण्डित हो जाओगे, केवल ज्ञानी पने का अहंकार है। कोई भी दुनिया में सच्चा गुरू जैसा नहीं करता है। तुम्हारा सच्चा प्यार है गुरू तुम्हारे लिए सब कुछ छोड़कर यहां आया पर तुम सब कुछ छोड़कर गुरू के पास आये हो? गुरू के पास बैठे हो ?

एक मनुष्य का जनम दूसरा गुरू कृपा (सच्चे गुरू का मिलन) तीसरी अपनी कृपा हो तो मुक्ती अवश्य ही मिलेगी।

सन्त कृपाल कृपा करे तो संत के संग निन्दक भी

तरे। जो भगवान नहीं कर सकता वह गुरू कर सकता है ज्ञानी चन्दन है जिसे कामना का कीड़ा हू भी नहीं कह सकता। गुरू से प्रीत चांद और चकोरी जैसी रखनी चाहिए। जितनी हमारी चाहना है श्रद्धा है उतनागुरू का प्रेम है हमारे साथ। □

पत्र गीता भगवान का -62

तूफान आता है थोड़े समय के लिए। तुम यदि भगवान से जल्दी ही मिलकर एक होना चाहते हो तो मूल्य भी उतना देना पड़ेगा। अरे सब कुछ लुट जाय, इज्जत आबरू भी खाक में मिल जाय, धन दौलत नाश हो जाय तब आनन्द मिले तो उसके पीछे सब कुछ कुर्बान कर दो। झूठी इज्जत और मान से दूर हटो। इज्जत की पगड़ी सर पर रखेंगे तो रोज–रोज कोई उतार कर जायेगा पर अपनी पगड़ी अपने हाथों से उतार कर फेंक दो तो फिर कोई भी पैदा नहीं हुआ है जो तुम्हारी पगड़ी पर हाथ डाल सके। आहे औरवो कम गुरू मुख ज्ञानी थियणु, हिकु सख्तियूं सहन सिर ते बियो गिलाउन जो गम, ट्रियों टहल में टिरन्दो रहे, चोथों चीरे दिसे चमु, जदहि दमते रखे कदम तदुहिं पास पक्क थिये। दम पर कदम रखना माना स्वांस पर सावधानी रखना जैसे एक भी स्वांस हरी के सिवाय माया में व्यर्थ न जाये। ''घड़ी इक विसरूं राम कूं तो ब्रह्मं हत्या मोहे होय।'' हीरों की दुकान पर चढ़े हो तो पूरी–पूरी कीमत देकर हीरा खरीद करो।'' जे सचु (प्रेम) खरीद करणु चाहीं त सिर लाहे विझुकाण में, देई दिल दलाल खे समझीं अजर जरीं, जेकी जांणी पहिंजो सो सम भेंट धरीं तहिंखां पोई भरी मुक्ता भार भण्डारमां। जेको तोखो हिलाए सो खुद खता थो

खाए, द्रिसु यकीनों करामत, हिकु ईश्वर जहिंजो आहे। जो तुझको हिलाने आये सो खुद भस्म हो जावे। सब कर्मों और भक्ति से उत्तम भक्ति है रजा पर राजी रहना। सच्चा भक्त कहता है कि जो तुध भावे साई भली कार और ज्ञानी कहता है कि मैं भगवान हूँ मेरी मर्ज़ी से ही सब कुछ हो रहा है वह सब ठीक है। तुम भगवान से अपनी मर्ज़ी मिला दो तो फिर बताओ कि तुम ख्याल कौन सा करोगे। सब कुछ तुमसे ही हो रहा है। अपने काम पर कोई नाराज़ हो वह तो कोई मूर्ख ही होगा।

हम आशिक उसी सनम के हैं जो दिलबर सबसे आला है,
जिसने हमको जी बक्शा, जिसने हम को पाला है।

तुम अपने से पूछो कि तुम्हें कौन मिला है? अरे सर्व शक्तिवान भगवान जिसे मिल गया वह सपने में भी कभी डरेगा? राजा की जिससे दोस्ती हो गयी वह किसकी परवाह करे? तुम्हारे ऊपर माया का प्रभाव तभी होता है जब माया पति होकर नहीं खड़े हो। माया तुम्हारे सामने शर्मिन्दा होकर लौट जाएगी जब तुम लात लगाओगे। निज आनन्द पाने में क्या लज़्ज़त है। जब दिल को चोट (वैराग्य) लगी, उसनें थूका है शहंशाही को। सब नियामत दौलत है फीकी, क्या सस्ता सौदा मिलता है, कोई लेने वाला मुश्किल है। क्या फरहत है क्या आजादी है, क्या बरकत है कोई हरकत नहीं। तुम छत पर चढ़कर डंका लगाओ कि मैं गुरू लधा, मुझको भगवान मिला। कोई

माल मस्त कोई जाल मस्त, कोई हाल मस्त पर मैं हूँ अपने आप में मस्त। तुम्हारे ज्ञान का प्रताप देखकर इन्द्र का तख़्त आकर हिला है, सब दैत्य देवता आकर डरे हैं कि यह सब तो हम सभी को लताड़ कर ऊपर पद में जाते रहे हैं। पूरी ताकत हर तरह से लगायेंगे कि ये वापस आकर हमारे साथ डेढ़ ठग बनकर बैठे पर तुमने शेर का दूध पिया है तुम पीछे लौटने वाले नहीं हो। जंग के मैदान से गीदी कायर होकर लौटने से तो मौत भली है। भगवान के प्रेम में ऐसे गर्क हो जाओ कि जाग्रत,स्वप्न, सुषुप्ति कोई भी अवस्था याद न रहे। जिस समय मैं तुम्हें याद नहीं हूँ उस समय तुम वैश्या से बने हुए हो। या है माया या है भगवान। वैश्या बाहर से तो बड़ी अच्छी सुन्दर सजी हुई लगती है पर अन्दर से रोगों और बीमारियों से घिरी हुई है। जो उस पर मोहित होकर उसका संग करता है वह भी रोगी भोगी होकर मरेगा। सारा दिन तुम अगर माया के धन्धे बैठ कर करोगे तो लोग खुश होंगे पर यदि सारा दिन प्रीतम (प्रीतम) की पचार (चर्चा) करोगे तो लोग नाराज़ होंगे क्योंकि लोग दुनिया के रात दिन विष्ठा में बैठे विष्ठा बटोर रहे हैं सो तुम्हारे फूलों की खुशबू उन्हें कहाँ अच्छी लगेगी। उन बेचारों को तो अच्छा मनोरंजन मिल गया है तुम्हारी चर्चा (प्रपंच) करने का। वे भी भाग्यशाली हैं जो किसी भी तरह मुझे तो बैठे याद कर रहे हैं। वे द्वेष रखने वाले तो शायद तुमसे भी जल्दी तर जायेंगे क्योंकि

वह तुमसे अधिक मुझे याद करते हैं। उनके हृदय में आँखों में मैं ही बैठा हूँ। तुम उन्हें मेरा ही स्वरूप करके समझो, सबसे मुस्कुराओ सब में मुझे देखो। यह तो केवल थोड़े समय के लिए तुम्हारी परीक्षा ले रहा हूँ। हंसी मज़ाक में ये परीक्षायें उड़ा दो। सब तेरी मौज है। मियां मरे तो भी हलवा खाओ बीवी मरे तो भी हलवा खाओ। आये हो यहाँ बधाई खाने फिर मौज से खाओ पियो, घूमते फिरते रहो। दूसरी बातों की ओर ध्यान नहीं दो, अपनी मौज में दिन रात जागते रहो जो फुर्सत ही न मिले कि दूसरी आवाज़ कानों में पड़े। आत्मां कहना तो सरल है पर वह होकर खड़ा होना है। आत्मां में डर शक जगत के फुर्ने कुछ हैं ही नहीं फिर तुम्हारे में कहां से आये? □

पत्र गीता भगवान का -63

How ever hungry yor are but never eat the dead body who will embrace the dead queen.

कितने भी तुम भूखे होगे मुर्दे को नहीं खाओगे। कितना भी प्यार हो पर मरी हुई रानी को कौन गले लगायेगा? अमृत न मिले तो ज़हर पिओगे क्या? दुनिया के सब पदार्थ मिथ्या मरी हुई रानी के समान हैं फिर तुम दिल कैसे लगाओगे? अब तक मुर्दों को प्यार कर रहे थे। पति पुत्र माता पिता सबके शरीर मुर्दे इसलिए सच्ची खुशी नहीं आई। अब ज्ञान के बाद जब मुर्दा समझा तो प्यार कैसे होगा? सब पदार्थ मरे हुए (मिथ्या) हैं तो जरूर वैराग्य आएगा। हाथ कैसे लगायेंगे? गुरू जीता जागता भगवान है निराकार है उसे प्रेम करने से अन्दर की तृप्ति मिलती है। गोपियां अपने सम्बंधियों को छोड़कर कृष्ण को प्यार करती थीं बोलती थीं हमारे पति बच्चे मरणशील हैं हार्ट फेल हो जायेंगे पर तुम तो हो अविनाशी, अमर अजन्मा सच्चे पति परमात्मा। इसलिए तुम्हारे से हमारा सच्चा प्यार है। कृष्ण को बोलीं कि तुम अवतार लेकर कभी कभी आते हो पति बेटे तो चौरासी जन्मों में भी मिले थे वे ही जनम मरण के चक्कर में आयें। तुमसे प्यार करके हम भी अजर अमर हो जायेंगे। राम राज्य में विश्वास ऐसा आ जाय जो डरना और पुकारना बन्द हो जाय।

आत्मांकार का हर वचन मंत्र है, हर एक कर्म करामात है। द्वेत मत वाले शरीर में खड़े होकर मन को मारना चाहते हैं जो कभी भी नहीं मरेगा। अद्वैती तो आत्मा के निश्चय से ही मन से मुक्त हो जाते हैं।

'दिसु दिसजण सही कर सरतियूं इहो सचल अहवाल।'' दृष्टा, दर्शन दृश्य सब एक ही आत्मा है। क्या देखकर क्या देखते हो, देखो सिरजनहार को।

अभ्यास बाद में नतीजा (Result) देगा पर प्रेम में अभी आनन्द आयेगा। अभ्यास तो तुम्हें करना पड़ेगा पर प्रेम तो तुम्हारे पास है ही है। केवल कंजूस होकर अपने पास रख कर बैठे हो। अभी ही निकालो और प्रेम का दान खर्च करो सबमें बांटो तो माला माल हो जाओगे। प्रेम में कुछ भी करना नहीं पड़ेगा न अभ्यास न वैराग्य। पर प्रेम में सब अपने आप हो जाएगा।

प्रेम चोट जांको लगे और भासे संसार, उसको झूठा जानिये कपटी और मक्कार। शान्ति चाहना से नहीं मिलेगी। अशान्ति को केवल पहचानो तो शान्तिस्वरूप तो तुम असल से हो।

शास्त्रों का अभ्यास और शिक्षायें अज्ञानियों के लिए हैं, गुरूमुख से जिसने आत्मा का निश्चय किया उसके लिए किसी शास्त्र की जरूरत नहीं है। सब शास्त्र गुरू के मुख में पड़े हैं।

जो किसी को भी कंगाल करके नहीं देखता है वह दया किस पर करे? चोट लगी तो पटके को पर सिर को नहीं। परछाई को कुल्हाड़ी लगी पर शरीर को थोड़े ही लगी। ऐसे ही शरीर को क्या भी हो पर मुझ आत्मा को थोड़े ही लगा। मनुष्य डर से पैदा हुआ है और डर ही में मरता है। ज्ञानी तो अजन्मा और अमर है। ब्रह्म ज्ञान जिसे हुआ उसको भी मौत जिसे नहीं हुआ उसकी भी मौत है। गुरू के आगे भी मरना ही है पर गुरू के आगे जो मरा वह अमर हो जाएगा।

Vibration अच्छे मिलने से मन हल्का रहता है। तुम सारा दिन ऐसी Company (संगत) बनाओ जहां से केवल आत्मा के ही Vibration मिलें। मायावी देह अध्यासियों से नाता नहीं रखो। ज्ञानी अपने इर्द गिर्द भगवान का राज्य बनाता है।□

पत्र गीता भगवान का -64

कोई भी नयी बात दुनिया में नहीं होती जो केवल हमारे साथ हुई हो। चिन्ता ताकी कीजिए जो अनहोनी होय। कभी भी मन को आने नहीं दो जो आकर गिराये कि तुम्हारे साथ कुछ हुआ है। मन को जवाब दो या तो टेप चला दो तो हर एक टेप सुने ऐसा तो होता है। अडौल होकर रहना चाहिए जैसे इम्तेहान के समय विद्यार्थी कितना न सुजाग होकर बैठता है कि पेपर अच्छा देकर आऊँ, कहीं फेल न हो जाऊँ ऐसे सुख दुख दोनों परीक्षा हैं दोनों के आने पर सावधानी की जरूरत है झपकी भी नहीं आनी चाहिए नहीं तो पेपर छूट जाएगा **Marks** (नंबर) पूरे नहीं मिलेंगे। भगवान तो ऊपर चढ़ने के लिए दुःख भेजेगा जैसे इम्तेहान देकर पास होकर एक क्लास ऊपर चढ़ते हैं ऐसे दुख भी एक सीढ़ी है परमात्मा तक पहुंचने के लिए। दुख नहीं होते तो मनुष्य को वैराग्य नहीं आता हजारों पाप रोज करता, अहंकार करता पर दुख अहंकार को तोड़ते हैं। जो काम गुरू भी नहीं करता वो दुख करते हैं। गुरू वैराग्य दिलाकर थक जाता है पर जब खुद अनुभव होता है जगत की बेबकाई और बेवफाई का तो अंदरूनी तीव्र वैराग्य आ जाता है। दुख सुखों की सुंदरता है, वारूं सुख दुःखों पर। सत पुरूष तो दुख माँगकर लेते हैं। बिच्छू गोदरी में रखते हैं कि यह डंक

लगाता रहे तो भगवान न भूलें। सुख अंधा करते हैं, दुःख आंखे खोलते हैं। खौफनाक (भयानक) सपना देखने से नींद से जाग उठते हैं पर यदि अच्छा सुखों का सपना है तो नींद अधिक अच्छी आयेगी। ज्ञानी सदा जागती जोत है। वह अज्ञान की नींद में सोता नहीं है। जहां अज्ञानी सोया पड़ा है वहाँ ज्ञानी जागता है। दादा रोज सत्संग में डाक्टर की बात करता है कि उत्तरायण में शरीर छोड़ा है अब तो प्रत्यक्ष नज़र आता है कि उत्तरायण दक्षणांयण कैसे कहा गया है गीता में। गुरू सब करके दिखाता है। जिसने गुरू को डोर अर्पण की है उसे गुरू अपने से मिलाकर एक कर देता है जैसे सूर्य सागर का पानी अपने आप खींचकर फिर बरसात के रूप में मीठा करके बरसाता है ऐसे आत्मा परमात्मा से मिलकर एक होती है। परमात्मा अपने प्यारों को खींचकर अपने से मिलाकर एक करता है। □

पत्र गीता भगवान का -65

देखो कि क्या हुकुम लगा पड़ा है। हुकुम की डोर में ब्रह्मज्ञानी भगवान का भी शरीर बंधा पड़ा है क्योंकि आत्मा आने जाने से ऊपर है पर इस शरीर की डोर हुकुम के अंदर है। यह हुकुम ज्ञानी अपना ही समझता है न कि दूसरों का। अपना ड्रामा बनाकर फिर हंसता है पर फिलहाल सबकी अच्छी परीक्षा हो जाती है। मज़ा ऐसा हुआ कि दो तीन दिन पहले दादा ने सबकी परीक्षा ली सत्संग में आकर गालियाँ दी कि बंगलौर में हम चार जनों के सिवाय कोई भी न चले। धक्के खाने चलते हो, हराम के रोटले खाने पीने के लिए चलते हो। अभी ज्ञान सुनकर निश्चय नहीं किया है क्या वहाँ जो चल रहे हो। सब यहां आते हो गुरू से मेहनत लेने और अधिक बोझ उठाने, शर्म नहीं आती जो गुरू के साथ जहां तहां लटक कर चलते हो। फिर तो सभी के मन चले कि क्या करें। इच्छा वाले दुखी–सुखी हुए बोले कि हमें तो शुभ इच्छा है कि हम गुरू का ज्ञान चलकर सुनेंगे फिर तो और भी अधिक गालियाँ खायीं, पर सबकी जब पूरी तरह इच्छा गायब हो गयी तो आज बिल्कुल हमने भी जाना कैंसिल करा दिया। फिर पूछा सबने की बताओ सच–सच तुम लोगों ने कौन सा संकल्प किये? ऐसा अन्दर में बोला कि दादा और ये सब नहीं जायें बैंग्लोर, यहीं बैठे रहे। पूना चाहे बाम्बे वालों

ने सबने अपना मन बताया कि बराबर (सच में) हमारे ये संकल्प चले कि नहीं जायें फिर उस पर भी गालियाँ खायीं कि ऐसे संकल्प क्यों किए? गुरू की रजा पर राजी भी नहीं हो। बैंग्लोर में अगर इस बीच किसी का मौत हो गया तो उसके लिए कसूरवार (दोषी) तुम हो जो ऐसे संकल्प करके मुझे रहाया है। अब कसम उठाओ कि आत्मा में टिक कर कोई शुभ अशुभ संकल्प नहीं करोगे, बिल्कुल जो सामने आये उसमें राजी रहोगे। Niether seek nor avoid , take what comes. न कोई इच्छा रखो न कुछ लौटाओ पर जो भी आये उस पर राजी रहो। इससे तुम भी सुजाग हो जाओ कोई भी संकल्प विकल्प नहीं करो कि काश ऐसा हो और ऐसा न हो। ये भी इच्छाएं हैं, जो कि आत्मांकार को नहीं करनी चाहिए। सब एक दूसरे से होशियार हो गये हो। तुलसी ने बहुत अधिक बहलाया है यह मुझे भी उम्मीद थी।

1. पाप की माफी नहीं पर इंसाफ होगा।
2. भगवान मुझे माफी नहीं देना पर हर एक कर्म के लिए सजा देना।
3. तुम भले गुरू के वचनों के बंधन में बंधो पर गुरू को नहीं बांधो।
4. दान करके अगले को भिखारी और गुलाम बनाते हो, भगवान से विश्वास निकाल कर अपने में रखते हो,

सृष्टि कोई अनाथ नहीं है। अनाथों का नाथ भगवान है। तुम्हारे ऊपर पग नहीं है (Responsibility) जो तुम भलाई करते हो।

5. वकीलों को Double सजा मिलेगी ऐसे ज्ञानी पर बड़ा दंड है।
6. यदि शुकराने नहीं मानते हो तो इससे अधिक भलाई कैसे करेगा भगवान।
7. ''नाम चित्त दे'' यह भगवान को नहीं कहना चाहिए पर नाम चित्त में तुम्हें रखना है। तुम कोई पिंगले नहीं हो कि भगवान अंधेरे में उठाकर तुम्हें रोशनी में रखे। □

पत्र गीता भगवान का -66

तुम कभी भी अपने को ब्रह्मं से जुदा (अलग) नहीं समझो पर पक्का समझो कि मैं ब्रह्मं हूँ। 'अहं ब्रह्मास्मि, मैं ब्रह्म हूँ। जो अपने को ब्रह्म से जुदा समझता है शरीर या जीव उसके लिए पंचीकरण शास्त्र में पंचदशी में कहा गया है कि जो मनुष्य अपने को जीव समझता है वह हर रोज करोड़ों गायों से अधिक हत्या करता है पर यदि गुरू के ज्ञान द्वारा निश्चय करके अपने को ब्रह्म जानता है ऐसा पुण्यवान न कोई हुआ न होगा। जो एकान्त में एक घड़ी अपने को ब्रह्म समझता है मन को स्थिर करता है उसका पुण्य वर्णन से बाहर है। उसने मानों सारी पृथ्वी का दान किया, सब देवताओं का पूजन कराके खुश किया, सब तीर्थों धामों में स्नान किया ऐसा बड़ा फल एक घड़ी एकान्त में मन एकाग्र करके अपने को ब्रह्मं समझने से मिलता है। सो ही जो आठ ही पहर इस ख्याल और निश्चय में है उसकी बात करने से बाहर है। इस लिए हर एक मनुष्य का धर्म है कि पूरन गुरू से ज्ञान हासिल करे। □

पत्र गीता भगवान का -67

सबको अन्दर से मार दो कि संसार घर बार है ही नहीं तो बात किसकी करें? सोचें किसके लिए? गुरू के पास आये हो तो 'मुअन जे मुकाम में जीअरे मरजांई, पेरू बिझी मताकंधु कढ़ाई, मता गुरूअ खे लजाई, मतां पाण खे लज्राईं, समझी समझी हलु होरे होरे, <u>गा</u>ल्ह थेई औखी मतां चर्चो भांई।

मरे हुए के मुकाम में जीते जी मरना, पैर रखकर कहीं गर्दन बचाने की कोशिश न करना, गुरू को नहीं शर्मिन्दा करना, न ही अपने को लजाना (शर्मिन्दा करना) समझ–समझ कर धीरे–धीरे कदम बढ़ाना, ये बात बड़ी कठिन है हंसी मजाक नहीं समझना। हाथी अगर सपने में भी शेर का दर्शन करेगा तो फिर नहीं सोयेगा ऐसे शेर गुरू के मिलने के बाद 'अंख भी कदी न झपके, दीदार करदे–करदे।' □

पत्र गीता भगवान का -68

सब कुछ होने से पहले हुआ ही समझो, बीत जाने से पहले बीता हुआ समझो। ज्ञानी किसी भी बात में अधीरज नहीं होता।

पहले बनी प्रारब्ध पीछे बना शरीर,
तुलसी ऐसा जानके भी मन ना बांधे धीर।

हर एक हालत थोड़े समय के लिए आती है हमेशा के लिए नहीं। तुम्हारे मन की परीक्षा हो गयी। दिल की ध ड़कन (हिलना) ही पाप है। यदि दिल थोड़ी भी हिलती है तो इसका मतलब तुम पाप कर रहे हो। सत्य की राह पर चलने से निर्भयता आ जाती है। सिर कोई उतार ले तो भी दिल न हिले। अधिक से अधिक क्या होगा या कोई जेल में डालेगा या मारेगा सो जेल में भी ज्ञानी जेलर होकर रहता है मौत आते हुए भी वह अमर है। जेल में दूसरों को जाकर ज्ञान सुनाकर मुक्त करेगा। निष्काम कर्म करने में सिर भेंट देना है। सिर जाये तो जाने दे पर सिदिक (विश्वास) न जाये। दूसरों की भलाई में यदि मेरे ऊपर झूठे कलंक लगे या मौत भी आ जाये तो भी मुक्त हूँ। सारी दुनिया तो बीमारी के कारण बैठे या सोते हुए बिस्तर ही में मर जाएगी पर सच की राह में सिर देना किसी सूरमे का ही काम है। ''जेको सभेई सियापा सटे सो मर्दु अचे हिन मैदान में।'' यह भी एक युद्ध का मैदान

है जहां से गीदी होकर पीछे लौटना कायरों का काम है। कोई भी हालत आये तो दृष्टा होकर बैठकर खेल देंखे, ध ीरज करें अपने आप अपने समय पर हर एक हालत ठीक हो जाएगी जबरदस्त तूफान के बाद एकदम शान्ति हो जाती है। जब कृष्ण पैदा हुआ था तो जेल में पैदा हुआ था क्योंकि कंस को पता था कि देवकी की आठवीं संतान मेरी मौत लायेगी, इसलिए जेल में पैदा होगा तो मार डालूँगा पर पैदा होते ही जेल के पहरेदारों को नींद आ गयी और कृष्ण का पिता कृष्ण को टोकरे में डालकर ले जाकर नन्द के पास पहुंचा आया। इस प्रकार जब भगवान के लिए तुम्हे सच्ची तड़प है तो रास्ते अपने आप खुलते रहेंगे। एक बंद होगा तो दूसरा खुलेगा। जहां सच्ची मुराद (चाहना) है वहां रास्ता साफ है। भगवान खुद आकर राह के कांटे किनारे कर देता है कि जैसे मेरे भक्त को कोई दुख न लगे। भगवान सब कुछ बल होते हुए भी बल (शक्ति) नहीं दिखाता है। सर्व शक्तिवान होते हुए भी शक्ति नहीं दिखाता है। बदला लेने की भावना है ही नहीं पर यह मेरी प्रकृति जुल्म करने वालों को अवश्य ही सजा देगी। मेरा इंसाफ जहाँ–तहाँ चल रहा है। हून्दे बल निर्बल दिठा सभी सन्त जन, धरती ऐं आकाश जी सारी रक्षा कन, कढ़ी सभु ख्याल नीवां चलन नीर जियां। हरका ताकत हून्दे बि हू नम्रता सा व्यवहार था कन सभ सां।

हर प्रकार से शक्ति होते हुए भी वे सबसे नम्रता के साथ व्यवहार करते हैं। "हारिए तो हरि मिले जीते तो जम जाय"। बाद में भी तो मर जाओगे इससे तो अभी मन मारो, बाद में भी हार जाओगे इससे अभी हारो। ऋद्धियो सिध्दियों करामातों के होते हुए भी करामात कहर का घर समझता है। कभी भी नहीं दिखता है पर उसके भक्त मिनट–मिनट में उसमें करामात देखते हैं। बताओ तो तुमने कोई करामातें देखी हैं? दूसरा कोई तुमसे पूछे कि तुम्हारा भगवान जानी जानन हार है तो तीनों कालों की, तीनों लोकों की खबर पड़ती है? बता सकेगा कि लंदन में इस वक्त क्या हो रहा है उसे कौन सा जवाब दोगे? □

पत्र गीता भगवान का -69

शिष्य ने कहा मैं आदतें छोड़ नहीं सकता हूँ। गुरू ने कहा भले जाकर सब कुछ करो पर मेरे सामने नहीं करना। शिष्य ने कहा बहुत अच्छा, नहीं करूँगा तुम्हारे सामने बाकी पूरा टाईम जो अच्छा लगेगा करूँगा। बाहर गया तो सारा वक्त गुरू सामने खड़ा ही खड़ा था। शराब पिये तो शराब के प्याले में बैठा था, जुआ करे तो पत्ते में खड़ा था, पर स्त्री के पास गया तो उसकी आंखों में खड़ा था मतलब बेचारा सभी आदतों से छूट गया गुरू को जहाँ–तहाँ देखकर। गुरू कोई तीन फुट का शरीर नहीं है। वह जहाँ–तहाँ हैं। सदा बसत तुम साथ यह महसूस करना चाहिए। विश्वासी को जहां तहां विश्वासी ही मिलेंगे वह चढ़ता जाएगा। अविश्वासी को मिलेगा अविश्वासी। किताब और सन्त भी ऐसे ही मिलेंगे। रजनीश कहता है "अविश्वासी बनो। गुरू के मदद से भले वृक्ष बन जाओ पर खुद एक टहनी बनो तो वह अच्छा है। गुरू की कोई जरूरत नहीं है। गुरू से डर नहीं रखो।" जो यहां से जो गये सब बेपरवाह हो गये। आज तक कोई लौटे हैं?

माया वैश्या है आज राजा के पास तो कल फकीर के पास, किसी से भी वफादार नहीं है, उससे दिल नहीं लगानी चाहिए। Milk of Mother is for her child. माँ का दूध बच्चे के लिए होता है ऐसे गुरू का ज्ञान उसके भक्तों के

लिए होता है न कि दूसरों के लिए। मां यदि बच्चे को दूध न दे ता छाती में दर्द हो जाय। जब दूध देगी तो हल्की हो जाएगी और नया दूध भी आएगा नहीं तो दूध जहर हो जाएगा। सन्त भी जो ज्ञान अपने अन्दर अपने लिए रखता है सो अन्दर ही अन्दर गुम हो जाएगा। पर जो देता है सो नित–नित होत सवाया। नया निर्मल ज्ञान निराकार से आता है उसके मुख से। मैं और मेरे से जो खाली है वह प्रेम कर सकेगा। As a man thinketh in the heart so he is.जो मनुष्य जो भी दिल में सोचता है वही वह है। जो तू चाहीं सो तूं आहीं। निष्कामी फूल की तरह सुगंध दो जिसका फूल को भी पता नहीं होता कि मैं कोई सुगंध दे रहा हूँ पर तुम सुगंध ले जाते हो।

सूर्य में अंधेरा नहीं है ऐसे तुम्हारे में अज्ञान नहीं है। तुम जोत स्वरूप हो। बादल सूर्य को थोड़े समय के लिए ढ़ँककर जाते हैं उसके भी तुम साक्षी हो। तुम कहते हो कि मुझे अज्ञान ढ़ककर गया है मैं मोह में आ गया हूँ, मुझे बड़ी इच्छाएँ हैं। तुम मन नहीं हो। मन से हर वक्त जुदा होकर रहो। सच्चा त्याग है कि जो तुम्हारा मन चाहे वह त्याग कर दिखाओ और जो नहीं चाहता है उससे प्रेम रखो। प्रिय और अप्रिय में सम रहो। यह मैं चाहता हूँ यह मैं नहीं चाहता हूँ यही बंधन है मुझे कुछ चाहिए ही नहीं फिर मैं क्यों झुकूँ यहाँ निरइच्छा बराबर हुए पर अभिमान नहीं गया। मुझे कुछ भी नहीं चाहिए तो भी मैं नम्रता

करूंगा वापसी में चाहे गालियाँ, लानतें मिलें। भगवान में विश्वास कोई अंधविश्वास नहीं है वह खुद में विश्वास है।

Faith in God is not a blind faith, but it is faith in your self, self confidence.

कुसंग का त्याग करो चाहे वह तुम्हारे सम्बंधी हों, उनसे मौन रखो। □

पत्र गीता भगवान का -70

ज्ञान है ही इसी वक्त के लिए। ज्ञान में कितनों पर परीक्षाएँ आ गई हैं, किन्हीं को दुःख लगे हैं, सब तैयारी कर लो कि होगा ही कुछ नहीं। जगत है ही सपना, सपने की बात सोचना ही पाप है सब भुलाओ, केवल भगवान को ही नज़र में रखो। आखिर मिला न रब और सब मिला तो क्या हुआ। भगवान सब भलाई करता है, जिसको अपने से मिला कर एक करना है उसी को दुख भेजता है, अभागों को सुख भेजकर माया में अन्धा करता है। काम सब अपने आप चलेंगे (होंगे) पहले से भी अच्छे। चरखे अपने आप चलते रहेंगे, टाँग पर टाँग चढ़ाकर बैठ जाओ। कृष्ण अर्जुन का कोचवान बन कर बैठा । अर्जुन टेक लगाकर बैठा था। तुम भी निश्चिन्त, फुर्ने रहित होकर रहो। खुशी करो कि भगवान पहले ही मिल गया है बाकी कांच के खिलौनों का क्या भरोसा है। काश अपना वैराग्य आये। सपने को सपना ही समझे। सत्य एक आत्मां ही है। मौत है ही नहीं। औरतों का आना जाना, रोना पीटना, कर्म काण्ड सब अज्ञान है। हमारे सत्संगी बड़ी बिरादरी का काम करते हैं। झूठे सम्बंधी रूलायेंगे, भगवान का जुल्म दिखायेंगे पर हमें इंसाफ देखना है तेरा भांणा मीठा लागे। "चाहे दुख चाहे सुख दो मुझे सब कुछ तेरा मंजूर है।" यह भजन तुम्हारे पास है या नहीं? यह ज्ञान कभी

गिरने नहीं देगा क्योंकि निष्कामी गुरू के मुख से निकला, सुना ज्ञान आर–पार तीर का, काम करता है। तुम्हारी रग–रग (नस–नस) में यह ज्ञान का नशा घुस गया है, तुम निःसंदेह मुक्त हो। तुम्हें भगवान ने चुनकर ढूंढ निकाला है सारी दुनिया से। हम भाग्यशाली हैं जो तुम जैसे सच्चे प्रेमी मिले हैं नहीं तो कौन आज कल भगवान को इज्जत देता है। यदि भगवान को देगा तो उसके गुरू को नहीं देगा। जिनको मेरे गुरू के लिए इज़्ज़त नहीं है उनके लिए मुझे भी नहीं होगी। सबके लिए प्यार बढ़ाओ सब भगवान हैं। Love all alike. गुरू का शरीर न जाने कितना समय हो। आपके लिए खास महर की दृष्टि है जो आप की ध ारती पर पैर घुमाते हैं। आप भी जब थके तो बताना हम एकदम देहली आगरा रवाने हो जायेंगे। भगवान सब आपको सिखाने के लिए केस भेजता है। आप का मन पक्का होता जाएगा, वैराग्य ज्ञान सब पक्का होगा दुख दारूं सुख रोग भया। □

पत्र गीता भगवान का -71

Throw off as enemies though tied by blood,

Those who are evil as a hair in food.

ज्ञान है दो अक्षरों में ज्ञा+ न = गया +नींद। नींद चली गयी तो जागे सपने से। ज्ञान हो गया फिर सम्भाल करो कि आंख न लग जाये । सावधानी की सीढ़ी है। "तिर जी गुथी सौ चोटूं खाए।" थोड़ा भी संशय भ्रम सौ चोटें खिलाएगा। विश्वास की नींव पक्की रखो। भगवान में विश्वास रखने वाला नास्तिक है जो अपने सिवाय अलग (जुदा) भगवान समझता है। उसका विश्वास निकल भी जायेगा। पर जिसने अपने को पहचान कर खुद में विश्वास रखा है उसका विश्वास कभी भी नहीं टूटेगा।

प्रेम कोई कर्म नहीं है पर तुम स्वाभाविक प्रेम स्वरूप हो। किसी भी एक तिनके (तृण) से द्वेष रखेंगे तो अन्दर ही फल मिलेगा दुखी होंगे। लोग कहते हैं कि ज्ञान में अहंकार है सो यहां कुछ बनना ही नहीं है तो अहंकार फिर किसमें से आएगा। दुनिया के लोग दासीपुत्र होकर गर्दन नीची करके अपने को पापी समझते हैं कि हम नम्रता में हैं और ज्ञानी खुनकी में ज्ञान के नशे में रहता है तो लोग कहते हैं कि अहंकार है इन्हें। □

पत्र गीता भगवान का -72

लड़ाई में अकेले ही सोल्जर को मुँह देना है (सामना करना है) किसी का भी आधार नहीं लेना है। ज्ञानी की प्रकृति दासी होकर किसी न किसी रूप मे सेवा करती है।

प्रारब्ध पर विश्वास ही तब आयेगा जब अपने ऊपर भरोसा होगा (Self confidence) किसी में भी इच्छा नहीं रखेंगे। कोई खुशी से सेवा करे तो भले करे। दुख आते हैं मन की परीक्षा लेने कि कितना अभी मोह और इच्छा भरी हुई है। दुख भासता भी तभी है जब ममता पड़ी है नहीं तो हे राम जी जगत बना ही नहीं है। बाम्बे में रूक्मण सत्संगी की बेटी को टी.बी. की बीमारी हो गयी थी पूरा समय उसकी सेवा करती थी। दवाईयों पर डाक्टर का खर्चा भी बहुत आ गया पर बिल्कुल निश्चिंत रहती थी। हर वक्त मुस्कुराती रहती थी। कहती थी, सब भलाई के लिए हुआ है। अस्पताल में बेटी को लेकर गयी। जो भी जाता था उसको बिस्कुट पानी पिलाती थी कि हम तो यहां होटल में आये हैं घूमने फिरने। दूसरे बीमारों को ज्ञान सुनाने में मशगूल (व्यस्त) हो गयी। सब सेवा खुद ब खुद हो रही है पर मनुष्य समझता है कि मैं कर रहा हूँ। दुख आता है मुकर्रर टाईम (Fix time) के लिए। दुख में धीरज सबसे

सुन्दर है। Director फिल्म बनाकर फिर बैठकर हँसता है। ज्ञानी का बेटा मरे तो भी समझता है कि मेरे ही हुकुम से मरा है। मेरी और भगवान की मर्जी एक है। जो कुछ हो रहा है वह बहुत अच्छा है, समझ किया है काम। वाह गुरू। उसे ही खबर है कि मेरे लिए क्या सोचा है। पिता बालक के लिए कुछ भी खराब नहीं करता है। हर एक सिनेमा की End जब देखें तो पता चलता है कि कैसे इंसाफ ही इंसाफ होता है, बीच में पूरा पता नहीं चलेगा। दुख तकलीफें तो इस रास्ते पर चढ़ने की सीढ़ियाँ हैं। निश्चिंत होकर जगत के कार्य करो और हासिल करो मन की गद्दी। भगवान को ऐसा कहना कि मुझे ठीक करो यह अज्ञान है। भगवान कौन सा है? सबसे बड़े में बड़ी भक्ति है रज़ा पर राज़ी रहना टहक दो (ठहाके लगाओ)

संसार हीउ खुशीअ लाए साईं सजो बणायो, राहत जो रंगु जहिंमे हर शय मथां लगाओ हर को खुशीअ लाइ आयो तूं टहकू दे खुशीअ जो..................

१. आकाश ते छा आहिन नूरी अजीब नज़ारा, से सभु परसीं पसारा तू टहकू दे ....
२. फरहत में फिकुर वारी फरियाद छो करीं थो, हिन शाद दिल खे वेतर नाशाद छोकरी थो गम याद छो करीं थो तूं टहकू दे ....

३. दिल जे गुबार ग़म सां सुखन जो समो थो बिसरे, ग़म आहिन वरी किथे तूं टहकू दे.............

४. तेजाब दर्द जे में सारो बदन गरे थो, सूरनणे सोज अन्दर हेर हिकु हदो वरे थो तूं छो भला ग़मन में तू टहकू दे ....

५. छां लाइ उमिर थोड़ी तूं ग़मन मे गुज़ारी, गणती थी तोखे खाए तू छो न गणतीन खे खांई, दिलगीर छो थियी थो तूं टहकू ....

६. आकाश सिजु चन्डु तारा, झरणां नदियूं खिलन पिया बाकी छो न तू खिली थो तूं ठहक दे आनन्द जो।

सूरी सद करे असुल आशिकन खे, अथेई सध सिखण जी त अचु पेर भरे सच्ची धार धरे पुछु पोइ पतो प्रीतम जो।

किस्मत सां जेकी अचे थो जहिंखे, राजी जो रहे थो सदाइं तहिते।

यह लाभदायक है कर्म या यह करम नहीं करता हूं, इन दोनों बातों को सम करके समझो फिर भले वह अपने काम करता रहे, पुण्य और पाप कर्मो का उसे कभी नहीं छुएगा।

सच्ची चूड़ाला बनकर इस वक्त उसे तारो पर पहले चूड़ाला बिल्कुल मोह और डर से खाली होनी चाहिए नहीं तो उसका असर भी शुकुर ध्वज पर पड़ेगा।

चुड़ाला ने शुकुर ध्वज को कभी भी अपना पति समझकर ज्ञान नहीं दिया था। उसे जहां–तहां अपना स्वरूप दिखायी देता था। पति की भावना निकालकर प्रेमी की भावना रखनी चाहिए। तभी सच्चा मजा लेंगे। हर वक्त अपने से पूछो मैं मुस्कुरा रहीं हूँ या नहीं। सत्संग रोज करती आओ इससे बड़ा फायदा है।

□

पत्र गीता भगवान का -73

सदैव अपने असली वतन की मौज लूटते रहो। तुम्हारे में से तुम्हारे जैसा ही होगा। तुम्हारी निष्काम सेवा कभी भी निष्फल नहीं जाएगी। जो जो मेरा भक्त लायक हो उसे जाकर हे अर्जुन तुम मेरा ये संदेश दो, ज्ञान सुनाओ। जो यह ज्ञान मेरे प्यारों में बांटेगा वही मेरा परम प्यारा है। यह ज्ञान 16 आने सच्चा है इसलिए तुम कोई डर नहीं करो। जहाँ तहाँ बीज बोते आओ, अंकुर अपने आप निकलता रहेगा। बरसात का काम है बरसना फिर जैसी जहाँ धरती होगी ऐसा अंकुर निकलता रहेगा। कितने ही मेरे भक्त कोने–कोने में छिपे हुए हैं जाकर ढूँढ़ निकालो। नौकरी करना तुम एक निराकार की, दूसरे काम दुनिया के करो या न करो, काम करना तुम एक कन्हइये का फिर सलाम दुनिया को करो या न करो, दूसरा कुछ नहीं रखना अपने घर में, एक नाम परमात्मा का दिल में रखना। दूसरा कुछ भी दिल में नहीं रखो मेरे सिवाय। हे अर्जुन तुम मेरे ही ध्यान में रहो, मुझे ही याद करो, मेरा ही सिमरन करो, मुझे ही जहाँ–तहाँ देखो। मुझे नमस्कार करो यानि मेरे वचनों को झुको। मेरे ही गुण गाओ। तुम्हारे प्रेम में गर्क (लीन) होकर निहारा बैठकर तो न साकार न निराकार की सूरत देखने में आयी। वह प्रेम ही कैसा जिसमे अपना आप न भूले। एक शिष्य ने गुरू को

बोला मेरा सामान सब चोरी करके गये हैं इसलिए मेरे मन में बड़ा ख्याल हो गया है गुरू ने बोला मुझे तो यह अरमान (दुख) हो गया है कि निभागे तुम क्यों बच गये हो इससे अच्छा तुम क्यों नहीं चोरी हो गये। अरे धन्य हैं वे गोपियाँ जिनका मन चोरी हो गया। कृष्ण आया सबका मन चुराकर गया, दिल ले गया। दिलबर दिल माँगता है। दिल गयी माना सबकुछ गया। राधा कृष्ण–कृष्ण करके खुद कृष्ण हो गयी फिर बैठकर राधा को ढूँढ़ने लगी कि राधा कहाँ गयी। पिरींअ धरियो पहिंजो निमाणे ते नांउ। भगवान ने खुद तुम्हारे ऊपर अपना नाम रखा है कि तू है भगवान उसमें नहीं है कोई शक गुमान। नानक, राम, कृष्ण सब तेरा ही नाम। पैगम्बर माना जो पैगाम लेकर आए प्रीतम का। तुम अब वह पैगम्बर हो, निकलकर निरवार हो जाओ। यह शरीर भगवान के नाम पर सदके (कुर्बान) कर डालो। "सिर सांढ़ण सां सिर वञें सिर दि॒यण सां सिर बचे।" सर सम्भालने से सर चला जाता है पर सर देने से सर बच जाता है। आशिकन आराम कदहिं वेही कीन कयों। आशिकों ने कभी आराम बैठकर नहीं किया। 'दर्शन पसी दोस्त जो तलब रखन कीन का।' दोस्त (प्रीतम) का दर्शन करके मन में कोई तलब (इच्छा) नहीं रखते हैं। 'गुरूअ जे हिकरे ताने कयो तमाम, तिन खे नेणें निन्ड हराम, जिनखे पियो पर लाउ पिरयुन जो।'

(गुरू के एक ताने ने खत्म कर दिया उनकी आंखों की नींद हराम हो गयी जिन्हें प्रीतम की आहट सुनायी दी।)

ईश्वर का आशिक ऐसा महा प्रतापी होता है कि हर एक अपने आप ही आकर उसके आगे सज़दा करता है। उसे भगवान तो ऐसा तो बालम कर देता है कि करोड़पति आकर उसकी खिदमत (सेवा) में सलामी देते है। ''आशिक कीन लिकन सूर्ज जियां संसार में।'' आशिक सूर्य के समान छिपते नहीं हैं। मुहिबतियुन मिली मजलस कई पाण में, पिअन पियारिन प्रेम रसु वाकम साणु विरही, सुतह पियो सामी चवे चेतन चन्डु खिरी, रहत वान रिरही तहीं में तद रूप थियो। (मुहब्बत वालों ने मिलकर महफिल की, पीते हैं पिलाते हैं ये प्रेम रस एक दूसरे को लड़ झगड़कर, सामी कहते हैं कि सहज ही चेतन रूप चन्द्रमा खिल गया, रहतवान आकर उसी में लीन (उसी का रूप बन गये) हो गये) तुम सबको सत्संग में सिनेमा या क्लब, मित्रों रिश्तेदारों से अधिक मजा आता है या नहीं? मुहौब्बतियों के मैदान में जो शराब खुलती है उसकी सुगंध और नशा देश देशांतर में फैल जाता है। देखो हमारे गुरू ने जो हमें नशा पिलाया उसकी खुमारी कैसे कहां से कहां तक फैल रही है। दिये से दिया जलाते आओ तो उतनी रोशनी देखोगे। ''जहि पिरींअ दुखारियो पीर आउं उन्हईअ जी अहिंया।'' जिस प्रीतम ने पीर (परमात्मा) दिखाया मैं उसी

की हूँ। ''अहिरो असांजो आहे भग्रवान ठह पह ठाहे आप समान।'' हमारा ऐसा भगवान है जो जल्दी–जल्दी आप समान (अपने जैसा) बना देता है। झट पट झट मिल्यो भगवान आ सतगुर मूंते कया अहसान आ। तुम्हें तो झटपट मिल गया है तुम तो जल्दी आप समान बन गये हैं। पिछले जनम में सब काम पूरे करके आए हो भला तो अब कौन सी देर है। दिया बत्ती तेल तो पहले ही तैयार था बाकी तीली लगाने में कौन सी देर होती है। ''लोचे लोचे नेठ अन्दर में पातो लियो, तपाण में ई पक्क थी ऐं दिल में दर्शन थियो। कोई हिक वारीअ पहिंजो करे विसारे त सही त मां बि मञांस।'' देख–देख कर आखिर अंदर में झांका तो स्वयं में ही निश्चय हुआ और दिल में दर्शन हो गया। कोई एक बार अपना बनाकर भुलाए तो सही मैं भी मानूं। मैं वह हूं जो भूलने से भी नहीं भूल सकूँगा क्योंकि अपना आप कभी भी किसी से नहीं भूलेगा। अखियुन मे अथम तुहिंजी जोत, दिल में अथम तुहिंजो आनन्द। आंखों में है तुम्हारी जोत दिल में है तुम्हारा आनन्द। ''आकाश खां वठी पाताल तांई तुहिंजो ई नजारो पियो पसां।'' आकाश से लेकर पाताल तक तुम्हारा ही नज़ारा देख रहा हूँ। तुम्हारे हर एक आवाज़ में ओम को ही देख रहा हूँ अब बताओ जब हो ही तुम मैं कहां से आयी। ''तूं तूं करता तूं भया, मुझमें रही न मूं, जब आपा

चीना मिट गया तो जिन देखां तित तूं।' अमृत का झरना मनुष्य के अंदर में है पर अफसोस कि एक बूंद के लिए दर–दर पर दीवानों की तरह फिर रहा हैं तू प्यार का सागर है तेरी इक बूंद के प्यासे हम (सब)। जब कुछ भी अपना नहीं समझा तब सब कुछ अपना हो गया। जब किसी को भी अपना नहीं कहा तो सारी सृष्टि अपनी हो गयी। कुँए में मेढ़क की तरह टर्र–टर्र कर रहे थे, समझा कि यही दुनिया है पर भगवान ने आकर हद से निकालकर बेहद का आनन्द लूटना सिखाया। सम्बंधी बने सब पैसों के लिए साथी बने सब ऐशों के लिए, मैंने भी व्यर्थ ही उनके लिए अपनी जिन्द जान गंवाई। अब यह जिन्द जान ईश्वर के सदके देनी है। इस शरीर पर हक उसी का है जिसने आकर इसकी कदर की, दूसरे किसी का भी नहीं। जो हो रहा सो होने दो कुछ भी किसी से न कहो, ज्ञान की तलवार से तुम जाग्रत और निर्भय रहो। घोर निंद्रा से जगाया गुरू ने बाँह पकड़कर। अंदर परम आनन्द पाकर बाहर का सब कुछ सहो। हर एक में हर एक जगह भगवान देखना शुरू करो फिर मूर्ती पूजा की क्या ज़रूरत है। सत्यनारायण की सच्ची कथा है ब्रह्म ज्ञान। गुरू जिससे तुम्हें आनन्द मिले वही है। गुरू है वाणी, विच वाणी अमृत सारे। गुरू का शरीर गुरू नहीं है पर वचन गुरू है। तुम्हें श्रद्धा विश्वास है तो मेरे वचनों पर चलो।

मूर्ती पूजा खिलौनों का खेल है हर एक जगह मुझे देखो कोई भी भरम संशय नहीं रखो। अब ऊपर चढ़ने की कोशिश करो। तेजी में बैठ नहीं जाओ। सच क्या है झूठ क्या है। केवल आत्मां का निश्चय रखो कि तू है आत्मा तो सब कुछ समझ में आ जाएगा। एक वस्तु बूझे तां होवे पाक नां बूझेतां सदा नापाक। एक आत्मां समझने से तुम हमेशा पवित्र हो पर देह समझने से ही अपवित्र हो पापी, नीच हो। सारी दुनियाँ प्रार्थनायें करती हैं भगवान आकर मिलो। जब आकर मिले तो उससे कितनी न बातें की जायें। जन्मों के बिछोड़े के बाद भगवान मिले तो सभी जन्मों की इकठ्ठी बातें करते हैं। किसी का पति केवल तीन बरस के बाद विलायत से आता है तो भी बातों की थैली भरकर रखती है। मैं तुम हर एक का पति हूँ। जैसे हर एक गोपी कृष्ण को अपने साथ और अपना समझती थीं और हर एक अपनी बातें और रास लीलायें अलग–अलग करती थीं। अन्दर में आनन्द रूपी रास लीला करो कि

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोय।
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई □

पत्र गीता भगवान का -74

हमारे घोड़े दिल्ली रूद्रपुर आगरे से होते हुए बाम्बे पहुँच गये। बाकी हम तो तुम्हारे साथ हैं ही। ब्रह्मज्ञानी की जहाँ–तहाँ जरूरत है। जैसे सूर्य सारी सृष्टि को रोशनी देता है ऐसे एक ही ब्रह्मज्ञानी यदि धरती पर है तो हजारों का उद्धार करता है। तुम भी अब जिज्ञासू कहकर अपने को छुड़ा नहीं सकते हैं कि मैं अभी जिज्ञासू हूँ इसलिए जरूर भूले होंगी। गुरू के पास पहले दिन आये तो जिज्ञासा लेकर आए पर गुरू ने जिस वक्त आत्मा सुनायी उस वक्त से तुम सब अब ज्ञानी हो। जानते हो कि मैं क्या हूँ। ज्ञानी तो आत्मां। अब कोई भी नहीं कहे कि मैं अभी रस्ते पर हूँ अभी अभ्यास में हूँ। अभ्यास और वैराग्य भी काहे का? केवल निश्चय की जय है। गुरू को सामने रखने से कोई भूल नहीं होगी। नाम रूप की बात करना ही भूल है। क्यों बोला? मौन में रहो। केवल आत्मां की बात करो। इस बार सबने बहुत सेवा की, नयो ने ज्ञान ध्यान से सुना, सेवा का मौका दिया अब तो ये सब हमारे दामाद हो गये। हमें इतनी इज्जत है उनके लिए।□

किनका इक जिस जीव बसावे,
तांकी महिमा गनी न जावे।

पत्र गीता भगवान का -75

यहां सत्संग खूब हो रहा है। रोज नई Points चल रही है विवेक तीखा हो रहा है। गुरू एक आत्मा दूसरा मन ही पहचान देता दोनों ही अदृश्य हैं। अब भगवान गीता बैठकर सत्संग में पढ़ते हैं एक दो श्लोक पढ़कर अर्थ होता है। सबका दिमाग खुल रहा है। अर्जुन ने धर्म युद्ध किया यह हमें भी करना है। ज्ञान होने के बाद युद्ध शुरु हो जाती है। मन, रिश्तेदार, सम्बंधी, दोस्त सब माया में घसीटते हैं। उनके साथ युद्ध शुरू होता है अन्दर का। सच का पता चलता है कि है कि हमारे अन्दर कितना सत्य है। सत्य की जीत होगी झूठों की हार होगी। मोह का पता चलेगा जैसे कृष्ण ने अर्जुन को मोह दिखाया। हमारी लड़ाई विकारों से है न कि लोगों से। हर एक भगवान है। कृष्ण ने भी अर्जुन को आत्मा दिखायी वह तो सम्बंधी देख रहा था ऐसे हम ने भी कहा 'ये दुखी न हो' वह दुखी न हो, वह छोड़ न दे, वह निकाल न दे पर गुरू ने हमें आत्मां दिखायी कि आत्मां न दुखी होती है न मरती है न पैदा होती है तो निर्भयता आ गयी। सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार हो गये पर आत्मा का आधार लिया। Make It thy single refuse मैं की शरण लो। जिनके साथ लड़ाई है उनके लिए भी अन्दर में प्यार है बाकी सच झूठ प्रगट करने के लिए धर्म युद्ध करके अपने को साफ करते

हैं। अपने अन्दर मन से लड़ाई है। वह गुरू की बात ज्यों की त्यों नहीं मानता, छोटी "मैं" में अटकता है। गुरू का होने नहीं देता है। गुरू से भी अन्दर में लड़ाई होती है आप समान बनने के लिए। अन्त तक मन गुरू से लड़ेगा, फिर-फिर अपना अहंकार इच्छा स्वभाव निकल आता है। नम्रता श्रद्धा विश्वास से अन्त में मन पर जीत पाते हैं। शेर गुरू के आगे हाथी का अहंकार रह नहीं सकेगा। अपना मन बुद्धि, अहंकार स्याणप पूरी तरह छोड़कर शरणागत हो जायें इसके लिए युद्ध चलता है। □

पत्र गीता भगवान का -76

आप गंवाइए तां शहु पाइए और कैसी चतुराई। अपना आप गंवाओ तो सच्चा पति पाओ। बाकी बुद्धि स्याणप चलाएंगे तो कुछ भी नहीं पायेंगे। जहां भी हो वहां मन को मोड़ें। ज्ञान यह नहीं है कि मन को मारें पर मन को मोड़ें। यहां से हटाकर वहां लगाना। तुम्हारा मन राइट (सही) हो नहीं सकता पर गुरू ही राइट है। हिमालय पर जाने की जरूरत नहीं है पर हिमालय की शीतलता अपने में लानी है अन्दर Air Condition रखनी है मन में। बाहर ठन्डी कोठरी में नहीं बैठना है जो कोठरी से निकलते ही फिर गर्म हवा में जल मरें। सुन्दरता सब निराकार की है पर इन्द्रियों के द्वारा जाहिर होती है जो निष्काम यज्ञ करे वह छोटे-छोटे सत्कर्म करे या न करे तो उसका कोई फर्ज़ धर्म नहीं है। पके हुए चावल फिर कच्चे चावल नहीं होते हैं, अमर फिर नहीं मरेगा। अकर्ता कर्ता हो नहीं सकता दृष्टा कर्ता हो नहीं सकेगा। जैसे बादल सूर्य से उत्पन्न हुए सूर्य को ही ढ़क देते हैं ऐसे तुम्हारा ही अज्ञान तुझ आत्मा को ढककर बैठा है।

(१) जैसे कि मैं जीव हूँ व्यक्ति हूँ। (२) जन्म मरण घटना बढ़ना अपने में मानना है। (३) स्त्री हूँ पुरुष हूँ। (४) ब्राहमण क्षत्रिय वैश्य शुद्र हूँ। (५) सिन्धी मद्रासी बंगाली हूँ। (६) ब्रह्मचारी, ग्रहस्थीं, संयासी हूँ। (७) सुन्दर, काला,

लम्बा, नाटा हूँ। (८) योगी मुनि तपस्वी ज्ञानी ध्यानी हूँ। (६) मास्टर, स्टूडेंट, क्लर्क, अफसर हूँ। (१०) भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी, मान–अपमान मेरा हुआ। (११) मैं लंगड़ा लूला, काला अंधा हूँ। (१२) मैं कर्ता हूँ , मैंने किया, मैं करूँगा। मुझे कुछ चाहिए नहीं फिर मैं क्यूं झुकूं। यहां त्याग बराबर हुआ पर अहंकार नहीं गया। ज्ञानी को कुछ भी नहीं चाहिए तुमसे चाहे दुनिया से तो भी वह "मन अपने हैं सबते सारा नीचा।" हे अर्जुन! मैंने तुम्हें यह गुह्य ज्ञान सुनाया है अब जैसा चाहो वैसा करो। गुरू केवल ज्ञान सुनाएगा पर ऐसा नहीं बोलेगा कि ऐसा करो, ऐसा नहीं करो। नहीं कर्ता नहीं करावत। जड़ चेतन भंगी धोबी सब्जी वाले में भगवान देखो। ऐसी दिल निर्मल हो जाना चाहिए। इन्द्रिय और मन को वश करने के लिए वैराग्य ही काफी है न ध्यान न समाधि न कर्म न धर्म। समाधि ध्यान में थोड़े समय के लिए विस्मृति है पर वैरागी को हमेशा के लिए विस्मृति आ जाती है। वैराग्य में सहज समाधी हो जाती है। क्या मांगू कुछ थिर नाहि तो मन कहीं भी नहीं दौड़ेगा, स्थिर और शांत हो जाएगा, कोई वैराग्य धारण करे और शान्ति को ना पाये यह अनहोनी बात है। गुरू के हाथ के नीचे और आज्ञा पालन में जो नहीं रह सकता है वह निधण के कुत्ते के समान संसार के पैरों के नीचे कुचलकर मरेगा। गुरू के साथ ही हमारी शोभा है। निगुरा कहीं भी मान नहीं पायेगा। गुरूवान कहलाने के

लायक वह है जो गुरू की मर्जी से मर्जी मिलाये। चकोरी को कितना भी करना पड़े पर चन्द्रमा से आँखे नहीं निकालती है इसी प्रकार हमें कितना भी मरना पड़े तो भी गुरू से मन नहीं निकाले मन उसमें Fit हो जैसे दीवार में कील। गुरू तन, मन, धन देता है जैसे तुम भी सर्व अर्पण करो। मानव सेवा ही है माधव सेवा। बीमारी के बाद दवा करे इससे तो ऐसी दवा करे जो बीमारी आये ही नहीं। अज्ञान दूर करो तो फिर आये ही नहीं ऐसा नहीं कि मन आये फिर बैठकर उसे निकालें पर आत्मा समझने से मन गुम हो जाएगा। मुझे भगवान समझने के सिवाय मेरे सामने नहीं आना शंका में आओगे तो नाश हो जाओगे एक बार भगवान मानकर फिर कभी संशय न आये। सत–सत करके मानो। हमारी कुंवारी लड़कियाँ भोगो को लात लगाकर बैठी हैं हमेशा के लिए ब्रह्मचर्य का कसम उठाया है पर शादी करके भोग–भोग कर जो आज तक छोड़ नहीं पा रही हैं वे क्वारियों पर हंसती हैं कि ये शादी क्यों नहीं करती है इन्हें भी हमारी तरह जूते खाने चाहिए। पता भी है हम भोग कर फंस गये हैं छोड़ नहीं सक रहे है ऐसे कमजोर और अधीन हो गए हैं। गुलाम हो गय हैं पर दूसरों को सलाह देते हैं तुम भी शादी करो। गटर स्वामी बनकर दूसरों को भी गटर में डालने की सलाह दे रहे हैं। रामकृष्ण ने रानी को खणाऊँ लगायी। तुम खणाऊँ के लायक नहीं हो क्या? तुम्हारे मन में माया

के ख्याल नहीं हैं क्या? गुरू ने तो दयावान होकर तुम्हें खणाऊँ नहीं लगायी केवल दो चार गालियाँ देते हैं तो भी पसंद नहीं है। गुरू करोड़ों भलाईयां करके यदि आज गाली दें तो एक मिनट में करोड़ों भलाईयाँ भूल जाओगे। ऐसा है मन शैतान। गुरू से केवल आत्मां की निष्ठा करो बाकी दूसरी कोई बकवास सुनने के लिए वह तैयार नहीं है सब जवाबों में केवल वह आत्मां ही समझाएगा, मौन सिखाएगा। □

पत्र गीता भगवान का -77

कोई लिखता है कि घर वालों में भगवान नहीं देखने में आता। अपने वाले जो इच्छा रखते हैं कि हमें प्यार करो हमारी होकर रहो उन इच्छा और स्वार्थ वालों को भगवान समझकर जाकर प्यार करेंगे तो भूल जायेंगे। ज्ञानी को किसी के लिए भी नफरत नहीं है यही प्यार है बाकी प्यार कोई करने का नहीं है। Love is not an action but love is a state of mind. मीरा कहती है 'भगत देख राजी हुई जगत देख रोई।' 'हम भक्तन के भक्त हमारे, कृष्ण ने कहा,–सुन अर्जुन ये प्रतिज्ञा हमारी।' ज्ञानी और अज्ञानी के ख्यालों में रात दिन का फर्क है फिर दिन और रात एक कैसे होंगे? जहाँ वह सोये पड़े हैं वहां वे जाग रहे हैं फिर कैसे सोये हुए जागे मनुष्य से मिल सकेंगे। ज्ञानी अन्दर में सबके लिए करूणा रखता है बाकी वास्ता किसी से भी नहीं है। जो हमें इस राह पर चढ़ाये आत्मा याद कराये वे ही हमारे सम्बंधी और सगे दोस्त हैं जो शरीर याद दिलाए उनसे दस फुट दूर रहना चाहिए। ज्ञानी को सारी दुनिया से मौन है केवल आत्माकार से बोलता है और सबको यह निश्चय कराता है। उसका किसी से भी दुनिया में Connection नहीं है। पता नहीं देह का उनको फिर औरों से क्या मतलब है किसी से भी वर्तण नहीं है केवल साक्षी दृष्टा है ना जगत का पर अपने

आप का दृष्टा है। वह जगत देखता ही नहीं है तो प्यार किससे करेगा। उसका प्यार तो अपने से ही है। है ही भगवान पर तुम्हारी झूठी मैं तीनों कालों में ही नही है। मीरा ने कृष्ण को ही जहाँ–तहाँ देखा पर अपने आप को नहीं देखा यही उसका अज्ञान था। तुम भी कहते हो कि मुझे गुरू जहाँ–तहाँ नज़र आता है माना नाम रूप पर अपना आप देखने से ही सच्ची शान्ति आएगी। नाम रूप से ऊपर उठो निराकार में टिको ओम में रहो। दुनिया के चाहे लाखों अनुभव हों उससे कोई आत्मसाक्षात्कार का वास्ता नहीं है। जैसे कितने ही कहते हैं कि तुमने शादी नहीं की है कि तो तुम्हें कौन सा अनुभव है सो ही ये अनुभव तो कुत्ते और सुअर को बहुत अधिक है तो फिर उन्हें जल्दी आत्मसाक्षात्कार होना चाहिए। ध्रुव भक्त, प्रहलाद, मीरा, विवेकानन्द सबको छोटी उम्र में साक्षात्कार हुआ। बाहर का कोई अनुभव नहीं चाहिए । खाली और साफ दिल में भगवान जल्दी बैठेगा। □

पत्र गीता भगवान का -78

वाह–वाह भगवान के कितने ना शुकराने गाए, उनका एक–एक वचन हीरे मोतियों से बढ़कर है। आज तो ऐसा सत्संग हुआ एक–एक वचन दिल में छप गया पूरे गुरू के वचन में ऐसी ताकत है जो एक Lecture से मुक्त कर सकता है, बशर्ते कि जिज्ञासू पूरण श्रद्धा वाला हो। दादा ने कहा– तुमको ऐसी कमज़ोरी ने घेर लिया है, मैं कैसे बोल सकता हूँ , पर हिम्मत रखकर बात करो तो तुम्हारे मुख से भगवान बोलेगा दुनिया में बड़े में बड़ा वही है, जो अच्छा बोल सकता है World goes with speaker. पहले बात करना सीखो, दूसरों को बताओगे तो तुम्हारा गुरू हो जाएगा, तुम्हारी दाढ़ी पकड़ेगा कि ये कैसे हमें समझा रहा है। तुम कैसे चल रहे हो। मन को पता चलता है इसमें सारी दुनिया में प्रगट किया है कि मैं आत्मा हूँ , इस कारण डर और शर्म में डूब मरता है। दृष्टांत–बेड़ी वाला, एक रास्ते पर हम चलते हैं तो दूसरे पर पहुँचते हैं। दादा ने बताया– "मता पहिंजी तू हलाई ...." भगवान जहाँ भी चलाए हम उस रस्ते पर चलते रहें। हमारी कोई भी Will नहीं चलेगी।

राय बहादुर मेघराज दान करने के लिए भी तैयार होता था, पर कुदरत ऐसी होती थी कि दान करके भी पैसा वापस ले लेता था। माया मिलती भी है पर खर्च

करने का हक़ जिसको मिलता है वही करता है। बहू सास को कहती है– कि कंजूस है, पर खुद के हाथ में पैसा आता है तो ताले लग जाते हैं।

इस बात पर किसी ने पूछा कि जब पैसे पर हक़ नहीं है तो कंजूस को दोष क्यों दें?

नौ कुने सोने के हाथ आए पर खर्च करने का हक न था। जवाब मिला– कंजूस का स्वभाव अवगुण है, उदार दिल गुण है। स्वभाव को भाव से वश में करो। अपना स्वभाव मिटाकर ज्ञानी जैसे गुण धारण करे। सम्बंधियों का हक होगा तो खींचकर भी ले जायेंगे पर जब हम अपना समझकर किसी को देते हैं तो कर्ता बनते हैं। छोटे दायरे में फँसकर पुत्र समझता है जो कमाया वो परिवार का है पर जब वो उदार होकर औरों के लिए खर्चता है तो भगवान उसका हक हिसाब उसको देता है। माया जो अपने से अधिक है वो जोड़कर रखने के लिए नहीं पर खर्चने के लिए है। भगवान माया देकर हिसाब लेगा कि कैसे खर्च किया? गुरू पर ये हुकुम न चलाओ कि तुम रूको मैं आ रहा हूँ या पीछे मुड़कर देखो, इंतज़ार करो इससे अच्छा हम गुरू से पहले आकर पहुँचें। गुरू और शिष्य के मिलने का Time अगर पाँच बजे है तो पौने पाँच बजे पहुँचो। गुरू को कहते हो कि नामरूप की बात नहीं करो, तो ये हमारे लिए भलाई है हम गुरू के कर्म में न जायें तो गुरू अपने आप ही नामरूप से हमें बुलाता है।

परहेज करना है जिज्ञासू को न कि ज्ञानी को, ज्ञानी से किसी भी बात में टीस नहीं करनी चाहिए। वो तो अपना कार्य करके ठीक है पर जिज्ञासू जो माया में अटका हुआ है उसे तो त्याग करना है। दृष्टांत चीनी वाला दृष्टांत "मुहिजी आस ईहा, अरदास ईहा, सतगुरू ओखा सदा ई मनाईन्दी रहयाँ।" इस भजन का अर्थ है कि गुरू कैसा भी चले हम अपने फर्ज़ में पूरे रहें। मुझे क्या करना है, यही मुझको सोचना है। गुरू की करनी गुरू भरेगा, चेले की करनी चेला। भजन बताओ तो अपने लिए न कि दूसरों के लिए। गुरू कोई परीक्षा लेता है तो Fail हो जाता है, भजन गाओ तो अपने लिए। मेरा मन जब भजन के अर्थ में टिका होगा तभी दूसरे पर भी असर होगा, बाकी Tape तो सभी के पास भरे रखे हैं। हर एक को आज़ादी मिलती है तो खुश होता है क्योंकि आत्मा आज़ाद है, किसी भी बंधन में नही है। हरेक चाहता है कि मैं आज़ाद हो जाऊँ, पर ये आज़ादी मिलती नहीं है, लेनी पड़ती है। देश आज़ाद हुआ तो क्या हुआ जो मन गुलाम है। सारी दुनिया मन की गुलाम है फकत ज्ञानी को सच्ची आज़ादी है। मन जीते जग जीत। हमारा मकसद है मन को जानना पर सम्बंधियों में फँसकर भगवान को भुला बैठे हैं। जब पूरा सतगुरू मिलता है तभी सच्ची खबर बताता है। गुरू बिना कोई राह ना पाए। अथवा आप भूलके सब माया में मस्त बैठे हैं। शराब, कबाब, नाच–गाना, कमाना इसी में

अज्ञानी पूरे हैं।

आदतों के गुलाम हो गये हैं, बीड़ी–सिगरेट के गुलाम हैं। कितनी भी ज्ञान जोखिम में डालकर आधी रात को भी पीने जाएंगे कि मैं रह नहीं सकता। हर कोई वस्तु फायदे की है, जब उसका Use पूरी तरह से हो। शंखिया ज़हर है पर हकीम उसमें से दवा बना लेता है। पहले बालक बनते हो, फिर मालिक बनते हो। पहले ही सेवा करनी है पर लेनी नहीं है। गुरू सिखाने के लिए सेवा लेता है बाकी तो वो सब कुछ कर सकता है। गुरू के प्रेम में जब हम शीश देने के लिए तैयार होंगे। "तुमने मुझको प्रेम सिखाया" गुरू की सूरत सबमें देखनी है। जल्दी जाग जाने से ही इंसान बड़ा होता है, सोने वाला कभी भी जीवन की पहेली को सुलझा नहीं सकता। उठो जागो, जागकर तुरंत बिस्तर छोड़ दो। नींद भी अपने हुकुम में है। सत्य या असत्य दोनों ख्याल बंधन हैं। नींद के समय मन को बाहर निकाल फेंको, जिससे नींद न खराब है, संकल्प पे जीत पाओ। ज्ञान के बाद कई ऋद्धियाँ–सिद्धियाँ भुलाने आएंगी माया मोहिनी रूप धारण करके आयेंगी पर हमें आगे बढ़ना है। माया में खुश होकर नहीं बैठना है।

हरेक आनन्द को खोज रहा है पर भूलकर माया में ढूँढ़ने लगता है कोई कहता है मैं डाक्टर बनूँ, वकील बनूँ तो सुखी होऊँ, मृगतृष्णा के जल के पीछे दौड़ता

रहता है। आत्मा जो पहले से ही आनन्द स्वरूप है पर हम समझते हैं ये शरीर न मरे, दादा ने बताया–एक माई ने मीठे चावल बनाये गरीब को खिलाया पर एक को करछी मार दी, बदकर्म का फल ज़रूर मिलेगा। इधर–उध र नहीं होगा। Yes और No का Power होना चाहिए। सबसे बड़ा गुलाम बनने वाला तुम्हारा झुकना है दूसरे की परवाह ही गुलाम बनाती है, हम चोरी भी न करें, न करायें हमारे में भी कोई स्वार्थ न रखे, ना हमें रखे। ज्ञानी की मुस्कराहट बच्चे की तरह निर्दोष है। हर वक्त समझो, भगवान मेरे साथ है। तुम सदा मेरे साथ हो, गुरू का परम प्यारा वो है जो सबको जाकर ज्ञान सुनाता है, गुरू से जोड़ता है। अगर ये सोचते हैं कि मैं ही मैं रहूँ, गुरू मुझे ही प्यार करे, तो दुःखी होकर मरेगा।

दुःख ही दुःख है सुख लेने में,
सच्चा सुख है सुख देने में।

भगवान सबका है, किसी एक का होकर नहीं रहेगा। दूसरा कोई सुख लेता है तो वहाँ मुझे खुश होना चाहिए कि उस रूप में मैं सुख ले रहा हूँ। ईर्ष्या और जलन से हम कभी ऊपर नहीं चढ़ सकते। गुरू जब देखता है कि जिज्ञासू आत्मा का ख्याल कर रहा है, माया को काट कर बैठा है तो उसका दिल भी होता है पर जो माया का ख्याल करता है, बच्चों व घर में अटका हुआ है, उनसे गुरू उस तरह उपदेश नहीं करेगा। एक के लिए दवा है, दूसरे के

लिए ज़हर। लायक बनकर आओ।

आपस को जो भला कहावे,
तिसहि भलाई निकट न आवे
आपस कह कर कुछ न जनावे।

यहाँ हर एक अकेला आया है, अकेला जाएगा। किसी बंधन में न अटको, सीप जैसे बूँद को मोती बनाओ।

कार्य कोई भी नहीं करता अपने आप ही होता रहता है। Aim ऊँची रखो, फिर कहीं भी पहुँचों तारों पर तीर मारोगे तो मुश्किल से पेड़ तक लगेगा। मैं बोलने वाला कौन हूँ तू प्रभु प्रेम में। □

और सुख,

Om

पत्र गीता भगवान का -79

तुम्हारे जैसा हुआ न होगा। जवानी में जिसे इस जगत के पदार्थ और भोगों से वैराग्य आता है उसके जैसा अति भाग्यवान तो संसार में कोई विरला होगा। बालकपन में यह ज्ञान होना सोने के बराबर जवानी में चांदी के बराबर बुढ़ापे में ताँबे के बराबर नहीं तो धूल के बराबर यह मनुष्य है। पर इस राह पर आने वाले के लिए मन, सम्बंधी और देवता रूकावटें डालते हैं जिसमें उसका फायदा ही है। रूकावट ही ऊपर चढ़ाने की सीढ़ी है। जो जिज्ञासू गुरू का हाथ पकड़ कर सीढ़ी चढ़ता जाता है वह जरूर पहुँचता है। पीछे जिसने निहारा (देखा) वह ठोकरें खाता है। पहाड़ पर चढ़ते समय जब हम नीचे निहारते हैं तो सिर चकरा जाता है। युधिष्ठिर उसके भाई और द्रोपदी। युधिष्ठिर तो हिम्मथ से आगे बढ़ता गया पर उसके भाई और द्रोपदी पीछे बहुत दुखी हुए, किसी को काँटे लगे तो कोई बीमार हो गये। बहुत आवाज़े लगायीं पर युधिष्ठिर ने कहा– 'मैं सच के रास्ते पर चलकर पीछे निहारना दोष समझता हूँ।' उन सबने पीछे से प्राण त्यागे पर युधिष्ठिर ने उनकी कोई मदद नही की। बोला सच की राह पर कोई भी फर्ज़ धर्म की रूकावट आये तो उसे तोड़ना चाहिए। रामतीर्थ ने लिखा है गुरू के पास आकर कोई कहता है कि गुरू सबकुछ तुम्हारा है, तन, मन, धन

तुम्हारा है, मेरी डोर तुम्हारे हाथ पर अभी घर पहुँचते हैं तो पति से बोलते हैं शादी पर जाना है सोने के चूड़े घड़वा (बनवा) कर दो, बच्चों के लिए खर्च पूरा नहीं है घर में राशन पानी खतम है। तुम पंचों के बीच में मेरे साथ शादी करके हाथ पकड़कर आये हो तुम्हारा फर्ज है मुझे खुश करना। बस फिर तो बेचारे गुरू को दिये गये वायदे भूल जाते हैं। बोलता है कुटुम्बी भी तो सच कहते हैं फिर तो 'भाई रो तेरी औरत विधवा हो गयी' वाला हिसाब आकर होता है। मतलब कि यह माया चारो तरफ से फैली पड़ी है जीव को उलझाने के लिए। एक न दूसरी तरह से मन ठग कर जाता है। जिस प्रकार एक मनुष्य जब भगवान से मिलने के लिए तपस्या करता है तो इन्द्र का तख्त आकर हिलता है। शरीर, समाज, परिवार सारे जगत से ऊपर हो जा, ऊपर चढ़ जा तेरे को कोई शक्ति रोकने वाली नहीं है। विवेकानन्द ने कहा है सारी दुनिया तलवारें लेकर आये, नज़दीक से नज़दीक सम्बंधी बदल जायें, सारी दुनिया बेइज्जती करे तो भी मैं अपने इरादे से एक इंच भी पीछे नहीं हटूँगा। दुनिया को लात मारो दुनिया सलाम करे। दुनिया से डरोगे तो दुनिया दबाएगी, चैन न लेने देगी जान जलायेगी, तान के सीना चलो दुनिया तुम्हारी है, दुनिया के बाप हो तुम दुनिया तुम्हारी है। मनुष्य को न किसी ने बेचा है न खरीद किया है तो भी हालत गुलामों से भी बदतर है। जो खुद सत चित्त

आनन्द स्वरूप मुक्त परमात्मां वह यहाँ अपने को इच्छा के बंधन में फंसा कर किसी का बेटा किसी का पति, किसी की बेटी किसी की पत्नी समझ कर सैंकड़ों दुख दर्द अपने ऊपर लाद रहा है। कैसे चाकर (गुलाम) बन गया है मैं नहीं जानता, था तो मैं सचमुच सुल्तान (बादशाह), यही अरमान (दुख) है कि क्या से यहाँ क्या बन गया हूँ।

महात्मा गाँधी ने लिखा है जिसकी पूरन ख्वाहिश सच्चाई तक पहुंचने की है वह भले ही शादीशुदा हो पर अपने को क्वारा (अविवाहित) समझे। अपने ऊपर कोई भी जवाबदारी या बोझ न समझे। शादी स्त्री–पुरूष को गुनाहों से बचाने के लिए और ईश्वर के बिल्कुल नज़दीक पहुँचने के लिए रची गयी है। प्रेम, भक्ति और पवित्र विचारों में रहने के लिए एक दूसरे को साथ देना चाहिए नहीं तो शादी मोह और काम रूपी जंजीरों में बंधने के लिए किला है। हमें जाँचना चाहिए कि दिन पर दिन हम ईश्वर के नज़दीक जा रहे हैं या माया के। जिस दुकान में खोट हो उस दुकान को एकदम बंद करना चाहिए। जिस तरफ जाने से हमारा आतम धन लुट जाये हमारी आजादी जो जनम का हक है वह छिन जाय तो वह संग ही नहीं करना चाहिए। मोक्ष मार्ग में धन और भोग रूकावटें हैं इसलिए उनका त्याग करना चाहिए। मोह ममता ऐश इशरत में पड़कर फलाना व्यक्ति सच की मंज़िल पर पहुंच गया है ऐसा एक भी मिसाल (Example) दुनिया में नहीं

मिलेगा। कोई भी बड़ा आदमी यदि दुनिया में हुआ है तो उसने सब कुछ त्याग करके ही सब कुछ पाया है। आत्मा पवित्र है इसलिए पवित्र वस्तु को प्राप्त करने के लिए हमें भी पवित्र बनना पड़ेगा। जिस प्रकार एक तरफ घड़े को भरते जायें और दूसरी तरफ किसी छेद से उसका पानी बहता जाये और हम समझें कि धीरे–धीरे भर जाएगा। इस प्रकार एक तरफ ज्ञान सुनें और दूसरी तरफ कोई मोह, ममता और विकारों के वश होकर आत्मिक शक्ति खो बैठे और समझे कि धीरे–धीरे पहुँच जायेंगे वह तो धोखा खाता है। लोक वासना, देह वासना और शास्त्र वासना ये तीनों दीवारें पार करनी हैं। न किसी को गुलाम बनायें न किसी के गुलाम बनें। हर एक को अकेले ही अपना उद्धार करना है। शरीर और सम्बंधियों से तीनों कालों का वास्ता नहीं है। ये तो सिर्फ परीक्षा के लिए मिले हैं तो उनमें से जो मोह निकालकर ऊपर चढ़ेगा वही भगवान से मिलकर एक हो जाएगा। नाव यदि किनारे से बँधी होगी तो आगे नहीं बढ़ सकेगी । वहां की वहां खड़ी रहेगी व्यर्थ चप्पू चलाते रहेंगे बेवकूफों की तरह। यह बड़ी सावधानी की सीढ़ी है। यदि एक बार भी कोई माया में फिसला तो फिर नये सिरे से "जपु–साहिब" पढ़ना पड़ेगा। इसलिए गुरू का संग करके जल्दी पास होकर सर्टिफिकेट लेना चाहिए। स्वामी शिवानन्द ने लिखा है कि पूरी शान्ति प्राप्त करनी चाहते हो तो (मैं धीरे–धीरे अभ्यास कर रहा हूँ, मैं कल से पूरन

ब्रह्मचर्य सब इन्द्रियों को कब्ज़े में रखने की कोशिश करूँगा) इस प्रकार के विचारों को अपने यहाँ स्थान नहीं दो। ये माया के मोहित करने वाले मार्ग हैं। ये बातें शक वाली हैं जो कुछ भी करना है वह अभी और इसी वक्त ही करना चाहिए। कल है ही नहीं। जिसने एक बार पूरन विश्वास से सच को पहचाना है वह माया को जान जाता है कभी भी उसके मोह में नहीं आता है। काम क्रोध रूपी वासनायें उसको छूते ही अपने आप नाश हो जाती हैं। रामतीर्थ ने पिता को कहा कि अब मैं रामतीर्थ बिक गया हूँ इसलिए जो फर्ज़ आपके मैं पूरे करता पालता वह मेरा भगवान पालेगा अब मेरे बदले आप सब उम्मीदें भगवान में रखो। मतलब जल्दी ही उन्हें खुद भगवान के आधार पर खड़ा कर दिया। हमारे मोह निकालने से सम्बंधियों का भी उद्धार हो जाता है। पहले बराबर (सचमुच) वे दुखी होते हैं पर फिर आखिर सुख का रास्ता हमसे ही पूछना पड़ेगा। मैं खेल का दृष्टा हो जाऊँ न कि कर्ता। कोई कहता है कि बेकार मेरे कारण कोई क्यों दुखी हो तो वैसे वे कभी सुखी हैं क्या? अपने स्वार्थ इच्छाओं और मोह के कारण तो हमेशा ही दुखी हैं। उन पर दया करना है मोह में गिरना। दूसरा देखूं तो दया करूँ। हूँ ही जब मैं तो ये सारा खेल मेरा है। □

दादा भगवान के पत्र- 80

प्रारब्ध सबकी बनी हुई है। तुम्हारे सिर पर पग (बोझ) नहीं है। माया से मोह निकालना चाहिए। दिन रात सत्संग में रम जाओ। तुम बता कर थको तो मुझे याद करना कैसे पीढ़ी (बड़ी उम्र) में अभी बता रहा हूँ और लिख रहा हूँ जब डाक्टर ने भी मनह की है। तुम यह सत्संग चालू रखो तुम्हारे काम परमात्मां खुद सम्भालेगा अपने आप। कबीर भक्त के पास चोर आए पर देखा कि दो पहरेदार तो बाहर खड़े हैं, कबीर से यह बात की, कबीर ने कहा मैंने पहरेदार तो रखे नहीं हैं। समझ गया कि भगवान राम मेरी चिन्ता करते होंगे इसलिए भगवान को तकलीफ से छुड़ाने के लिए धन दान करके खाली होकर बैठा। यह है धन को सचमुच निकम्मा करके समझना। □

दादा भगवान के पत्र- 81

सत्यकाम आया ऋषि गौतम के पास बहुत समय तक रहा। एक दिन ऋषि ने कहा 10 गायें लेकर जाओ जंगल में, जब तक 100 न हो जायें तब तक वापस नहीं आना।

One day he feels, he is one with all that is one with birds and animals, plants and trees, sand and stones. One with the river and breeze, one with sun, moon and stars. He returns to Guru, who said, "Now there is nothing more you need to know."

प्रिय तुम्हारा सत्संग इतना अच्छा चल गया है जैसा तुम्हारा नाम है। तुमने जिन्हें आप समान बनाया है वे गवाही दे रहे हैं। तुमसे पूछने की भी जरूरत नहीं रही है। भगवान ने अपने प्यारे भक्त पता नहीं कहाँ–कहाँ रख दिये हैं। सच गीता में कहा है कि निष्काम कर्म का फल निष्काम ही है। अब तुमने अस्पताल खोली है तो विरह के बीमार आते जायेंगे।

When the Chella is ready, the Guru is there. □

दादा भगवान के पत्र-82

जब जब फुर्सत मिले तो उत्तर प्रश्न करना चाहिए। रोज़–रोज़ कापी पढ़नी चाहिए तो ज्ञान पक्का होगा। सुबह को Exercise करो शुकरानों की। मुझे ध्यान में रखोगे तो कभी भी भूलोगे नहीं। इस ज्ञान से अनेक फायदे याद करते रहो और दूसरों को भी बताया करो और मुझे भी लिखकर भेजा करो तो पता चले कि तुम कहाँ तक पहुँचे हो।

Why fear when I am everywhere. Where is not God?

खम्बे से भी निकल आया, साड़ी में भी बैठा था द्रोपदी की। कुम्भार की ईंटों की भट्ठी में कैसे बिल्लियों को बचाया वगैरह। हुकुम के अन्दर सबको चलाता है। दुनिया को इशारे से चलाता है। गुस्सा तभी करते हैं जब आत्मां नहीं देखते है। घड़ी इक विसरूं राम कूं तो ब्रह्म हत्या मोहे होय। पुत्र, स्त्री, नौकर, सेना, कुत्ते, ब्राहमण में आत्मां देखो नहीं तो आतमघाती हुए। मन है ही नहीं। सब तुम्हारा ही ख्याल है, यह भ्रम है। जड़ चेतन भगवान है तो फिर मन कहां है। बस कर बस कर आहे ई अल्लाह। अल्लाह आदम बनके आया है। निराकार संकल्प करके अनेक हो गया है। One became many. अब कण–कण में भगवान देखो, घट–घट वासी देखो। अद्वेत यानि One without second. दूसरा देखना द्वेत है। जिसे बोली नाहे

बिन जी तिते टिके कींअ ट्रियो। तुम त्रिपुटी में त्रिपुटी रहित रहो। कसाई तलवार बकरा आत्मा करके देखना है। ज्ञाता ज्ञेय ज्ञान सब आत्मां है। मतलब 'आत्मा पश्यन्ति आत्मां।' राम नाम आतम में सोधे आतम में पारब्रह्म लहन्ते। जात ही जात को पहचानती है। सब अपना ही स्वरूप करके देखना है। मैं ही तो हूँ। Without him there is nothing that was made. जो भी बना है भगवान के सिवा नही है। बीज मंत्र याद करो। सबमें परमात्मा है। मन से बैठकर मनन करके निश्चय करो कि सब आत्मां है। मन ही ते मन मानिया, न कुछ मरे न जाय। ऐसे मन अमन हो जाएगा तुम्हारा ख्याल ही मन है। मन माना विकल्प यानि खराब ख्याल, पर तुम हमेशा संकल्प अच्छा करो। संकल्प करना तो तुम्हारे वश में है। Make the best of everything. आशावादी होना चाहिए। दिल छोटा नहीं करो चाहे कुछ भी हो जाये। मन को केवल पता चले कि तुमने मन को पहचान लिया है चोर, दुश्मन, जिन्न हैं तो अपने आप ही गुम हो जाएगा। मन का धर्म है भय लाना पर तुमको डरना नहीं चाहिए मन कुछ भी नहीं कर सकता है। मन का मुखी है बुद्धि। जिसकी बुद्धि निश्चयात्मक है उसका मन कुछ भी नहीं कर सकेगा। अधिक से अधिक क्या होगा तो अवश्य ही होना है। उसका ख्याल क्या करा जाये? प्रारब्ध Fix है, विकल्प को उठने ही नहीं दो।

कहो कि ऐसा नहीं होगा। भलाइयाँ याद करो। तार पढ़ने से पहले सब विकल्प शुरू करके नहीं बैठो। अपने सभी प्यारे सम्बंधी मरते हुए देखते हो। दिल को हमेशा अडौल रखो। दिल में धीरज सबसे सुन्दर। चिन्ता ताकी कीजिए जो अनहोनी होय। मुसीबत में मुस्कुराओ। सबको फ्री करो। Face करो (मुंह दो)। इंतजार नहीं करो पर इलाज करो भले। दुख शरीर को लगेगा पर मैं आत्मा हूँ। ये नहीं भुलाओ। पानी से पहले कपड़े नहीं उतारो। कुंआ भले खोद लो पहले ही फिर आग का डर नहीं रहेगा। भावी क्या नहीं कर सकती है। गुज़री (बीती बातें) को याद दिलाकर भविष्य की चिन्ता करा कर मन राज्य चलाता है। तूफान के बाद शान्ति बहुत अधिक हो जाती है। दुख के समय परीक्षा हो रही है। दुख भी उतर जायेंगे पर हमारी परीक्षा हो गयी। अपनी आबरू नहीं गंवा बैठना। इस देही की बहु साधना करें, मन ते कबहुं ना विरणा टरे। क्या भी करो तो कर्म साधनाओं से मन नहीं मरता। यह वैराग्य से होगा मन बेचें सदगुरू के पास तिस सेवक के कारण रास। मन मारन की औषधि सतगुरू देत बताय। Every good thought clears the dark clouds of evil thoughts. मन का भूत लगा है तुम्हें। मन है ही नहीं तो मिलेगा क्या? आएगा जायेगा कहां से? Look at the ghost and ghost will disappear. तुम्हारा ख्याल तुमको दुखी न

करे तो भगवान भी दुखी नहीं कर सकेगा। क्रोध करने वाले को नर्क, नहीं मिलेगा पर जहां बैठेगा वहीं नर्क बनाता है।

पतांजलि के योग शास्त्र में लिखा है कि समाधी करनी चाहिए उसे खण्डन करते हुए अष्टावक्र महाराज ने कहा है कि तू पहले ही आत्मां है उसे अब समाधी काहे की करनी है? फिर समाधी में बैठने पर यदि आत्मांकार होते तो सभी समाधी लगाकर भगवान हो जाते मन को वश में कर लेते पर किसी ने भी नहीं किया है। अष्टावक्र ने राजा जनक को कहा कि अज्ञान है वह जायेगा ज्ञान से बाकी कर्म काण्ड सब व्यर्थ हैं। ज्ञान मिलता है पूरन सतगुरू से जो देह अध्यास गंवा कर आत्मां का निश्चय कराता है। जो आत्मांकार है सो मुक्त है। वह आत्मां मरता नहीं है। सच्चे गुरू से नम्रता भाव से उत्तर प्रश्न करके संशय भ्रम शक शुबे दूर करके आत्मां का पक्का निश्चय होता है और देह अध्यास जाता है। आप विसर्जन होय तो सिमरन कहिए सोय। शरीर विकारों सहित भूल जाता है क्योंकि परधर्म छूट जाते हैं। प्रारब्ध अनुसार करन करावन अपने आप Automatic सब Fix है शान्ति में मौन में रहते हैं अकर्ता समझते हैं। शरीर छोड़ देते हैं प्रारब्ध पर बाकी सब पुरूषार्थ करना है परमात्मां को समझने के लिए जिसके लिए हमें विवेक वीचार मिला हुआ है पर चाबी सतगुरू के पास है युक्ति वह बताता है फिर

तो आठ पहर समाधी है इस तरह सतगुरू के प्रेम में मन अमन हो जाता है। वैराग्य से जगत और जगत के सभी पदार्थ मिथ्था समझ में आ जाते हैं। क्या माँगू कुछ थिर नाहीं। सब पदार्थ अमानत भगवान से मिले वे आपे ही छूट जाते हैं इसलिए हमें Non possition रहना चाहिए, ममता रहित। मेरा कुछ भी नहीं है पर सब कुछ मैं ही तो हूँ, कहां मैं नहीं हूँ , ऐसी घड़ी इक विसरूं राम कूं तो ब्रह्मं हत्या मोहे होय। सम देखो सबको आत्मां जग को। सर्वज्ञ, समता, अद्वेत अब जब आत्मां भूले तो कुत्ता ब्राहमण अन्धा गरीब पति नौकर देखते हैं तो फिर आतमघाती महापापी हुए। ब्रह्मांकार विरती से कोई दुख न सन्तापे। गजे भी राम भजे भी राम। या प्रीतम का देखना या प्रीतम की पचार (चर्चा)। यह ज्ञान गुरू मुख नाम झपै इक वार। ममता नहीं है तो फिर ख्याल किसका करें? दान काहे से करेंगे और फिर त्याग किसका करें? प्रभु ते भूलियां त व्यापन समेई रोग। अहमता ममता कर्ता सब समता भाव से मास हो जाते हैं कोटि कर्म बंधन के मूल। अज्ञान जायेगा ज्ञान से। सत्कर्म करने वाला भी अहंकारी हुआ जिसे फल की इच्छा भी है। Good deel binds the door. पर निष्काम कर्म केवल निर्दोष है। सकामी और स्वार्थी कृपण है ऐसा कृष्ण ने कहा है। निष्काम कर्म केवल ज्ञानी कर सकता है। अज्ञानी केवल सकामी कर्म कर रहे हैं। जगत और जगदीश दोनों अनादी हैं और मैं

और मेरी परछाई जैसे अनादी हैं पर जगत चाहे परछाई मिथ्था है और जगदीश और मैं सत्य हूँ। जगत मिथ्था और ब्रह्मसत्य है। तुमने जिस–जिस ने मुझे सुना है उन्हें कैसे भूला सकूँगा। अपना आप देखता हूँ। तुम्हारा बोलना सुनता हूँ तो जैसे मैं बैठा बोल रहा हूँ। तुम्हें भला अपना क्या अब बोलना आता है। सब मेरा बोलते हो बैठकर। अपना बोलना सुनकर भला कौन खुश नहीं होगा? □

पत्र गीता भगवान का -83

ज्ञान है इसी वक्त के लिए। ज्ञान में कितनों पर परीक्षायें आ गयी हैं किसी को दुख लगे हैं किसी को लगने हैं। सभी तैयारी कर लो तो होगा ही कुछ नहीं। जगत है ही सपना तो सपने की बात सोचना भी पाप है। सब कुछ भुला दो केवल भगवान को ही नज़र में रखो। आखर मिला न रब और सब मिला तो क्या हुआ। भगवान सब भलाई करता है जिसको अपने से मिलाकर एक करना है उसे ही दुख भेजता है निभागों को सुख भेजकर उन्हें माया में अंधा करता है। काम सब अपने आप चलेंगे पहले से भी अच्छे। चरखे अपने आप चलेंगे टांग पर टांग चढ़ाकर बैठ जाओ। कृष्ण अर्जुन का कोचवान बनकर बैठा अर्जुन टेक लगाकर बैठा था। खुशी करो जो भगवान पहले ही मिल गया है। निश्चिन्त बेफुर्न हो जाओ। कांच के खिलौनों का क्या भरोसा है। सत्य एक ही परमात्मा है। मौत है ही नहीं। लोगों का आना जाना रोना पीटना कर्मकाण्ड सब अज्ञान है। हमारे सत्संगी बड़ी बिरादरी का काम करते हैं। झूठे सम्बंधी रूलायेंगे, भगवान का जुल्म दिखायेंगे पर हमें इंसाफ देखना है तेरा भांणा मीठा लागे। चाहे दुख चाहे सुख दो मुझे सब कुछ तेरा मंजूर है। यह भजन तुम्हारे पास है या नहीं? यह ज्ञान कभी गिरने नहीं देगा क्योंकि निष्कामी गुरू के मुख से निकला, सुना ज्ञान

आर–पार तीर का काम करता है। तुम्हारी रग–रग (नस–नस) में यह ज्ञान का नशा घुस गया है तुम निःसंदेह मुक्त हो। तुम्हें भगवान ने चुनकर ढूंढ निकाला है सारी दुनिया से। हम भाग्यशाली हैं जो तुम जैसे सच्चे प्रेमी मिले हैं नहीं तो कौन आज कल भगवान को इज्जत देता है। यदि भगवान को देगा तो उसके गुरू के नहीं देगा। जिनको मेरे गुरू के लिए इज़्ज़त नहीं है उनके लिए मुझे भी नहीं होगी। सबके लिए प्यार बढ़ाओ सब भगवान हैं। Love all alike. गुरू का शरीर न जाने कितना समय हो। आपके लिए खास महर की दृष्टि है जो आप की धरती पर पैर घुमाते हैं। आप भी जब थके तो बताना हम एकदम देहली आगरा रवाने हो जायेंगे। भगवान सब आपको सिखाने के लिए केस भेजता है। आप का मन पक्का होता जाएगा, वैराग्य ज्ञान सब पक्का होगा दुख दारू सुख रोग भया। □

और सुख आनन्द
तुम्हारी गीता

पत्र गीता भगवान का -84

तुमने ख्याल से सब ठीक लिखा है पर यह ब्रह्मज्ञान अभी भी कुछ ऊँचा है जिसे चारो ही तरफ से समझना हैं दुनिया में कोई भी बंधन ऐसा नहीं है जो गुरू के संग व महर से न कट सके। दादा बोलते हैं तुम्हारे में इतनी शक्ति है कि पहाड़ को बोलो हट जाओ तो हट जायेगा। पर तुम बोलोगे ही नहीं, कहोगे पहाड़ कैसे हटेगा ये तो केवल बातें हैं पर विश्वास करामतों की करामत है। बंधन किस पर आया है? तुम कौन हो? किसने शादी की है? कौन माता–पिता हैं? कौन सास ससुर हैं? भगवान खुद ही परेशानी की पोशाक पहनकर तकलीफ लेकर हमारे सामने आकर खेल रहा है केवल नकाब उठाकर देखो। 'हवाओं तुम नकाब उसकी उठा देना वो जब आयें।' कृष्ण अर्जुन को जब मिला तो भी अर्जुन बेचारे को अपशगुन देखने में आ रहे तो यह मन है जो नाउम्मीद और निराश कर देता है। जिन्होंने शादी नहीं की है उन्होंने ने अच्छा किया है तुम उन्हें प्रणाम करती हो पर सारी दुनिया तुम्हें प्रणाम करेगी जब तुम यह आदर्श दुनिया को दिखाओगी कि मेरे लिए शादी–शादी नहीं है पर परमात्मां की तरफ आगे बढ़ने की सीढ़ी है। बन्धन में ही मुक्ती का मजा है। अपवित्रता सामने आये, क्रोध का कारण सामने आये पर तुम्हें शान्ती है, तुम निरइच्छा हो तो कोई भी दुनिया में,

बल्कि भगवान भी तुम्हें जीत या हिला नहीं सकता। ऐसे तो हमनें कई लोग दुनिया में आजाद देखे हैं जो बिल्कुल अकेले हैं जिन्हें कोई बंधन नहीं है न पति न बेटा न माया की चिन्ता, फुल आज़ादगी है पर उनका मन ही रूकावट है जो इस तरफ नहीं बढ़ सकता है। हमें कभी भी बाहरी शरीर की आज़ादी की इच्छा नहीं रखनी चाहिए पर मन से आज़ाद हो, मन जीते जग जीत। मन में संकल्प विकल्प मोह इच्छा ही है जो बंधन का कारण है बाकी जो आत्मां में है वह जेल में भी जेलर साहिब है। मैके घर में भी चार दीवारें पांचवी छत थी ससुराल में भी वही घर है। यदि सास ससुर में माँ–बाप से अधिक भावना रखें और प्यार रखें तो उनका मोह अच्छी बहू में उतना ही पड़ेगा जितना माँ का। सब को प्यार, सेवा, हमदर्दी, इज़्ज़त चाहिए वह देने में हमारा क्या जाता है। नम्रता के एक अक्षर में ही सारा ज्ञान समाया पड़ा है। हम प्यार में एक रानी को भी वश में कर सकते हैं। भगवान भी खुद प्यार के वश आता है तो बाकी सास–ससुर कौन से भगवान से बढ़कर हैं? आज English में एक Point पढ़ी लिख रही हूँ To be free from controle of others one should be wise enough to controle himself.

सारी दुनिया हमें छोड़कर बैठी है यदि हम भी दुनिया को अन्दर से छोड़े तो।

Give as much freedom to every

one and everything as you do to the air or sunshine. हर एक मनुष्य व पदार्थ को इतनी आज़ादी दो जितनी तुमने हवा और धूप को दी है। प्यार में बैठकर अपनी परीक्षा खुशी से दें। एक बार उन्हें इतना प्रेम व नम्रता से वश करे कि वे लाचार हो जाय हमे आजाद करने के लिए। यह ज्ञान ऐसा है जिसकी हर एक को जरूरत है, भले आज न मानें कल हर एक को मानना पड़ेगा कि **100%** यह सत्य है। हमारी सच्चाई क्या नहीं कर सकती है। पर धीरज बड़ा होना चाहिए। यह समय बड़ा अच्छा मिला है अपने को पहचानने का। अपने को ही बनाना है। सब घर के **Member** हमारे गुरू हैं जो ठोंक–ठोंक कर बनाते हैं, घड़ते हैं।

हमारे सभी अवतार गृहस्थी होकर आये हैं। दादा भगवान को कोई सन्यासी नहीं कह सकता है, न ही हममे से किसी ने संयास लिया है या जबरदस्ती बाहर की आजादी ली है। निरइच्छा वाले को प्रकृति जबरदस्ती झख मार कर रास्ता देती है। भगवान नारायण को **Readymade House** चाहिए। उसकी गति है जो इस शरीर से कार्य कराना होगा तब वह करायेगा। हम बिल्कुल **Thoughtless** और खाली हो जायें। **Fully surrender** कर दो। रथ दे दो दादा को। अर्जुन की तरह टेक लगाकर बैठो। गुरू कहता है कि you are not guilty तुम्हें विश्वास होना चाहिए और हाथ में चाहे हथकड़ियाँ क्यों न पड़ी हों

तो भी मुक्त अभिमानी मुक्त है। You are already God. शेर का औलाद तू शेर है। अर्जुन की तरह गीदी और कायरता की बातें तुम्हारे मुँह पर शोभा नहीं देती हैं। तुम आज ही आज़ाद आत्मा हो। आकाश कोई नहीं बाँध सकता है। तुम अपना स्वरूप पहचानो। फलानी बनकर तुमने पत्र लिखा है पर आत्मा होकर नहीं। न तुम हो न घर वाले हैं। है ही भगवान। सब तुम्हारी दृष्टि पर आधारित है। जैसे दृष्टि वैसी सृष्टि। तुम अपने जीवन पर आशिक हो जाओ कि मेरे जैसा न कोई हुआ न होगा। भगवान ने जहाँ जिस हालत में हमें रखा है वहाँ से ही अपनी परीक्षा (आजमाईश) देकर ऊपर चढ़े। दूसरों से रीस नहीं करनी है न ही किसी भी बात में अपने को कमज़ोर करके पछुताना है। आशावादी होकर हर बात से अपना फायदा लेना है। भक्त के पास गाय थी तो दूध मलाई खाता था यदि गाय चोरी हो गयी तो गोबर उठाने से छूट गया। दोनों हालतों में ज्ञानी समान है। बाहर की कोई भी हालत कोई भी बंधन तुम्हें अपनी मुक्ती से दूर नहीं कर सकता।

पूरन गुरू खुद भगवान हमें मिल गया है तो अब ऐसी कौन सी मुश्किल बात है जो नहीं हो सकती है। Impossible को Possible करने वाला गुरू है जिसने हजारो लोगों को मन चाहे तन की आजादी लेकर दी है, वह बाकी तुम्हें नहीं तार सकता है क्या ? यहाँ चाहे

कितने ही शहरों में हमारे पास कई शादी किए हुए सत्संगी है सत्संग में आते हैं, बच्चों वाले हैं किसी को माया कम ज्यादा है मतलब कैसी भी हालतें हैं तो भी संसार सागर में मानो तैर रहे है। उनकी शक्ल से ही ज़ाहिर है कि वे खुशी में फूले नहीं समा रहे हैं। केवल प्रेम और श्रद्धा से तर गये हैं। भले गुरू शहर में भी नहीं हैं तो भी उनकी याद में ही तर गये हैं। हमारे पास क्वांरी, शादी की हुई विधवाएँ, मर्द, स्त्रियाँ, बच्चे, बूढ़े सब आये हैं और मुक्त होकर बैठे हैं। ज्ञान के लिए कोई भी हालत, कोई भी सहूलियत ज़रूरी नहीं है केवल अपनी सच्चाई और सच्चे गुरू की ज़रूरत है। तुम कमज़ोर हो यह तुम्हारा भ्रम है। तुम आज भी सूर्यपुत्र हो अपने को दासी पुत्र नहीं समझो कर्ण की तरह। हमारा गुरू समर्थ है हमने उसे हाथ दिया है अब काहे की चिन्ता? भगवान ने कहा है मुझको भी सुहाता है ये बंधन कभी–कभी। सो तुम्हीं निराकार, साकार होकर शरीर के बन्धन में आयी हो पर फिर भी मायापति हो, शरीर रहित हो। Man is image of God. दुनिया की जिसको चाह नहीं राह में उसके रूकावट नहीं। मुझे बंधन काटना है यह चिन्तन नहीं करना है। पर मैं मुक्त हूँ, आत्मा हूँ यह निश्चय करना है। सब गुरू करेगा पर मुझे कुछ भी करना नहीं है। हम कुछ भी नहीं चाहें न ही कर सकेंगे, सब ख्याल छोड़कर रहो हाल में खुश। Be nothing and do nothing.

तुम गुरू की नज़र में आ गयी हो अब कोई भी परवाह नहीं करो। जब नज़र परम हो सतगुरू की तो मन्ज़िल भी दूर नहीं। तुम्हारे ऊँचे (अच्छे) संकल्प सब पूरे हुए हैं। गुरू के सर में दर्द डाल दो तुम नहीं सोचो।

Look not mournfully in to the past, it returns not again. wisely improve the present, it's thine, Go forth to meet the shadowy future without fear and with a manly heart.

Word that is not spoken never does any mischief. There is no happiness in the world. so we must just be happy without it. what ever deed you have in mind, do quickly. If you wait a bit, then time will suck the juice of it. Circumstances are things round about, we are in them, but not under them. Anger is a short madness. Weep not for him who departs from life, for there is no suffering beyond death. There is no care for birth and death surve to enjoy the interval. □

पत्र गीता भगवान का -85

सबको अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए। देने में जितना आनन्द है उतना लेने में नहीं।

शरीर कितना भी बीमार हो पर आत्मां बीमार नहीं है। शरीर और आत्मां को बिल्कुल जुदा करके रखना है। जड़ चेतन की गांठ आ गयी है वह गुरू आकर खोलता है। जो अपने को आत्मां समझ कर शरीर से सब सकामी कर्म करता आता है वह बन्धज्ञानी हुआ वह आगे चलकर धोखा खाता है। पहले यह सरल ज्ञान हर एक उठाता है कि मैं आत्मां हूँ पर घर, बच्चे, स्त्री, पति, फर्ज़, धर्म, लोकरीत, ये सब जैसे अज्ञान में करते थे वैसे ही करेंगे केवल दुख में दुखी नहीं होना है। सुख सब लेने हैं। जो शरीर से एक भी सुख लेता है वह आत्मां का आनन्द नहीं लूट सकेगा। ज्ञानी भी यदि अपने घर बाल बच्चों में फर्ज़, धर्म में बन कर बैठता तो तुम्हारी सेवा में नहीं आ सकता। वह भी यदि शरीर के सुखों का गुलाम तो तुम्हारे पास गर्मी, सर्दी बरसात में बीमार शरीररत्र से इतनी उम्र में नहीं पहुँचता। तुम्हारे आगे तो सब आदर्श हैं। यह कुर्बानी की सीढ़ी है। जो पहले की तरह बन बैठा है घर बार से और बाहर से बैठकर आत्मां बकेगा तो वह कोई भी ज्ञानी नहीं हुआ वह तो अज्ञानी से भी परे है।

जिस दिन गुरू मिला सत्य अन्दर घुस गया उस

दिन से इस शरीर को धर्मशाला करके समझना है कि इससे हजारों का रोज़ फायदा हो, निष्काम जीवन हो।

किसी ने प्रश्न पूछा कि गुरू की ज़रूरत कब तक है? जवाब है जब तक तुम्हारा स्त्री पुत्र से इस शरीर से नाता (लगाव) है तब तक गुरू से सबसे अधिक लगाव (नाता) रखना है। साकार गुरू खुद भगवान है। जब तक सबसे अधिक हमारा उसक प्रति प्रेम नहीं है तब तक तुम भगवान का कहलाने के लायक नहीं हो। गुरू का ज्ञान चोरी करके यदि फीस नहीं दी और जाकर ग्रहस्थ के सुखों में कुत्ते–कुत्तियो की तरह जाकर बैठे पहले की तरह तो हज़म नहीं होगा। जिन–जिन ने पहले (पूर्व में) ज्ञान लिया है उनकी History जाकर पढ़ो कि तन मन धन सब खाली हो गये, किसी भी चीज़ पर अपना हक नहीं रखा तभी ज्ञान मिला। तेरा सो मेरा, मेरा सो तेरा। जब तुम किसी पर उंगली रखते हो कि यह मेरा है मेरी मर्ज़ी पर चलना चाहिए तब तक तुम भी गुलाम हो अगले को भी गुलाम करते हो। यदि इतना ऊँचा ज्ञान सुनने के बाद भी कोई भोग भोगता है तो वह सूअर से किसी भी सूरत में ऊपर नहीं है। अष्टावक्र गीता पढ़कर देखो कि पहले–पहले गुरू कहता है कि विषयों को ज़हर समान त्याग कर, दूसरा कहता है कि वर्ण आश्रम के फर्ज़ धर्म तेरे में नहीं हैं तीसरा बोलता है कि ज्ञान के बाद व्यवहारिक

बुद्धि तेरे में पड़ा है, धन इकट्ठा करने की इच्छा क्यों है? यह शास्त्र हर एक के घर में होने चाहिए, हमारे में ऐतबार नहीं आएगा। बोलोगे गुरू शायद त्याग कराता है पर शास्त्रों पर ऐतबार जल्दी आएगा। □

और सुख आनन्द
तुम्हारी गीता

पत्र गीता भगवान का -86

गुरू वाणी है, जिनके मुख से सत्य परमात्मा की वाणी निकले वही गुरू है, भगवान है। जिसके मिलने से तुम्हें असली घर का पता मिले, सच्चा आनन्द मिले वही भगवान है। भगवान कोई मुरली या मुकुट पहनकर नहीं आयेगा, किसी भी रूप में आये केवल तुम पहचानो। ना जाने किसी भेष में बाबा मिल जायें भगवान रे। मेरा मतलब नहीं है कि तुम मुझे गुरू या भगवान समझकर बैठ कर पूजो पर भगवान की दृष्टि रखने से तुम्हारी दृष्टि शुद्ध पवित्र होगी और पवित्र बुद्धि में ही आत्मसाक्षात्कार होगा फिर हर एक को इस शुद्ध दृष्टि से देखने पर सच्चा आनन्द आयेगा। है आत्मज्ञानी के दिल में भगवान मकान तेरा। पारसमणि किसी के हाथ में हो फिर वह अपने को कंगाल कैसे समझे? बेखौफ चिन्ता और डर में वह रहे जिसका कोई धणीं सांई (मालिक) न हो। मेरा धणीं (मालिक) सर्वशक्तिमान परमात्मा स्वयं मेरे साथ है वह चिन्ता फिक्र और कल्याण हर मिनट में कर रहा है। अब छोड़ो चिन्ता और ख्याल, फेंक दो मोह और ममता को उठो, जागो अपने जैसा खुश और भाग्यशाली किसी को भी नहीं समझो। एक मिनट के बाद क्या होगा जो इस चिन्ता से छूटा हुआ है वही ज्ञानी है। क्या भी हो उसमें मेरा कोई भी वास्ता नहीं है। जो भी होगा उसमें मेरी

भलाई है। तुम करो भला हम भलो न जानें। इच्छा कोई भी रखना बड़े में बड़ा अज्ञान है। इच्छा तुम्हारी कभी भी पूरी नहीं होगी यदि पूरी होगी तो भी तृप्ति नहीं होगी खुजली की बीमारी कली तरह इसलिए आखिर भी निरइच्छा अचाह होने में ही मजा है। दुरूअ की इच्छा पूरी हुई है तो कथा करवायी है पर जिसकी कुल ही इच्छायें पूरी हो गयी हों कोई भी इच्छा न हो वह कौन सी कथा रखवाये? वह तो मेरे जैसी कथा सत्यनारायण की सच्ची रात दिन और हमेशा के लिए रखवाता है जो कभी भी पूरी होने वाली नहीं है। जो इच्छा पूरी होने पर खुश होता है वह इच्छा न पूरी होने पर जरूर दुखी होगा। हमारी इच्छा पूरी हो या न हो पर हमारी कथा तो चलती रहे। एक लड़के ने कहा कि मैं पास हो जाऊँगा तो पार्टी करूँगा पर फेल हो गया तो भी पार्टी की। दोस्तों ने पूछा कि फेल होने पर पार्टी क्यों की है? बोला कि मेरी इच्छा थी पास होने की पर मेरे भगवान की इच्छा थी फेल करने की। भगवान की मर्ज़ी चले तो उसमें मेरी कोई भलाई होगी।□

और सुख आनन्द
तुम्हारी गीता

पत्र गीता भगवान का -87

मेरा घर सारा सृष्टि है या एक दो शहर। तुम भगवान को अपने वश में या अपना गुलाम करके रखना चाहते हो कि तू केवल हमारा है और हमारा ही होकर रहो। पर निराकार के पास तो बहुत इंसाफ है। जहाँ भी इस शरीर की जरूरत है वहाँ अवश्य रहेगा। न तुम्हारी न मेरी इच्छा चलेगी, बाकी हुकुमें अन्दर हरको बाहिर हुकुम न कोय। ये लाईन केवल बोलकर बताते हो क्या? एक एक कदम हमारा निराकार के हुकुम से ही उठता है। सवाल तो बहुत अच्छे पूछे हैं– तुम तो मुझे भी सुधारने वाले हो, मेरे भी गुरू हो। हम भक्तों के भक्त हमारे। मेरा कोई भी सम्बंधी नहीं है। कौन सी दवा की ज़रूरत है, ये बीमार मरीज क्या जाने। डाक्टर को ही खबर है, गुरू ही जानता है कि किसको क्या ज़रूरत है इस वक्त। तुम अभी अगर गुरू को जाँचने जायेंगे तो शीरा खाना पड़ेगा। गुरू मानने से पहले भले ही उसे जांचो पर भगवान मानने के बाद उसके कर्मों में जायेंगे तो अपना उद्धार भूल जायेंगे। "गुरू को मानुष जानते जनम जनम होय स्वान।" निर्दोष पर दोष लगा देंगे। तुम इतने बड़े हो जाओ कि गुरू के हर कर्म से गुरू को जानो कि ये बात कहाँ से बोली है, गुरू के इस कर्म के पीछे क्या राज़ है। तुम मुझे कर्ता समझते हो क्योंकि तुम खुद अभी अकर्ता नहीं हुए हो।

मुझे पहचानने के लिए बहुत ऊँचा उठना पड़ेगा। 'एवड ऊँचा होवे कोई तिस ऊँचे को जाणे सोई।' अब जल्दी ही लग जाओ अपने उद्धार में। घड़ी इक विसरूं राम कूं तो ब्रह्म हत्या मोहे होय। ये कसम उठाकर भी भूल गये हो, इसलिए आने जाने के झंझट में पड़े हो। इसके बाद यह बात ही भूला दो। मेरे में आना–जाना जनम–मरण होता ही नहीं है। आत्मा में गृहस्थ, सन्यास, ब्रह्मचर्य, वर्ण आश्रम होता ही नहीं है। ये निश्चय करो कि वो आत्मा तुम स्वंय है। अपने अंदर खज़ाना ढूढ़ो और वो बैठकर लूटो। अपनी कुर्सी से बार बार उतर मत जाओ। पैर जमाकर बैठो।

तुमने लिखा है गृहस्थ का ज्ञान नहीं है क्या? तो गृहस्थ की कीचड़ में तो पहले भी पड़े थे, फिर अगर वहाँ शान्ति थी तो मेरे पास क्यों आए? 'सगल ते मध्य सगल ते उदास' मतलब सारी सृष्टि में रहते हुए भी वो उदास, न्यारा है। सगल मतलब एक घर नहीं। गुरू नानक, कृष्ण, मीरा ने अपना घर कौन सा समझा था। अपने सम्बंधियों में अटककर हद में रहने वाले वो नहीं थे। संत जगत में आते हैं जग तारण के लिए, नहीं एक घर में फंसने के लिए।

लिखा है कि सबकी प्रकृति ऐसी होगी क्या जो 12 महीने गुरू के पास आकर रहे ? अगर तुम पुरूष परमात्मा

है तो प्रकृति तुम्हारी दासी होनी चाहिए। अपना पुरूषपना भुलाकर तुम प्रकृति के दास बनकर बैठे हो। जब तक प्रकृति से पूरी तरह नाता नहीं तोड़ा है। तब तक भगवान से नहीं जोड़ सकेंगे। एक ने प्रकृति को वश किया है, दूसरा प्रकृति का गुलाम बनकर बैठा है। प्रकृति है ही नहीं, है ही तू। ब्रह्म के सिवाय कुछ और बना ही नहीं है। लोकरीत, मोह, डर और इच्छाओं में फंसे इंसान को मन ऐसे ठगता है कि तेरी प्रकृति ऐसी नहीं है कि तू गुरू के साथ रह सके। पहले विकारों से दूर हटो फिर गुरू तुम्हारे बंधन काटकर ही बैठा है। मकड़ी की तरह जाल बनाकर, उसमें फंसकर चिल्ला रहा है कि हमारी प्रकृति ऐसी है कि हम निकल नहीं पा रहे हैं। बेटी मेरी है या तुम्हारी? तन, मन, धन देकर फिर कंजूस की तरह वापस ले लेते हो। यह मोह है। 'बनी बनाई बन रही, अब कुछ बनना नाहिं।' ऐसा हो, ऐसा नहीं हो, यह भी इच्छा है। शुभ और अशुभ इच्छाओं का त्यागी ही मुझे परम प्यारा है। तुम्हें चिन्ता हैकि आगे क्या होगा। कल जो पैदा ही नहीं हुआ है उसकी चिन्ता रखकर बैठे हो। दिल की छठी वांचकर देखो तो तुम्हें पता चलेगा कि तुम्हारा भविष्य क्या है। भविष्य को बुलंद करने वाला, रोशन करने वाला तुम खुद है। जिन्दगी को रोशन करने वाले तुम स्वयं हो। तुम्हारे खोटे और डर वाले ख्याल ही तुम्हें अंधेरे की तरफ घसीटकर ले जाएंगे। जब तक गुरू को बाहर मानोगे, तब

तक नर्क में भटकते रहोगे। अपने सच्चे धर्म में पक्के रहो कि मैं क्या हूँ, तो आधि–व्याधि, उपाधि सभी रोगों से छूट जाएंगे। अहंकार का रोग ही सभी रोगों की जड़ है और ओम सतगुरू प्रसाद ही सभी रोगों की दवा है। ये दवा आजमायेंगे सो पहले से भी तगड़े हो जाएंगे। 'धीरज मन में धर मेरे मन कबूतर।' गुरू इंसाफ करने वाला जज है, अंधे मोह वाली दया नहीं करता है। उसको तुम कठोर दिल वाला समझते हो यही पाप है, गुरू जैसा दयावान न कोई हुआ है न होगा। जब तक कोई बात नहीं हुई है, तब तक उसके पहले उसका ख्याल करना भी पाप है। निराकार पर विश्वास रखो, वो तुम्हें कभी नहीं छोड़ेगा। □

और सुख
तुम्हारी गीता

पत्र गीता भगवान का -88

दिव्य दृष्टि वाले कभी घटाओं के होते हुए भी सूर्य को देख सकते हैं माया से लिपटे हुए भगवान को देख सकते हैं। जगत में जगदीश देख सकते हैं। गुरू साफ आरसी (आइना) है। भले ही टेढ़ा–मेढ़ा शरीर हो पर सूर्य दिखाने का काम करता है। गुरू को सिर अर्पण करो कि मैं कुछ भी नहीं हूँ कुछ भी नहीं जानता हूँ, अनजान हूँ बेवकूफ हूँ तुम जैसा चाहो चलाओ। जैसे कारीगर के हाथ में लकड़ी आती है बिना गढ़ी हुई तो कारीगर उसे घड़ कर नाव बनाता है। बुद्ध भगवान ने बीमारी, बुढ़ापा और मौत एक बार देखा तो वैराग्य आ गया। तुमने लाखों बार ऐसे दृश्य देखे हैं पर तो भी वैराग्य नहीं लगा है। जगत के सुख अच्छे लग रहे हैं। एक–एक दिन व्यर्थ गंवा रहे हो यदि मुक्ती का आनन्द नहीं लूट रहे हो तो। मौत, गुरू और भगवान को याद करने का मतलब है गुरू के वचनों को याद करना। भगवान को याद करना है खुद भगवान हो जाना। 'अहमं ब्रह्मं अस्मि' तत् त्वम् असि।' माया और मन से ऊपर हो जाओ तो परमात्मा का दर्शन हो। वैज्ञानिकों ने दुनिया की खोजना की है पर अभी तक एक बूंद की भी खोजना नहीं की है पर जिसने अपने को आत्मा समझा है उसे मानो सागर परमात्मा का अन्त पाया है। तमाशा तुझमें होता है, तमाशे में क्यूं रोता है। किसी

भी दुश्मन से बदला लेना हो और उसको झुकाना हो तो उससे हद से ज्यादा जाकर प्यार करो तो वह तुम्हारे प्रेम की तलवार के आगे अपनी गर्दन झुका कर हमेशा के लिए मर कर खत्म हो जायेगा।

कीर्ती करने के लिए तुम्हारे पास हज़ारों आयेंगे, उन्हें दुश्मन समझते हो या खुश होते हो? ज्ञानी यथार्थ ज्ञान रखने वाला भी नहीं है वह सुन्दर अच्छी वेदों की वाणी नहीं उच्चारेगा, शास्त्रों का ज्ञान मीठा, श्लोकों सहित नहीं देगापर जैसा मरीज़ सामने आयेगा उसके संकल्प और भावनायें ज्ञानी से बुलवाते हैं। गुरू मौन में है, हम भी सब ख्याल छोड़ कर मौन में रहेंगे तभी उसे पहचानेंगे। सवाल जवाब से आत्मां निर्णय नहीं होगा आखिर भी अपने को पहचानने से ही शान्ति आएगी। ख्याल सब छोड़कर रहो हर हाल में खुश। बेखुटके बेफुर्न हो जाओ। यदि शान्ति नहीं आती है तो अशान्त होने की इजाज़त किसने दी है तुम्हें? तुम्हारा धर्म है अशोक रहना, तुम धर्म से गिरते हो तभी अशान्त होते हो। अशान्ति का कारण ढूंढकर निकालो कि कहां से और क्यों अशान्ति आती है? बाकी तो शान्ति तो पहले ही है ही है। शान्त स्वरूप तुम पहले ही हो। जो निभागा (अभागा) अपने को दुखी और अशान्त समझता है उसे कौन पैदा हुआ है जो शान्त कर सके। खुद शान्त स्वरूप होकर भी कोई झूठ

बोलता है कि मैं अशान्त और दुखी हूँ। न इच्छायें पूरी करो न दबाओ इच्छाओं का न विरोध करो पर साक्षी भाव में खड़े होकर देखो तो अपने आप ही विकारों का ज़ोर (प्रभाव) टूट जायेगा। अपने को पहचानो और आत्मां का दर्शन कराओ मन को तो मन विकारों सहित रहेगा ही नहीं। तुमने उसे हस्ती देकर भड़काया है बिगाड़ा है।

गीता में भगवान ने 17 अध्याय में बोला है कि जो कहता है कि मैं ऐसा करूँगा मैंने ऐसा किया है ये आसुरी सम्पदा के लक्षण हैं यानि हैवान के लक्षण हैं। करने वाला सब मैं हूँ जीव व्यर्थ आकर लटका है कि मैंने किया। 'मैं नां' याद करो। सब में प्रेम की दृष्टि रखो राग द्वेष निकाल दो। कृष्ण है प्रेम का स्वरूप। जो बात प्रेम से प्राप्त हो सकती है वह द्वेष या क्रोध से नहीं। सारी दुनिया को झुकाने वाला यह प्रेम है। निष्काम और निस्वार्थ प्रेम ही इस धरती पर सच्चा स्वर्ग बनाता है। वह तो इस प्रेम का नशा है जो कभी भी उतरने वाला नहीं है। "पिरींअ पिआरिओ प्यालो भरे प्रेम जो, अंधेरो अंदर जो खिण में निवारियो, अज़गैबी बारियो दियो मुहिंजे दोल में।"

'त्यागियो जहिं अंधकार तहिं सर्व त्याग कयो, सामी सीतल जल जियां ठरी थियरो ठार। हाणे बुधाई त तूं ठरी आहीं?' अब बताओ कि तुम शीतल (ठण्डी) हुई हो? तुम्हें कौन मिला है? तुम्हें कितनी कद्र है? तुमने तो

भगवान को डोरी में बांध दिया है जैसे नचाती, बुलाती हो वैसे आ जाता है। भला अब बताओ भगवान को कब डोर दे रही हो? तुम जब खेंचती हो वह वैसे खिंचता हूँ सब तुम्हारे हाथ में है। तुम जल्दी ही मुझसे अमानत चुका कर ले लो मैं तुम्हारा कर्ज़ लेकर आया हूँ। पिछली जनम में इकरारी थे आज आकर मैंने तुम्हारा साथ निभाया है। पहले भी तुम मेरे साथ थीं ज्ञान बैठकर सुना पर नींद आ गयी फिर इस जनम में भी बहुत घूम फिर कर आकर ढूँढ निकाला है। अब बताओ प्रीत कच्ची है पक्की है? कौन सी डोर से बांधा है? टूटने वाली तो नहीं है? भगवान है सूक्ष्म उसे बड़ी सूक्ष्म डोर से बांधते है, वह है प्रेम की डोर। □

पत्र गीता भगवान का -89

तू और मैं पहले से ही एक हैं पर मन नाई बीच में खेल जरूर करेगा नहीं तो हर एक भगवान से जल्दी में ही मिल जाता। मन रूपी नट के सांग तुझ राजा के मन को बहलाने के लिए हैं पर तुम राजा का काम नहीं है तख्त से उतरकर नीच ज़ात वाले नटों और स्वांगियो के साथ नाचना। वह (राजा) केवल मन बुद्धि के खेल दृष्टा होकर बैठ कर देखे। खेल वह देखेगा जो खेल में नहीं होगा। एक्टर डायरेक्टर नहीं हो सकेगा एक ही समय पर। खेल से अलग होकर बैठकर देखेगा कि खेल भी मिथ्या है केवल सफेद पर्दा ही सत्य है। अंधेरे में खेल दिखा रहा था पर रोशनी करो तो खेल गुम। दृष्टा होना है अपने आप का नहीं कि दृश्य का। दृश्य सब मिथ्या है, मृग तृष्णां का जल। तुमने हम सभी को आने के लिए लिखा है सो हमारी डोरी तुम्हारे हाथ में है जैसे खींचो जब खींचो तो तुम्हारे पास पहुंचे पड़े होंगे। मैंथेरान भी October में खुलती है या तुम हमारे पास या हम तुम्हारे पास बात तो एक ही है। तुम लोग किसी से भी भूले हुए नहीं हो क्योंकि अपना आप हो। अन्दर का ताला गुरू के सिवाय किसी से भी नहीं खुलेगा। सतगुरू में प्रेम परतीत विश्वास पूरन होगा तो शंका में कभी नहीं गिरेगें। नौजवान सत्संगी नौजवान विधवा स्त्री के समान है जिसे गुरू और

सत्संग के किले के भीतर रहना चाहिए। सतगुरू की उंगली के इशारे से चले। उसके बताये हुए असूलों से एक कदम भी बाहर पैर न रखे। चार दीवारों के अन्दर रहे। (१) मौन (२) खाने पर कंट्रोल (३) आलस्य नहीं करना (४) दुनिया से किनारे होकर एकान्त में अपने को जांचना कि मैं कहाँ हूँ क्या हूँ और वह अनुभव सबको कराना। दुख देने वाले भूत नहीं हैं पर सुख देने वाले भूत हैं जो मन को ललचाते हैं, गुलाम करते हैं, भगवान बुलाते हैं। 'मन मुरीद संसार है गुरू मुरीद कोइ साध, जो माने गुरू वचन को तांका मता अगाध (ऊँच)।' मालिक के पास पहुंचने का अजीब रास्ता होता है जो पैरों से नहीं पर सिर से होता है। जितना शीश दिया उतना रास्ता हुआ।

जब तक कोई उल्टी सुल्टी हालत से नहीं गुज़रा है तब तक वह कच्चा रह जायेगा। ऐसी कोई बात नहीं है हालत नहीं है जिसमें शुकराने ना मानें जायें। जितना अहंकार गंवायेंगे उतना गुरू के करीब आयेंगे। मन को भले भय हो गुरू का पर मैं आत्मां हूँ निर्भय। भय इसलिए रखें कि जैसे मन से बनकर गुरू के विपरीत न चले। भय तो भाव उपजे। □

पत्र गीता भगवान का -90

ज्ञानी भक्तों के संकल्प पर नाचता रहता है। उसने इस शरीर की इच्छाओं को छोड़ दिया है तो किसी की तो चाभी पर चलेगा। एकान्त चार प्रकार की होती है (१) एक वह जो शरीर को किसी ऐसी जगह पर ले जाये जहां किसी मनुष्य का संग या शोर गुल न हो (२) अनात्मांकार वृत्तियाँ बन्द हों केवल आत्मांकार विरतियों का प्रवाह रहे (३) आत्मांकार वृत्तियों भी शान्त हो (४) वह एकान्त है यह सहज समाधी जो ख्यालों से खाली चित्त हो जाय, न ज्ञान न अज्ञान न शुभ न अशुभ ख्याल। यह समाधी चलते फिरते खाते पीते लगी रहती है जिसमें न ज्ञान सुनाने न सुनने की इच्छा रहती है न गुरू न शिष्य केवल मैं ही तो हूँ यह है अखण्ड समाधी या सहज समाध ी अथवा ब्रह्मं स्थिति कहलाती है। जो शरीर से बिल्कुल अलग अवस्था है। ज्ञानी मौत और बीमारी को खेल करके समझता है। आत्मां है ही तंदरूस्त। ज्ञानी के शरीर का लगाव इससे तीनों कालों में नहीं है। ज्ञानी की बीमारी भी भक्तों के लिए मिसाल और आदर्श रखने के लिए है कि वह कैसे शरीर से अलग और शान्तचित्त है उससे हज़ारों सीखेंगे। अर्धांग **(Paralysis)** का मर्ज़ (बीमारी) उसे कहते हैं जिसका आधा शरीर बेकार और आधा ठीक हो यह है शरीर का अर्धांग। अब मन का अर्धांग सुनो (१)

वैराग्य हो पर ज्ञान न हो, सबकुछ छोड़ दे पर ज्ञान का आनन्द न हो यह अर्धांग है (२) कहिंणी हो पर रहणीं नहीं यह भी अर्धांग है (३) सन्यास हो कपड़ों का त्याग न हो इच्छाओं का यह भी अर्धांग है (४) ब्रह्मंश्रोत्री हो पर ब्रह्म नेष्ठी नहीं। (५) धन कमाना जाने पर खर्चे नहीं। (६) सेवा ले पर करे नहीं। (७) शास्त्रों का ज्ञानी विद्वान हो पर समझा एक अक्षर भी न सके। 'मुख ज्ञानी' ये सब अर्धांग सूक्ष्म है।

पारस के छूने से जो लोहा सोना हो चुका है वह फिर लोहा नहीं होगा ऐसे ही एक बार कोई गुरू के मुख से निश्चय कर के उठा कि 'मैं ब्रह्म हूँ, मुक्त हूँ' वह फिर देह के बन्धन में आ ही नहीं सकता क्योंकि मुक्ती कोई पराई चीज़ नहीं है जो छिन या लुट जायेगी यह तो हमारा अपना आप असली रूप है। समुंद्र शांत स्वरूप में भी समुंद्र है लहरों और फुर्नों से भी समुंद्र है ऐसे निराकार ब्रह्मं शान्तिस्वरूप भी है पर नाम रूप वाला भी ब्रह्मं ही है, जगत तीनों कालों में नहीं है है ही ब्रह्मं। ऐसी कौन सी चीज़ है जो भगवान नहीं है, जूता, चप्पल, विष्ठा खराब अच्छा सब मैं ही तो हूँ। जड़ चेतन सब मैं ही हूँ यह नज़र तुम बनाओ। यह निश्चय करो। मैं शरीर नहीं हूँ न ही मेरा शरीर है। मेरा शरीर ठीक नहीं है यह भी कहने की जरूरत नहीं है क्योंकि सुषोप्ति में जैसे शान्ति है ऐसे

ज्ञानी जागते भी सुषोप्ति में हे तो वहां शरीर की बात भी कहाँ है। ज्ञानी शरीर को प्रकृति के हवाले कर देता है कि मेरी प्रकृति इंसाफ वाली है इसलिए इस शरीर को अपने आप कर्मो का फल दे रही है पर मैं पुरुष परमात्मां हूँ। अब पुरूष भी मैं प्रकृति भी मैं, हूँ ही मैं। □

पत्र गीता भगवान का -91

तुम सब प्रेम से चाहे ज्ञान से भरपूर (लबालब) लग रहे हो। हम यहां तुम सभी के पत्र बेगलोर वालों को पढ़कर सुनाते हैं बहुत अनुभव मिलता है। गुरू का पता उसके करीबी प्रेमियों से मिलता है इसी प्रकार तुम्हारे पत्रों से सच्चे गुरू की खबर सभी को मिल रही है। जैसे अर्जुन ही था जिसने कृष्ण को सारी दुनिया में प्रगट किया, इसलिए कृष्ण ने कहा तू ही मेरा परम प्यारा है, मेरा सन्देश सारी दुनिया में जाकर पहुंचाओ। यहां जो भी गुरू, गुरयानियाँ गद्दी पर चढ़कर बैठे हैं उनके तख्त हिल गये हैं, सब गुरूओं को डर लग गया है कि यह कौन सा भगवान आया है जो हम झूठों की पोल और पाप आकर खोल दिये हैं (प्रगट किये हैं)। पूरे शहर में बिल्कुल ढ़िढ़ोरा पिट गया है कि एक गाली देने वाला गुरू आ गया है कहता है सब झूठे हैं और हाथ जले हुए हैं, जो पाई पैसा हाथ में लेते हैं, मन्दिर टिकाणे बना कर बैठे हैं, अंत में मन्दिर में प्रेत होकर भटकेंगे। दादा कहता है कि मैं अंतिम (Last) का अवतार हूँ तुम्हारा सबका हिसाब लेने आया हूँ। तुम लोगो ने पहले कृष्ण, गुरूनानक, क्राईस्ट को नहीं पहचानकर Crucify किया था उन्हें, थूके लानतें डाली उन पर अब मैं उन सभी अवतारों का बदला लेकर तुम सबको गालियां देने आया हूँ। वे तुम लोग ही हो

जिन्होंने पहले भी सतपुरूषों का अपमान किया था। मतलब सब हैरान हो गये हे कि यह 80 बरस में कैसा और कितना बोलता है कितनी हिम्मथ है कि सबको गालियों से कूटते हैं। किसी को मुंह पर सच बताना भी किसी सूरमे का काम है बाकी सब तो लिहाज डर में फंसे पड़े हैं। मीठा बोल कर सबको बैठे लूट रहे हैं कड़वी दवा फायदा जल्दी करेगी। सन्यासी गीदी कायर होकर घर बार छोड़कर भाग गये ग्रहस्थी फिर विषय विकारों में फंस गये पर हमारा अलग ही तीसरा रास्ता है। "सगल तो मध्य सगल ते उदास, तिस का नाम सत राम दास।" घर ग्रहस्थ परीक्षा के लिए हैं न कि मोह में फंसने के लिए। भगवान ने पहेली दी है जिसने Solve की (बूझी) वह खुश हो रहा है। जो पुरूष और प्रकृति को अलग–अलग तत्व से जानता है वही सच जानता है। पहले पुरूष और प्रकृति अलग–अलग करके पुरूषोत्तम में टिक कर खड़े हो जाओ फिर प्रकृति खुद ब खुद तुम्हारे इशारे से चलती है बाद में पुरूष और प्रकृति मैं ही तो हूँ यह निश्चय करो। □

पत्र गीता भगवान का -92

शरीर जैसी बेवफा वस्तु कोई दूसरी नहीं है दुनिया में पर इस पर बाँवर (अहंकार) भी जबरदस्त हैं कैसी न अज्ञानता में मूर्खता कर रहे थे। अपनी सुन्दरता को भुलाकर दूसरे को सुन्दर मानते हो पर अपने भीतर झांक कर देखो कि सुन्दरता का भण्डार तुम ही हो। सच्ची सुन्दरता तो आत्मिक है पर हम भूल से दूसरे पर आशिक होते हैं। कोई माल में मस्त है कोई स्त्री में मस्त है कोई हाल में मस्त है (अपने हालात में) पर विरला कोई जो अपने आप में मस्त है। गुरू आकर सच्चे स्वरूप की पहचान देता है कि तू क्या नहीं है। कमाने का भार (मर्दों) पर है तुम लड़कियों और स्त्रियों को भगवान ने खास **Free** रखा है। भगवान पाने के लिए स्त्री का जन्म भाग्य से मिला है। ठगी चोरी और धक्के सब मर्दों के नसीब में हैं। शराब कबाब और दूसरी तरफ मर्द जाता है। बर्हिमुखता मर्दों में है क्योंकि उनका धंधा ही रूलाने और धक्के खाने का है। तुम घर पर रहकर (आत्मां में) सत्संग के किले के अन्दर अपनी जीवन संयम में गुजार कर मर्यादा में मर कर ऊपर चढ़ो। प्रेम, सेवा, श्रद्धा और विश्वास की देवियां हो। स्त्रियों के अन्दर छिपी हुई शक्ति है उसे प्रगट करो। निर्बलता ने स्त्रियों को नास कर दिया है। निर्भयता और नम्रता से तुम जीत जाओगी। भगवान में विश्वास से अधि

क अपने में विश्वास रखो। पूरे ब्रह्मं की शक्ति तुम्हारे में है। तुममें से एक–एक यदि सच्ची बने तो पूरी दुनिया को हिला सकती है। मर्दों का शरीर भगवान ने पट्ठा **(Strong)** और ताकतवर (शक्तिशाली) इसलिए बनाया है क्योंकि उन्हें मेहनत मजदूरी करके कमाना है पर तुम लोगों का नाजुक शरीर है परमात्मां के लिए, भगवान की सेवा के लिए। अन्दर की शक्ति तुम लोगों में है जो तुम्हारे शुद्ध वीचारों से निकलकर बाहर आयेगी। तुम्हारा यदि सारा जीवन निष्काम हो जाये तो तुम्हारा भगवान तो थाली लेकर घूम रहा है। 'तेरी रोज़ी तुझको ढूँढे।' मन बहलाव और सेवा समझकर भले कोई भी काम करो पर बोझ समझ कर नहीं। करोड़ों में कोई एक है जिसे यह त्याग वैराग्य रूपी खजाना हाथ लगता है सो काश कोई दवा देकर यह दर्द न छीन ले। किसी भी कीमत पर यह खजाना बिल्कुल न लुटने दें। "जीए धन न फुरेई को, सभ सख्तियूं सिर सहिजांइ।" जैसे ये धन कोई न लूटे उसके लिए सभी सख्तियां (तकलीफें) सिर पर सहना।□

पत्र गीता भगवान का -93

तुम सब कितने न मेरे से भी होशियार हो गये हो। एवड ऊंचा होवे कोई तिस ऊंचे को जाणे सोई। तुम इतने बड़े हो किजो हम साधारण स्वरूपों में आये हुओं को भी अपने दिव्य नेत्रों से पहचान गये हो। दिव्य दृष्टि भी मिल गयी है। भगवान को पहचाना यानि अपने आप को पहचाना, अपने का पहचाना यानि सबको पहचाना। बाकी कौन सा काम बचा है? जो बचा खुचा काम है वह तो तुलसी ने आकर उतार दिया है (निपटा दिया है) अब ठंडे होकर बैठो ठिकाने पर कि मैं भगवान हूँ। 'हम गुरू हम ज्ञान नानक लक्षण मेरा ही नाम।' 'मिल गया जो था मिलना काम क्या बाकी रहा।' अब भगवान की गति हो तो आकर तुम्हारा दर्शन करे बाकी तुम भी इच्छा नहीं रखो कि भगवान आए। द्रोपदी की तरह पुकारना अज्ञान है क्योंकि भगवान घट घट वासी हैं कहां नहीं है? जब गुरू जैसी भावना एक दुश्मन में भी जाये तभी समझना कि ज्ञान लगा है। गुरू की प्रशंसा तो सभी शिष्य करते हैं कि हमारा गुरू क्या नहीं है पर यहां तो सिखाया जाता है कि 'सारा जग अवतार है, सतगुरू ने बताया है।' हर एक जड़ चाहे चेतन में वही मूरत वही सूरत अपनी दिखाई दे। अब लग जाओ सबको प्रेम करने में कि हर एक चीज़ भगवान है। दादा ने कल बोला कि मैं अपनी जुत्ती को भी

भगवान समझता हूँ उसे भी इज़्ज़त से पोंछकर पहनता हूँ इधर–उधर मिट्टी में नहीं छोड़ता हूँ। अपनी ऐनक को भी भगवान समझता हूँ। तुम समझते हो? वृक्ष के एक–एक पत्ते में भगवान समझता हू.। विष्ठा में, मल–मूत्र में भी भगवान समझता हूँ। आप सत किये सब सत है ही सत्य। सारी दुनिया भगवान से भरी पड़ी है

The whole world is filled with God. तुम्हारा पत्र बरसों के बाद मिला है। यदि मैं तुम्हारा नाम पत्र में लिखती हूँ तो तुम जोश में पत्र कैसे उलाहनों भरा लिखती? तुम मुझसे दूर होती तो नाम लिखूं। तुम नाम रूप से परे खुद खुदा हो। आपने लिखा है कि हम उस राजा का दर्शन करना चाहते हैं जो तख्त पर बीच में बैठा था शीश महल में पर यह पता ही नहीं है कि वह राजा खुद आप ही हैं जिसकी परछाई सृष्टि है। अपने को भुलकार दूसरी जगह भगवान देखना भ्रम में पड़ना है। अपने अन्दर वाले से Adjust हो जाओ कि सब मैं ही तो हूँ। सीता ने कहा कि मैं हूँ भगवान यह सब है मेरी माया जिसमें रामचन्द्र का शरीर भी आ गया। शरीर सब नाशवन्त विकारी है पर एक ही सत्य वस्तु है जो निराकार है वह तू है।□

पत्र गीता भगवान का -94

यह ज्ञान जब और जिस समय मिले एकदम निश्चय करके उठे। गिसमिस (टालमटोल) नहीं करें बिल्कुल चिपक जायें। पर मनुष्य दुनिया की ज़िम्मेदारियाँ अपने ऊपर बोझ समझ कर उठाता है। भगवान अस्पताल में बीमारी देकर कहेगा लधे पी की तरह तुम सोकर देखो तो काम कैसे चलते हैं। बिस्तर पर वेला (खाली) करके सुलाता है जैसे वह अपनी जीवन को समझ सके। गुरू जीते जी मारता है कि तुम जल्दी ही ये काम भगवान पर उतार कर रखो तो तुम्हारा योग क्षेम भगवान खुद उठाता है, ऐतबार (विश्वास) करो। प्रारब्ध पर विश्वास रखकर बाकी पुरूषार्थ में लग जाओ। जीते जी जो तंदरूस्ती में ख्यालों फिक्र चिन्ताओं से खाली नहीं होता है, बिस्तर पर तो दुगने ख्याल सतायेंगे। यह ज्ञान बड़ा मूल्यवान है पर कोई केवल कद्र करे। सभी उदाहरणों (मिसालों) से हमे सीखना चाहिए कि हम अभी निश्चिन्त हैं या मरते समय मन जायेगा कि गाय झाड़ू खा रही है। लोकारीति ने भी सबको मार दिया है कि मैं दुनिया में पूरा रहूँ , दुनिया में भी गिला न हो, रिश्तेदारों में भी अच्छा होकर रहूँ , भगवान भी झूँगे में मिल जाये। इसलिए भगवान को छोड़कर दुनिया को रिझाने में लग जाता है। हमें आप सब के पत्रों से अच्छा मनोरंजन मिल जाता है सबको पढ़कर सुनाते हैं। यहाँ के

बेचारे गुरू गुसाईं और लोग गालियाँ सुनकर डर गये हैं। दूसरे गुरूओं ने कहा मीठी माताओं और बहनों पर यहां दरवाजे से घुसते ही रंडी और रंडी के बेटे से स्वागत होता है सो बेचारे कैसे अपनी खाल (चमड़ी) उतार कर देंगे। कितने ही फिर आकर सुनकर फिर कहते हैं कि ज्ञान तो बहुत ऊंचा (अच्छा) है पर भाई गालियाँ कौन सहेगा कि मैं बिल्कुल हूँ ही नहीं। गुरू तो आकर गर्दन उतारकर मैना सिखाता है, जीभ काट देता है कि एक अक्षर भी क्यों बोला। रोकना ही बहादुरी है। सब कर्म छोड़कर धर्म छोड़कर मैं की शरण लो। फर्ज़ धर्म और मर्यादाओं से यह ज्ञान ऊपर है। आत्माकार होना है केवल आत्मा कहना नहीं है। □

पत्र गीता भगवान का -95

मनुष्य गल्तियाँ करता है पर भगवान महर करता है। न लेक्चर न दान करता हूँ पर अपना आप कुर्बान करता हूँ। संसार का मज़ा और भगवान का अनुभव एक साथ नहीं कर सकोगे।

गलत सोचना ही हमें बाँधता है। राईट सोचने से तो मैं मुक्त हूँ तुम्हारा देह अध्यास ही तुम्हें बाँधता है।

यदि तुम भगवान के प्यारे हो तो लाज और शर्म का शीश काट दो। ज्ञान से ही लाज छोड़नी है। दुनिया में राईट तरह से सोचना, राईट तरह से रहना कठिन है। गुरू सब चलना, रहना सिखाता है। तुम सुधरोगे तो सारी दुनियाँ आशिक होगी। गुरू से इश्क है पर गुरू के कहने पर नहीं चलते तो गुरू के वचनों पर समझो लात लगायी।

दुनिया में जीता जागता गुरू ही भगवान है। गुरू कहता है हट जा तो हट जाओ। उसके वचन पर खुद को चलाओ। भगवान के सहारे हलचल होती है। पर भगवान बिल्कुल हलचल में नहीं है।

काम से डरो नहीं पर कर्म ही पूजा है। अंधों की तरह धन खर्च करने से दानव हो जाओगे पर राईट उपयोग करने से तुम खुद माया पति भगवान हो जाओगे। भगवान मनुष्य के ख्यालों को देखता है ख्यालों का साक्षी

है। बाहर के कर्मों को नहीं देखता है। दाता देखेगा दिल तेरी।

जो किसी को बाँधता है वह खुद बँध जाता है पर जो अपने आप में खुश है वही मुक्त है।

खाना बचाना, खाना व्यर्थ फेंकना, बर्बाद करना और समय गँवाना अपने को मारना है गुरू में पूरण विश्वास है और अभ्यास पूरण है जिसका, वही मुक्ति तक पहुँचता है।

संतों का संग भी बड़ा प्रभावशाली है मुक्ती के लिए। पुराना सिक्का आज काम नहीं आएगा इसी प्रकार गुजरे हुए गुरू काम नहीं आयेंगे पर आज का गुरू। 'बिन गुरू वक्त मुक्ती कैसे पावे।' लेक्चरार नहीं चाहिए पर कृष्ण अर्जुन की तरह दो बैठकर उत्तर–प्रश्न करो संशय भ्रम निकालो।

गुरू अपने को भले ही गुरू नहीं समझता पर हमें सिखाने के लिए मन को मारने के लिए उसे झीना अहम् भाव रखना पड़ेगा कि मैं गुरू हूँ तुम हिसाब दो मेरी छुट्टी के सिवाय तुम कहाँ गये, क्या किया क्या बोला? तन, मन, धन मेरा है, तुमने किसकी इजाज़त से दान किया? इस प्रकार यदि गुरू अपना थोड़ा अहम् भाव दिखावे मात्र नहीं रखेगा तो उससे कोई भी नहीं बनेगा। सब रेल–छेल हो जायेंगे **Out of control** निरंकुश हो

जायेंगे। अनुशासन के लिए गुरू का कंट्रोल जरूरी है। "हे गुरू! मैं तुम्हारे बन्धन में बंधा रहूँ यही मेरी ममता रहे।" जो कर्म गुरू को पसंद न हो उससे अपने को बचाते रहे।

इस जीवन को बनाने वाले का ही शरीर पर हक है न कि जिसने जीवन को बिगाड़ा। तुम्हीं ने बनाया है मैं जो कुछ आज हूँ। गुरू वह है जो मन के Opposite चले। एक जनम देता है दूसरा जीवन देता है मन के मुताबिक चलने वाला तुम्हारे में बदलाव नहीं लाएगा। तुम्हारे मन के खिलाफ चलने वाला तुम्हारे में बदलाव लाएगा गुरू अभयदान देने वाला है। भय काहू को देत नहीं, नहि भय मानत आन। गुरू विकारों सहित देह भुलाता है देह अध्यास ही बंधन रूप है न कि लहसुन प्याज मछली मीट। 'वेष्णू सो जो विष्नू की माया से होवे भिन्न।' 'वैष्णव' वह है जो विष्णु की माया से अलग न्यारा हो। गुरू वह है जो आप समान बनाये। गुरू सच्चा वह है जो पहली बार में ही सच्चे स्वरूप की पहचान दे न कि भक्ति कर्मकाण्ड में उसकी उम्र गंवा दे। गुरू प्रेम से मन ले जायेगा पर देना नहीं पड़ेगा। मन मोड़ने वाला होना चाहिए न कि मन को मारने वाला। किसी को भी मैं नुकसान नहीं पहुंचाता हूँ। ब्रह्मज्ञानी ने यह कसम उठाया है कि 'अहिंसा परमोधर्मः।' किसी की भी हिंसा नहीं करूँगा। मन वचन, कर्म से किसी को भी दुख नहीं दूँगा, बुरा नहीं सोचूंगा। Dont

hurt any body. किसी को भी दुख नहीं पहुँचाओ। यह हिन्दू धर्म का उत्तम सिद्धांत है। यह कोई सतोगुणी स्वभाव नहीं है। पर क्योंकि जहां–तहां मैं ही तो हूँ इसलिए किसी को भी सताऊँ क्यों। दूसरे में अपने आप को डालो तो किसी से भी एक अक्षर भी व्यर्थ नहीं बोल सकोगे। सतोगुणी स्वभाव भी देह अध्यासी का होगा पर ज्ञानी तो देखता ही आत्मा है इसलिए उससे कोई कर्म होगा ही नहीं। यह कृष्ण का अद्वेत मत है। हमें भले कोई दुखी करे पर हमें दुख नहीं लगना चाहिए। मैं किसी से भी बदला नहीं लूँ वापसी में उलाहना या शिकायत भी नही करूँ। समता योग माना 'मैं ही तो हूँ।' किसी को भी सताओ नही, दरवाजे को भी लात नहीं लगाओ। पहले भगवान फिर कुत्ता देखो। नकाब नहीं उठाते हो इसलिए भगवान नहीं दिखाई देता है। पहले साँप देखेंगे तो डर जायेंगे पर रस्सी देखो तो भय चला जाएगा। ख्याल बंद करो अकेले घूमो फिरो भगवान के साथ, कुदरत का आनन्द लो, सब चिन्तायें दूर हो जाएंगी। बेपरवाह हो जाओ। □

पत्र गीता भगवान का -96

सीता का रामचन्द्र से बहुत प्यार था पर हिरन भी प्यारा था इसलिए रामचन्द्र से छूटकर रावण के चंगुल में जा पड़ी। इस प्रकार यहाँ आकर कहते तो बहुत हैं कि हमें भगवान चाहिए पर 'ये सन्त भी सच कह रहा है केवल दादा लक्ष्मी गीता थोड़े ही है दुनिया में, और कितने ही संत महात्मा पहाड़ों गुफाओं में छिपे बैठे हैं वे भी बड़ी अच्छी स्थिति में पहुँचे हुए हैं।' जब तक हमने सच झूठ को नहीं पहचाना है तब तक पूरा सत्य हासिल नहीं कर सकेंगे। एक लड़के ने कहा मुझे सुन्दर लड़की चाहिए जब रिश्ता आया सुन्दर लड़की का तो फिर पूछा खानदान अच्छा है? सम्बंधी कैसे हैं? पढ़ी हुई कितना है? इससे साबित हो गया कि उसके अन्दर ठगी है। केवल सुन्दर लड़की नहीं चाहिए थी उसे इसी प्रकार एक गुरू भगवान के सिवाय यदि दूसरी किसी बात में मन जाता है चाहे वे हमारे जिज्ञासू ही हों। तो अभी हमने सच को नहीं पहचाना है नहीं समझा है। जब तक गुरू को हमने राजी नहीं किया है गुरू ने हमे सर्टिफिकेट नहीं दिया है तब तक सुख से नहीं सोना चाहिए। गुरू हमारी इच्छा से चल सकता है पर कभी हम गुरू की इच्छा से चल सके हैं? अपनी सहूलियत से तो हम आते जाते हैं। तन भी उसकी मर्ज़ी से आना जाना चाहिए। पूरा ही बिक जाना है। राजा जनक ने तीन थप्पड़ खाये

क्योंकि उसने बिना गुरू की आज्ञा के तन, मन, धन Use किया। हमने गुरू की हजारों थप्पड़े खाई हैं तो भी यदि तन, मन, धन अर्पण नहीं किया तो कौन से जनम में फिर कैसा भगवान मिलेगा। आखिर भी तो रास्ता यही लेना है राजा के बेटे के लिए कोई नया रास्ता नहीं बनेगा पढ़ने के लिए। इस प्रकार हम भी यदि समझे कि रिश्तेदार भी खिलाफ न हो, दुनिया भी गिला न करे, घर बैठे ही मुक्ति मिल जाए मन कहेगा कि गुरू के नज़दीक रहने से ज्ञान हो जायेगा क्या? यह भी सतोगुणी माया है। मन बड़े सुन्दर रूप में आता है पता भी नहीं चलता है कि कैसे ठगता है। इस मन को पहचानना ही कठिन से कठिन काम है। तमो और रजोगुणी माया को पहचान सकते हैं पर सतोगुणी माया यह है कि हमने ज्ञान तो बहुत सुना है अब तो केवल अभ्यास करना है वह तो घर बैठे ही कर सकते हैं। सो ही यदि हमारा गुरू भी ज्ञान समझकर घर जाकर घर में सम्बंधियों के साथ जाकर रहता तो हम आज नहीं बनते। 'मत्पर' गीता में भगवान ने अर्जुन को बोला मेरे जैसे हो जाओ अब आकर देखो हमारा भगवान क्या करता है। उसने शरीर भी भक्तों के लिए, मन भी भक्तों के लिए और धन भी भक्तों के लिए कुर्बान किया है। जब तक हम भी उसकी तरह नहीं बने हैं तब तक आनन्द से बहुत दूर हैं। अन्दर में रिश्तेदारों के लिए डर है तो मन हमें ठगता है कि

गृहस्थ में ही तो रहना है। सगल ते मध्य सगल ते उदास होना है। घर वालों में भी तो भगवान है पर जल्दी नहीं करो घर वालों को भगवान समझने की। पहले सारी सृष्टि को भगवान समझकर प्रेम करके फिर घर वालों को भगवान समझे। जब बिल्कुल गैर के लिए तन, मन, धन भेंट कर सको। तब अपने पराये एक हो गये पर जब तक किसी एक की पत्नी किसी की माँ बनकर बैठेगे तब तक भगवान नहीं होंगे। भगवान है भक्तों का। भगवान कहता है कि 'हम भक्तन के भक्त हमारे।' जब हमारे बन्धन नहीं कटे होंगे तो दूसरे के कैसे कटा सकेंगे। सिविल सर्जन के हाथ के नीचे मुर्दे चीरने के सिवाय हम सर्जन कैसे बनेंगे? यहाँ के अनुभव तो रोज ब रोज देखने जैसे हैं उन्नति जो गुरू के संग में होती है वह अकेले में नहीं होगी। नेवला जब चंदन के वृक्ष से खुशबू सूंघकर आता है तभी साँप से लड़ाई कर सकता है नहीं तो साँप खा जाएगा। इस भवसागर से पार होने के लिए गुरू का संग लम्बे समय तक चाहिए जैसे गुरू समान बनकर सब बंधन काटकर प्रकृति से नाते काट ले। अभी गुलाम बनकर सब घर में रहे पड़े हैं पर फिर गुरू आकर मालकी लेकर देता है।□

पत्र गीता भगवान का -97

दिवाली किसके साथ मनाई मेरे साथ या जगत के साथ? इस सृष्टि की रचना का कारण यह था कि भगवान अकेला था बोला एक से प्रेम कैसे हो सो खुद को प्रेम करने के लिए एक से अनेक हुआ, एको ओम बहु–स्याम। जीव और ईश्वर में भेद केवल प्रेम की मस्ती की चाशनी चखने के लिए हुआ। मैं तुमसे अलग इसलिए हुआ हूँ जैसे तुम प्रेम का मजा चखो। शक्कर हो जाने का भी मज़ा है पर शक्कर चखने का भी मजा है। खुद ही स्त्री खुद ही पुरुष हुआ मज़ा चखने के लिए। पतिव्रता स्त्री अपने पती से कुछ भी नहीं छिपाती है लाज शर्म शरीर, दिल की बातें सब उसे खोलकर सुनाती है, अपने महबूब को सब कुछ अर्पण कर देती है। इससे बढ़कर कदर और मीठा प्यार भगत और भगवान का है। संसारी दृष्टि और सच्चे आशिक के रिश्ते में बहुत बड़ा अन्तर है। आशिक प्रेम में सब कुछ त्याग और बलिदान कर देता है। कुछ भी अपने पास नहीं रखता है बस माशूक का प्यार हासिल कर लिया है और चाहिए ही क्या? प्रेम के एक स्पर्श से ही मनुष्य हर्ष में आ जाता है और सब कुछ भुला बैठता है। वह एक को ही सराहता है एक को ही देखता है, मेरे महबूब में क्या नहीं वह तो लाखों में है एक हसीं। इश्क की पहली निगाह पहली नज़र से सारी दुनिया आशिक और माशूक की दिल की धड़कन से

धड़कती नज़र आती है। ब्रह्माण्ड का हर एक पंछी प्रेम के गीत गाता नज़र आता है। प्रेमी यदि अंधेरे नर्क में भी जाकर बैठे तो क्या वह उसके लिए नर्क होगा? वह दुखों से काँपेगा या मौत से डरेगा? दुख और मौत उससे डरेंगे। हज़ारो इस प्रेम की मस्ती में हैं पर किसी विरले को यह प्रेम नसीब हुआ है, जिसने महसूस किया है कि मेरा प्रियतम हर जगह है उसे पता ही नहीं चलेगा कि मैं पैरों पर खड़ा हूँ या सिर पर उस व्यक्ति की तरह जो शराब की बोतल पीकर कहाँ पड़ा है पता नहीं है। प्रीतम के लिए दस मिनट आँसू बहाओ तो 2 महीने पता ही नहीं पड़ेगा कि मैं कहाँ हूँ क्या खाया है, कौन से कपड़े पहने हैं। परमात्मां को प्यार करेंगे तो व्यवहार में, धन्धे में कैसे अच्छे सुन्दर होकर खड़े हो सकेंगे। प्रेम– प्रेम में मस्त को कहाँ है व्यवहार, कहाँ है दुनिया, गालियाँ और निन्दा कैसे सुन सकेगा। परवाह नहीं है यदि ये दुनिया नास हो जाय जब तक ये अनन्त प्रेम है तब तक डर काहे का? भले सब कुछ खो जाय मेरे प्रभु के सिवाय। मैं भी समा जाऊँ। उसमें और मुझमें भेद न रहे। प्रेम में दिव्य दृष्टि मिल जाती है कि मेरा प्रियतम इस समय क्या कर रहा है क्या सोच रहा होगा। तुम्हें यह मिली है? ईश्वर के लिए डर ये शुरूवात है ईश्वर के लिए प्रेम यह धर्म का अन्त है प्रेम भय को नहीं जानता। तलवार से कोई टुकड़े–टुकड़े कर दे तो भी मैं प्रेम करता रहूंगा। प्रेम माँगता

नहीं, प्रेम दातार है, निष्काम है। दिल में परमात्मां के सिवाय कुछ भी याद न हो। इसी को प्रेम कहते हैं प्रेम में Will power है जो पहाड़ जैसी रूकावटें दूर कर दे। नंगी तलवारें कोई ले आए तो भी प्रेमी अपने निश्चय से एक इंच नहीं हटेगा। अचल होकर अपने आदर्श पर पहुँचने वाले पथ पर चलता रहेगा। यदि तुम्हारे अन्दर ये बातें हैं तो तुम्हारा निहारना उठना बैठना सब करामत हो जायेगी। तुम्हारा चेहरा चमकने लगेगा भले छिपकर एक गुफा में जाकर रहने लगेंगे तो भी तुम्हारे विचार पहाड़ चीरकर सदियों तक दुनिया भर में विचारते रहेंगे और अन्ततः किसी मस्तिष्क में घुसकर कार्य करना शुरू कर देंगे। ऐसी है प्रेम की लगन और एकाग्रता की शक्ति। दस जने केवल ऐसे पक्के इरादे वाले पक्के दिल से सच्चे विश्वासी वज्र जैसी छाती वाले निकले तो सारी दुनिया में इंकलाब आ जाएगी। दृढ़ निश्चय वाले के आगे दुनिया झुकेगी। दुनिया तुम्हारे लिए निहार रही है। नींद कहाँ हराम हुई है? दुनिया के दर्दों में दिल पिघली है अज्ञान ने सारी दुनिया को काले बादलों से ढ़ँक दिया है, सब बर्बाद हो गये हैं। भुलाया तुमने अपना नाम, पद अपने सम्बंधी बच्चे, धन, दौलत शरीर के सुख? तुम जागे हो उसके बाद कितनों को जगाया है? नये विश्वासी बढ़ाओ। पुराने पापी चारपाईयों पर बैठकर झूठे (झपकियाँ) नहीं खाओ। सभी सबको जोश में जगाओ अब सुनने और सुनाने का काम शुरू करो। तुम्हारे दुख भूलेंगे दूसरे के दुख भुलाने में।

पत्र गीता भगवान का -98

वृक्ष को पत्थर लगाने से फल देता है ऐसे ही सतपुरूषों से प्रश्न करने से गुरू के मुख से अनेक फल (वचन) निकलते हैं जो सबको फायदा पहुँचाते हैं कल यहां सत्संग में **Points** निकली। प्रश्न पूछे गये–

(१) तुम पिछले जनम के कर्मो से पैदा हुए हो या निराकार से साकार होकर भक्तों की पुकार पर धर्म की रक्षा करने और अज्ञान, अधर्म का नाश करने के लिए आये हो?

(२) राम की तरह मर्यादा पुरूषोत्तम हो या कृष्ण की तरह लोक संग्रह के लिए लोगों को आदर्श दिखाने के लिए आये हो?

(३) ऐसा कोई जिन्दगी में मौका आया है जो तुमने प्रत्यक्ष भगवान देखा हो कि बराबर भगवान है और मुझे फलाने टाइम पर आकर मदद की?

(४) दुखों में खुश हो या सुखों में?

(५) मान में या अपमान में?

(६) साहूकारी में या गरीबी में?

(७) बीमारी में या तंदरूस्ती में?

(८) दुख दारू लगते हैं या अभी सुखों में खुश हो?

(९) तुम्हें निश्चय है कि मैं नहीं मरूँगा। मेरा दूसरा जनम नहीं होगा कोई भी सत या बद कर्म मेरे खाते में नहीं हैं।

(१०) तुम ज्ञानी हो या अज्ञानी हो या अभी सीखने वाले अपूर्ण हो?

(११) पूरण शान्ती है या अभी तक नहीं।

(१२) पूरण भगवान हो या अभी थोड़ा बहुत? जवाब लिखकर भेजना। यहां सत्संग गर्मा–गर्म होता है। अगर तुम्हारा गुरू पूरण है तो तुम्हें पूरण क्यों नहीं बनाया है?

सबको पक्का किया जाता है कि तुमने क्या समझा है आप समान क्यों नहीं हुए हो, क्यों देर और सुस्ती की है? शरीर तुम्हारा और गुरू का होगा क्या? अर्जुन की तरह, राजा जनक की तरह बैठकर क्यों नहीं निश्चय किया है? मतलब अब रोज गुरू इसी पर ही निश्चय सबको कराता है ऐसा न हो कि गुरू का शरीर छूटने पर कोई अधूरा रह जाय। अभी रोज़ अपनी चैकिंग करो कि मैं कहाँ हूँ? तुम्हारा एक–एक मिनट आत्मा में गुज़रता है?

ज्ञानी हर वक्त अपनी जीवन दूसरों के लिए बलिदान करता है। तुम्हारे मन में यदि सम्बंधियों की चिन्ता होगी कि ये पढ़े ये पास हो ये होशियार बने तो तुम निष्काम बिल्कुल नहीं हो। ज्ञानी अपने कुटुम्ब की चिन्ता भगवान पर उतार कर बाकी दूसरों के उद्धार के लिए रहता है। गुरू नानक माला भक्तों की जपता था न कि भगवान की। तुम यदि भगवान हो तो तुम्हारे सामने भगत होना चाहिए जिसे तुमने निश्चय दिलाया हो। भगवान को कोई अकेला छोड़ता ही नहीं है। शमा जलती है तो परवाने जरूर आयेंगे।

और सुख आनन्द

तुम्हारी गीता

पत्र गीता भगवान का -99

सत्‌चित् आनन्द स्वरूप लखनऊ वासी,

मौज में मस्त रहें।

यह शरीर तो क्षणभंगुर और विनाशी है जिस पर एक पल का भी भरोसा नहीं है, इसलिए गीता में पहले ही कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि स्याणे लोग जीवित चाहे मरे हुओं का शोक नहीं करते, आत्मा तो अजर अविनाशी है, कभी नाश होने वाली नहीं है। मौत है ही नहीं, वो तो सिर्फ Change of address. भगवान अपना Part पूरा करके दूसरी जगह जाकर Part करता है। यह एक रूप में नहीं तो दूसरे रूप में वो है ही है। आत्मा पुराने वस्त्र उतारकर नये वस्त्र धारण करती है पर हम मोह में आकर चोर बन बैठते हैं कि ये मेरा है।

भगवान कोई भी हालत भेजता है अधिक पक्का निश्चय करने के लिए, जुल्म तो है ही नहीं, है ही इंसाफ।

असली दूल्हों का दूल्हा तो सबके अन्दर है जो उसको अगर खोज लेता है तो वो सदा सुहागन है। जिसकी याद है वो है ही। कृष्ण को भी याद करके उसकी लीला गाते हैं, गुरू नानक को भी याद करते हैं, इसी तरह को भी याद करते हो तो वो भगवान ही है, अपनी लीला करके अपने आदर्श कुछ गुण छोड़ के जाता है, तो गुण तुम भी धारण करो पर दुःखी नहीं होओ।

जगत है ही मिथ्या उसके लिए सोचना मूर्खता है। दूसरे के लिए दुःखी होकर रोने के बदले अपने हाल पर रोओ कि–

१. मैं ब्रह्म क्यों नहीं देखता हूँ?
२. मैंने अपना काम उतारा है?
३. मैं शरीर छोड़ते वक्त क्या सोचूँगा?
४. हर बात के लिए तैयार हूँ?
५. मैंने पढ़ाई की है?
६. इम्तहान में पास हूँ?
७. मेरी किसी में वासना तो नहीं?
८. हरेक करे अपना आप उद्धार?
९. अभी भी भगवान की गठरी परमात्मा को अर्पण की है?
१०. न मैं हू न मेरा है?

रज़ा पर राज़ी रहने से ऊपर और कोई भक्ति नहीं है। घर में एक व्यक्ति को भी ज्ञान है तो उसकी **Light** मिलेगी। एक जगा हुआ है तो सब शीतल बूंदे डालेगा, सबको परमात्मा अन्दर ही अन्दर शक्ति बख्शेगा। □

और सब सुख आनन्द

तुम्हारी गीता

पत्र दादा भगवान का-100

तुमने याद किया है पर मैं बहुत थका हुआ हूँ। डाक्टर ने भी बोलने लिखने और ख्याल करने की मनह की है। मैं तो पहले ही अपने को भूल बैठा हूँ वह बेचारे डाक्टर को क्या पता। मेरा कुछ भी नहीं है पर सब कुछ मैं ही हूँ ऐसा समझने से अद्वेत हो गया। सब राम है तो मैं भी वही हूँ One became many. तुम भी केवल यह Point दिल में अच्छी तरह समझो। अब जहाँ तहाँ मैं ही तो हूँ तो अब काम या क्रोध लोभ या मोह या अहंकार अपने ऊपर कैसे होगा? ये विकार तो सब द्वेत में होते हैं दूसरों से। दूसरा देखे तो दूसरे का बेटा। समता योग से अहमता ममता और कर्ता सब नाश हो गये। Sameness and oneness. Sec nothing bt God. एक ही निराकार संकल्प से मैं साकार हो गया। मैं एक पर करोड़ों मेरे नाम हैं। हरी के नाम हज़ार हैं पर मैं हरी तो एक हूँ। हरी ओम और जहाँ–तहाँ मैं ही तो हूँ दूसरा है ही नहीं तो निर्भय हो गया डर काहे का? डर होता है दूसरों का सो दूसरा है ही नहीं I am all in all. मेरा कुछ नहीं है Non posses-sion तो ख्याल भी काहे का करूँ? चिन्ता भी काहे की? बात भी किसकी? जब सब मैं ही तो हूँ तो मुझे चाहिए क्या? कोई भी चीज़ अप्राप्त नहीं है। त्याग भी क्या करूँ? दान काहे का? फिर नमस्कार किसको करूँ? ऐसे सबमें

बसता है साई। घट–घट वासी करके देखो। घर ही में पाया। God is within. तुम बाहर भटक रहे हो, वहाँ नहीं है। पसु (देखो) अन्दर में प्रकाश। राम राज्य में भगवान के इंसाफ में विश्वास करो एतबार करो और जो कुछ भगवान करता है वह वाह–वाह करके देखो। Adjust your will with the will of God.

अब सभी कर्म निकम्मे साबित हुए हैं हजार बरस तो बड़े ने अच्छे–अच्छे कर्म किये तो भी कोई मुक्त नहीं हुआ। करोड़ों में कोई, पर सत्कर्म तो सभी करते हैं उन्हें ज्ञान नहीं हुआ इसलिए धिक्कार है उस कर्म को जिससे न होवे शान्त। कर्मो से शान्ती नहीं मिलती You can't buy bless. आया नंगा जाया नंगा। सब कुछ छोड़ जाना पड़ेगा क्योकि पदार्थ सब अमानत है भगवान के दिए हुए हैं भगवान लेगा। मत करो किसी को प्यार सब मतलब के हैं यार। आसक्ति नहीं रखनी है। वैराग्य और त्याग भावना से भोगेंगे भी पर इस तरह मोह में नहीं फँसेगे। जैसे राजा जनक Dinner Table के ऊपर तलवारें धागे से लटकाकर रखता था जब खाने बैठते थे तो जल्दी में उठकर निकल जाते थे। ऐसे सब मरने वाले हैं और पदार्थ सब नाशवन्त हैं थिर कुछ भी नहीं है तो दिने दुख होया अण दिने राज़ी रहिया। सब पदार्थ मिथ्या हैं। जरूर भगवान अपने दिए हुए सब पदार्थ वापस लेगा तो हमें रोना न पड़े। जैसे

दूसरों की रखी हुई अमानत को हम हाथ नहीं लगाते। अपना धन जो समझ बैठे हैं वह भी अमानत है। भगवान ले जायेगा ऐसा समझकर चलेंगे तो जाते समय रोयेंगे नहीं आने पर खुशी नहीं होगी, दोनों हालतों में समान। यह Sameness सीखनी है यानि अहमता, ममता कर्ता जायेंगे समता से विकार शरीर में हैं आत्मांकार इन विकारों से आज़ाद है। मतलब शरीर भुलाना है देह अध्यास गँवाना है और आत्मां का निश्चय करना है घड़ी इक विसरूं राम कूं तो ब्रहम हत्या मोहे होय यह निश्चय पक्का पुरूषार्थ से होगा बाकी देह की तो प्रारब्ध है Fix वह मरने तक प्रारब्ध चलती रहेगी। राम राज्य है तो इंसाफ ही इंसाफ है जुल्म हो नहीं सकता। सारी सृष्टि Automatic चल रही है। जब सब मैं ही तो हूँ तो मुझे चाहिए क्या? मेरा कुछ भी नहीं है तो फिर ख्याल किसका करूँ। सब पदार्थ मिथ्या हैं फिर अमानत भी है भगवान सब लेगा। सब मिथ्या है तो कुछ भी थिर नहीं है खिन आवे खिन जावे। पर धर्म से दूर हो जाओ इन्द्रियाँ अपने विषयों में वर्त रही हैं और मैं कुछ नहीं करता हूँ जो जाने मैं कुछ करता तब लग जनम मरण में फिरता। मैं देह नहीं हूँ। देह अध्यास छोड़ना है। सब विकार देह में हैं, मैं निर्विकारी हुआ। कर्म सब द्वेत से होते हैं इसलिए राजा जनक ने तीनों प्रकार के कर्म त्याग दिए मन,मन, वाणी के

कर्म। हमारा ज्ञान है अद्वेत यानि Sameness and Oneness. अब नमस्कार किसको करें ? धिक्कार है उस कर्म को जिससे न होवे शान्त। कोटि कर्म बन्धन के मूल। हमारे बड़े सभी प्रकार के कर्म सतकर्म द्वेत से करते आये पर कोई भी कर्मों से मुक्त नहीं हुआ। तुलसीदास न तरन्दे कर्म किए। ज्ञानी त्यागी हैं, केवल मिथ्या का। पर सच्चा आनन्द तो केवल ज्ञानी को हासिल है। भगवान के प्रेम में सब कुछ भूल जाता है। मर जाये तो भी रोते नहीं हैं क्योंकि ज्ञानी मौत नहीं मानता है यानि हे अर्जुन तुम मरे हुओं का शोक नहीं करो। मरने वाले फिर–फिर आते रहते हैं और आए हुए सब फिर मरते हैं। हम द्रोपदी की तरह पुकारते नहीं हैं पर दिल में पक्का है कि ईश्वर का इंसाफ है। जिसको राखे राम उसको मारे कौन? एक आदमी ने जज से कहा साहब इंसाफ तो करो तो जज ने एकदम पाँच वर्ष अधिक सजा दे दी इन शब्दों के लिए। जज का मतलब ही है इंसाफ करे। कैसी भी हालत शुकुर गुज़ार होने की ज़रूर है। जैसे खून हो जाय पर मरे नहीं तो भी शुकराना, एक आँख निकल जाय तो भी शुकर। चिठ्ठी लिखने बैठता हूँ तो कहाँ–कहाँ जाकर पहुँचता हूँ। दो तीन बार Same Point लिख देता हूँ, अब तो पता ही नहीं चलता। वेसर भी कैसी वेसर हो गयी है काश कोई फ़की (दवा) फर्क़ (ठीक) करे।□